नई दिल्ली RNI NO. DELHIN/2010/37009

वर्षः 12

अंकः 10

सोमवार, 14-20 मार्च, 2022

मूल्यः 5 रु प्रति

रु 250 वार्षिक

राज्यपाल ने कांगड़ा अंगेस्ट कोविड-19 वर्किंग ग्रुप एवं एनआईएफएए द्वारा आयोजित 03

अपने दम पर जनादेश लेकर लौटे योगी पर दूसरे कार्यकाल में कोई भी दबाव नहीं 08

NCR समाचार

राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा देश अपनी शून्य-कोविड रणनीति के साथ स्टिक रहेगा 10

हिंदू जागरण मंच मालवा प्रांत देवास विभाग दो दिवसीय अभ्यास वर्ग खातेगांव में संपन्न हुआ 11

इस्माईल खान

www.ncrsamacharlive.in

BY C.R.O. TEAM

twitter-@ncrsamacharlive

भारत का नं 1 साप्ताहिक समाचार पत्र

ऑस्ट्रेलिया से 6 विकेट से हारा भारत, टीम के लिए मुश्किल हुआ सेमीफाइनल का सफर 12

हिमाचल में आप को मिलने लगा समर्थन

एजेंसी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव हालांकि इस साल के अंत में होने तय हैं। लेकिन प्रदेश में सियासी महौल अभी से गरमा गया है। प्रदेश के सियासी मानचित्र पर एकाएक आम आदमी पार्टी उभर कर सामने आई है। जिससे सत्तारूढ भारतीय जनता पार्टी व कांग्रेस पार्टी जैसे पारंपरिक दलों में भी बेचैनी का महौल है। शिमला नगर निगम के चुनाव आप के निशाने पर हैं। आप के बडे नेताओं के प्रदेश में दौरे शुरू हो गये हैं। दरअसल , पंजाब विधानसभा चुनाव में जीत व भगवंत मान की सरकार बनने के बाद मात्र दस दिन में ही प्रदेश में आम आदमी पार्टी से 26 हजार नए सदस्य जुड चुके हैं। आप का दावा है कि चुनाव परिणाम से पहले प्रदेश में उनके सदस्य 1.50 लाख थे, जिनकी संख्या रविवार तक 1.76 लाख पहुंच गई है। आप से जुड़े नए सदस्यों में अधिकतर वकील, डॉक्टर और पूर्व अधिकारी बताए जा रहे हैं। यही नहीं, सदस्यता अभियान को और तेज करने के लिए दिल्ली से पर्यवेक्षक भेजे गए हैं। जल्द ही प्रदेश में आप की युवा और महिला ब्रिगेड बनाने की तैयारी भी है। बताया जा रहा है कि दिल्ली से भेजे गए पर्यवेक्षक जनता के बीच जाकर आप के प्रति टोह ले रहे हैं। भाजपा और कांग्रेस से नाराज चल रहे पूर्व मंत्री व विधायक भी इन दिनों दिल्ली में आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल से संपर्क साध रहे हैं। आप के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं प्रदेश के पूर्व डीजीपी आईडी भंडारी ने दस दिन के भीतर 26 हजार नए सदस्य जुड़ने का दावा किया है। भंडारी ने कहा कि आने वाले दिनों में यह आंकड़ा लाखों में होगा। अपनी सापफ सुथरी छवि के लिये मशहूर भंडारी बिलासपुर सदर से चुनाव लडने की तैयारी कर रहे हैं। अपनी मिडनाईट रेड पुस्तक से भंडारी चर्चा में आये थे। उन्होंने बताया कि आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल के रोड शो में 25 हजार लोगों के उमड़ने की उम्मीद की जा रही है। यह रोड शो 6 अप्रैल को मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के गृह जिला मंडी में होगा। इसमें पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान भी शामिल होंगे। इसकी तैयारियों के सिलसिले में दिल्ली के स्वास्थय मंत्री सत्येन्दर जैन इन दिनों मंडी में डेरा डाले हैं। आप के हिमाचल प्रभारी रत्नेश गुप्ता ने कहा कि मंडी में बड़ा रोड शो होगा। प्रदेश में आप मजबूती के साथ उभरकर सामने आएगी। आप पंजाब का फार्मूला यहां भी अपनाने पर विचार कर रही है। अफ सरों सहित भाजपा और कांग्रेस के नेता आप के संपर्क में हैं। ईमानदार छवि वाले नेताओं को पार्टी में शामिल किया जाना है।

दरअसल , पंजाब विधानसभा चुनाव में जीत व भगवंत मान की सरकार बनने के बाद मात्र दस दिन में ही प्रदेश में आम आदमी पार्टी से 26 हजार नए सदस्य जुड चुके हैं। आप का दावा है कि चुनाव परिणाम से पहले प्रदेश में उनके सदस्य 1.50 लाख थे, जिनकी संख्या रविवार तक 1.76 लाख पहुंच गई है। आप से जुड़े नए सदस्यों में अधिकतर वकील, डॉक्टर और पूर्व अधिकारी बताए जा रहे हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने नेता गुलाम नबी आजाद से की मुलाकात

एजेंसी / एनसीआर समाचार

नई दिल्ली। नेता गुलाम नबी आजाद ने शुक्रवार को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से मुलाकात की, जिसके बाद उन्होंने कहा कि नेतृत्व परिवर्तन कोई मुद्दा नहीं है क्योंकि कांग्रेस कार्य समिति ने सर्वसम्मति से फैसला किया कि उन्हें आंतरिक चुनावों तक पार्टी प्रमुख के रूप में बने रहना चाहिए।

यहां 10 जनपथ स्थित उनके आवास पर गांधी से मुलाकात के बाद आजाद ने मीडिया से कहा कि उन्होंने पार्टी को मजबूत करने के लिए उन्हें सुझाव दिए और आगामी विधानसभा चुनावों में प्रतिद्वंद्वियों को 'एकजुट' तरीके से कैसे लड़ा जाए, इस पर चर्चा की, बैठक के कुछ दिनों बाद 23 के समूह ने कांग्रेस में समावेशी और सामूहिक नेतृत्व की वकालत की। एक अन्य जी-23 नेता कपिल सिब्बल ने हाल ही में कहा था कि गांधी परिवार को अलग हटकर किसी और के लिए पार्टी की भागदौड़ संभालने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। नेतृत्व परिवर्तन के लिए सिब्बल के आह्वान के बारे में पूछे जाने पर, आजाद ने कहा, "नेतृत्व (परिवर्तन) का कोई सवाल ही नहीं है। जब श्रीमती गांधी ने CWC में छोड़ने की पेशकश की थी, तब हम सभी ने उन्हें पद पर बने रहने के लिए कहा था। पार्टी में चुनाव होने पर इस पर चर्चा होगी। पार्टी कार्यकर्ता उस समय तय करेंगे कि अध्यक्ष कौन होगा, आजाद ने कहा, पार्टी अध्यक्ष का पद आज खाली नहीं है, कार्यसमिति में, जब उन्होंने छोड़ने की पेशकश की थी, चाहे वह किसी भी समूह या सोच से हो, श्रीमती गांधी ने कहा कि आप जारी रखें, हमें कोई समस्या नहीं है, लेकिन कुछ सुझाव हैं जो हमने संगठन को मजबूत करने के लिए दिए थे।

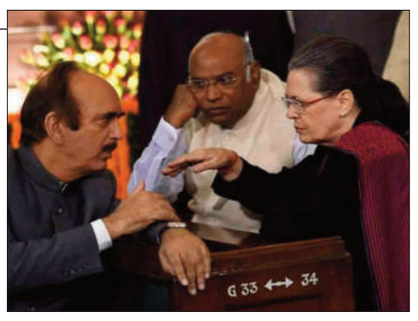

संगम विहार में आय दिन हो रहे कत्ल, पुलिस के कानों में नहीं रेंगती जूँ

नमिता चौहान / एनसीआर समाचार

संगम विहार में एक बार फिर एक ऐसा आपराधिक मामला सामने आया जिसे सुन लोगों की रूह काँप गई। संगम विहार निवासी 19 वर्षीय सोनू को कुछ लोगों ने इतना मारा की इलाज के दौरान ही उसकी मौत हो गयी। आपको बता दे कि ये घटना संगम विहार बांध रोड, बुद्ध बजार की है, जहां दोस्तों संग शाम के वक्त बाजार से सामान लेने जा रहे सोनू को कुछ लड़कों ने गाड़ी से उतारकर हॉकी से इतना मारा की वह अधमरा हो गया। उसी दिन सोनू को सफ़रदगंज अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहाँ इलाज में लापरवाही बरती गई जिसकी वजह से 14 मार्च की रात करीब 2 बजे सोनू की अस्पताल में ही मौत हो गई। एनसीआर समाचार की संवादाता ने जब मृतक सोनू के परिवार से बातचीत की तो परिवार वालों ने बताया कि अभी कुछ दिन पहले ही 6 मार्च को सोनू मुंबई से पूरे एक साल बाद घर लौटा था और उसके अगले दिन ही उसके साथ के कुछ जानने वाले लड़कों ने उसके साथ मारपीट की, ये मारपीट 7 मार्च को हुई जिसके बाद सोनू को अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां पर इलाज में लापरवाही हुई जिसके बाद सोनू को डिस्चार्ज कर दिया गया और उसी अधमरी हालत में सोनू को घर भेज दिया गया और महज 2 दिन में ही उसकी मौत हो गई। मृतक की बहन ने बताया की जब वो नेब सराय थाने में FIR लिखवाने गई तो पुलिस वालों ने बात को टालते हुए उसे 2 घंटे बाद आने को कहा। मृतक की बहन का कहना था कि पुलिस वाले भी कार्यवाही करने में लापरवाही दिखा रहें है, अपराधियों को पकड़ने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा रहे। करीब एक महीने पहले की ही बात है कि संगम विहार में ठीक इसी जगह मयंक की चाकू गोदकर हत्या कर दी गई थी, जिसके बाद पुलिस प्रशासन ने यह आश्वासन दिया था की पूरे संगम विहार में पुलिस द्वारा निगरानी रखी जाएगी, ताकि भविष्य में फिर से कोई ऐसी घटना न हो, लेकिन फिर ठीक उसी जगह एक युवक को बुरी तरह मारा जाता है जिससे उसकी मौत हो गई। इससे ये साफ दिखता है कि पुलिस प्रशासन किस तरह काम कर रही है।

17 वर्षीय रोहित ने की आत्महत्या बिना किसी को ख़बर किए घर वालो ने किया अंतिम संस्कार

अंशुप्रिया / एनसीआर समाचार

दक्षिण दिल्ली के मीठापुर गांव में एक युवक ने कि आत्महत्या, हालांकि आत्महत्या करने की वजह अभी तक सामने नहीं आया है। लेकिन सूत्रो के मुताबिक बताया जा रहा है कि मृतक युवक का नाम रोहित था, उम्र 17वर्ष, पिता बबलू कुमार।

बताया जा रहा है की युवक पिछले दो दिनों से घर में किसी से बात नहीं कर रहा था और अगले दिन अचानक 15 मार्च को लगभग दोपहर 3 बजे के करीब उसने फांसी लगा ली, और परिजनों ने इस बात की खबर किसी को नहीं दी, ना ही पुलिस को बताया गया और ना ही हॉस्पिटल ले कर गए। इतना ही नहीं परिजनों ने जल्द से जल्द अंतिम संस्कार कर दिया ना ही किसी बहार के रिश्तेदार को बुलाया और ना ही किसी दोस्त को, जल्दबाजी में पास के मोलड़बंद गांव के शमशानघाट में युवक का अंतिम संस्कार किया।

ड्रग तस्करी मामले में शिअद नेता बिक्रम सिंह मजीठिया की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

भगवंत सिंह मान सरकार ने बनाई नई एसआईटी

एजेंसी

पंजाब। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने रविवार को शिअद नेता बिक्रम मजीठिया की ड्रग केस जांच टीम का पुनर्गठन किया। मुख्यमंत्री द्वारा जारी पुलिस विभाग के संबंध में यह पहला आदेश था, जहां भगवंत सिंह मान ने पूर्व अकाली मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया के खिलाफ मादक पदार्थ तस्करी के आरोप में विशेष जांच दल (एसआईटी) के पुनर्गठन का आदेश दिया है। नई टीम का नेतृत्व एआईजी गुरशरण सिंह संधू करेंगे और इसमें चार अन्य सदस्य होंगे। इनमें एआईजी राहुल एस और रंजीत सिंह के अलावा डीएसपी रैंक के दो अधिकारी शामिल हैं। पिछली एसआईटी एआईजी बलराज सिंह की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय टीम थी। 20 दिसंबर, 2021 को एनडीपीएस अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत दर्ज प्राथमिकी के आधार पर मजीठिया के खिलाफ आरोपों की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया गया था। 49 पन्नों की प्राथमिकी एडीजीपी हरप्रीत सिंह सिद्धू, एसटीएफ के प्रमुख, ड्रग्स के खिलाफ जांच रिपोर्ट पर आधारित थी। सूत्रों ने कहा कि सिद्धू एआईजी बलराज द्वारा की गई प्रगति से खुश नहीं थे और उन्होंने असंतोषजनक रिपोर्ट से अपने वरिष्ठों को भी अवगत करा दिया था। यह भी दावा किया जाता है कि एडीजीपी सिद्धू भी एसआईटी की गति और नतीजे से खुश नहीं थे।

तेलंगाना में शिवाजी की मूर्ती लगाने पर दो गुटों के बीच तनाव, निजामाबाद में धारा 144 लागू

तेलंगाना। तेलंगाना के निजामाबाद जिले के बोधन शहर में शिवाजी की प्रतिमा लगाने को लेकर दो राजनीतिक गुटों के सदस्यों के बीच झड़प के बाद धारा 144 लागू कर दी गई है। स्थानीय भाजपा सांसद अरविंद धर्मपुरी ने कहा कि बोधन शहर के अंबेडकर चौराहे पर छत्रपति शिवाजी की एक प्रतिमा लगाने की योजना थी, जिसकी सीमा महाराष्ट्र से लगती है। उन्होंने आरोप लगाया कि एआईएमआईएम और टीआरएस कार्यकर्ताओं ने मूर्ति की स्थापना का विरोध करते हुए आपत्ति जताई और बीच में आने की कोशिश की। मामले ने हिंसक रूप ले लिया और एआईएमआईएम और टीआरएस समर्थकों ने बीजेपी और शिवसेना कार्यकर्ताओं के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। धर्मपुरी ने ट्वीट किया, वही कुटिल मानसिकता..हमारा तोड़-अपना पूरा करो !

बिहार में होली पर जहरीली शराब पीने से 10 लोगों की मौत, पुलिस जांच में जुटी

एजेंसी

भागलपुर/मधेपुरा । बिहार के दो जिलों में होली के त्योहार के दौरान कथित तौर पर जहरीली शराब पीने से कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। भागलपुर जिले में आठ लोगों की मौत हुई है। इनमें से चार की मौत भागलपुर शहर के साहिबगंज इलाके में, जबकि शेष लोगों की मौत नारायणपुर पुलिस थाना क्षेत्र के विभिन्न गांवों में हुई है। नारायणपुर पुलिस थाना प्रभारी रमेश शाह ने बताया कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल सकेगा कि ये मौतें जहरीली शराब पीने से हुई हैं, या नहीं। उन्होंने यह दावा भी किया कि मृतकों में शामिल एक व्यक्ति को संभवतः दिल का दौरा पड़ा था और एक अन्य सीढ़ी पर चढ़ने के दौरान गिर गया था। विश्वविद्यालय पुलिस थाना प्रभारी रीता कुमारी ने भी कहा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही जहरीली शराब पीने से मौत होने की पुष्टि हो सकेगी। उल्लेखनीय है कि इसी थाना क्षेत्र में साहिबगंज पड़ता है। साहिबगंज निवासी एक व्यक्ति के आंखों की रोशनी चली गई है और उसका एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। स्थानीय लोगों ने घटना को लेकर रविवार सुबह अपना आक्रोश प्रकट करते हुए सड़क पर टायर जलाये। पुलिस द्वारा उन्हें समझाने बुझाने के बाद यातायात बहाल हुआ।

संक्षिप्त समाचार

राकांपा ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम से गठजोड़ करने को इच्छुक नहीं : शरद पवार

पुणे (महाराष्ट्र)। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) प्रमुख शरद पवार ने रविवार को कहा कि उनकी पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के साथ गठजोड़ करने को इच्छुक नहीं हैं। उनका यह बयान एआईएमआईएम के सांसद इम्तियाज जलील द्वारा शिवसेना नीत महाविकास आघाडी (एमवीए) के साथ गठजोड़ करने की पेशकश करने के एक दिन बाद आया है। उल्लेखनीय है कि शिवसेना गठजोड़ के लिए जलील की पेशकश को पहले ही ठुकरा चुकी है। पवार ने पुणे जिले के बारामती में संवाददाताओं से कहा, ''मैं इस (जलील के) बयान को पढ़ रहा हूं, लेकिन मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि यह (असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी के साथ गठजोड़ करना) हमारी पार्टी का रुख नहीं है।'' पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, ''वे (एआईएमआईएम) गठबंधनों के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन वे जिन राजनीतिक दलों के बारे में बात कर रहे हैं उन्हें पहले इस तरह के प्रस्तावों को स्वीकार करना चाहिए। ''पवार ने कहा कि हालांकि एआईएमआईएम ने राज्य स्तर पर गठजोड़ की पेशकश की है, लेकिन इसतरह के गठबंधन बनाने को राजनीतिक दलों की राष्ट्रीय समिति की मंजूरी चाहिए होगी। राकांपा प्रमुख ने एक अन्य कार्यक्रम में पुणे में एक और हवाईअड्डा के लिए अधिकारियों के साथ एक संभावित बैठक के बारे में बात की। हालांकि, नये हवाईअड्डे के स्थान को अंतिम रूप दिया जाना अभी बाकी है।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने की भारत की विदेश नीति की तारीफ

मैं उस मुल्क को सलाम करता हूंः इमरान खान

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में सत्ता गवां देने के डर से जूझ रहे पाक पीएम इमरान खान के भारत के प्रति तेवर बदले दिखायी दे रहे हैं। अपने एक बयान में इमरान खान भारत की विदेश नीति की तारीफ कर रहे हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने भारत सरकार की प्रशंसा की और कहा कि भारत की विदेश नीति स्वतंत्र है और अपने लोगों की भलाई के लिए है। एक वीडियो में, पाकिस्तान के पीएम इमरान खान को यह कहते हुए सुना जा सकता है, ₹मैं आज हिंदुस्तान को दाद देता हूं (आज, मैं भारत को सलाम करता हूं)। इसने हमेशा एक स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखी है। इमरान खान ने कहा भारत क्वाड गठबंधन का सदस्य है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका इसके सदस्यों में से एक है। लेकिन भारत अभी भी खुद को न्यूट्रल कहता है। भारत रूस से तेल आयात कर रहा है, जो प्रतिबंधों का सामना कर रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत की विदेश नीति अपने लोगों के लिए है। खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत में एक जनसभा को संबोधित करते हुए इमरान खान ने अपने समर्थकों से कहा कि उनकी विदेश नीति भी पाकिस्तान के लोगों के पक्ष में होगी। संसद में अविश्वास प्रस्ताव का सामना करने से पहले इमरान खान जनसमर्थन हासिल करने के लिए रैली कर रहे हैं। खान ने कहा, मैं किसी के सामने नहीं झुका और अपने देश को भी किसी के आगे झुकने नहीं दूंगा। संसद में अपने खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव से पहले जनसमर्थन ला रहे खान ने कहा, 'मैं किसी के आगे नहीं झुकूंगा और न ही अपने देश को झुकने दूंगा। सार्वजनिक रैलियों में विदेशी संबंधों से संबंधित जटिल मामलों पर खुलकर चर्चा नहीं करने की परंपरा को तोड़ते हुए, खान ने उल्लेख किया कि उन्होंने रूस-यूक्रेन संघर्ष में रूस के खिलाफ पाकिस्तान के समर्थन की मांग करने वाले यूरोपीय संघ के दूतों को साफ इंनकार कर दिया। इमरान खान ने कहा कि ईयू के अनुरोध पर अमल करने से पाकिस्तान को कुछ हासिल नहीं होता। उन्होंने कहा, हम अफगानिस्तान में आतंकवाद के खिलाफ अमेरिका के युद्ध का हिस्सा बने और 80,000 लोगों और 100 अरब डॉलर का नुकसान हुआ। इमरान खान की टिप्पणी तब भी आई है जब उन्हें सत्ता से बेदखल होने के खतरे का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि सत्ताधारी पार्टी के कई सांसदों ने अविश्वास मत से पहले पाकिस्तान के पीएम के लिए अपना समर्थन वापस ले लिया था।

एनसीआर समाचार, साप्ताहिक समाचार पत्र में विज्ञापन के लिए संपर्क करें।

कार्यालयः
12/276, संगम विहार
नई दिल्ली-62

फोनः
8888883968,
9811111715

एनसीआर समाचार पत्र के
स्वामित्व/ प्रकाशन परिवर्तन के संबंध में

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल ने धर्मशाला में आयोजित अखिल भारतीय अन्तर-विश्वविद्यालय महिला नेटबॉल प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया

शिमला। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने खिलाड़ियों का आह्वान किया कि वे खेल भावना को बनाये रखते हुए अपना सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करें। राज्यपाल आज कांगड़ा जिला के धर्मशाला में केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति सचिवालय के समीप डीवाईएसएस स्टेडियम में आयोजित की जा रही अखिल भारतीय अन्तर-विश्वविद्यालय महिला नेटबॉल प्रतियोगिता के शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राज्य में खेल वातावरण तैयार करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि हिमाचल में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है। उन्होंने केन्द्रीय युवा कार्य एवं खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने खेलों के विकास में अपना सराहनीय योगदान दिया है। पहले हम खेलों में केवल भाग लेने की सोचते थे, लेकिन आज जीत की सोच के साथ आगे आते हैं और यह एक बड़ा बदलाव है। उन्होंने कहा कि यह भावना खिलाड़ियों में हमेशा रहनी चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि साथ चलना अच्छी शुरुआत है, साथ बने रहना उन्नति है और मिल कर कार्य करने से सफलता प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि हमें एक टीम के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल का वातावरण मुझे घर का एहसास करवाता है और यहां के लोगों का आतिथ्य-सत्कार सभी को प्रभावित करता है। इससे पहले, राज्यपाल ने देश भर से आईं 43 विश्वविद्यालयों की 600 से अधिक खिलाड़ियों द्वारा प्रस्तुत भव्य मार्च पास्ट की सलामी ली। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एसपी बंसल ने राज्यपाल का स्वागत कर उन्हें सम्मानित किया।

प्यार में इस कदर पागल हुई 38 वर्षीय महिला, तीन बच्चों और पति को छोड़कर आशिक संग हुई फरार

पटना। बिहार के एक जिले से प्रेम-प्रसंग का एक ऐसा मामला सामने आया जिसे सुनकर लोगों के होश उड़ गए हैं। यह मामला कन्हौली थाना क्षेत्र के खाप खोपराहा पंचायत का है। यहाँ की मुखिया के सिर प्यार इस कदर परवान चढ़ा कि मुखिया अपने तीन बच्चों और पति को छोड़कर घर से भाग गयी। खोजबीन करने के बाद जब घरवालों को मामले की सच्चाई का पता चला तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। आईये आपको बताते हैं पूरा मामला क्या है।कन्हौली थाना क्षेत्र के खाप खोपराहा पंचायत की मुखिया 38 वर्षीय रेखा देवी 9 मार्च को सुबह टहलने जाने का बोलकर घर से निकली थी और फिर वापस घर नहीं पहुंची।

मुखिया के पति ने उन्हें ढूंढ़ने के लिए काफी मशक्कत की और खोजबीन करने के बाद जब पति को पता चला की रेखा फरार हो गयी है तब उसने कन्हौली थाने में जाकर अपनी पत्नी के अपहरण का मामला दर्ज कराया। मामला दर्ज करने के बाद जब पुलिस ने छानबीन की तो गांव के ही तीन लड़के आरोपी निकले। मुखिया के पति ने बताया कि 9 मार्च को सुबह रेखा टहलने गयी थी जहाँ से वह गायब हो गयी। जब रेखा बहुत देर तक घर नहीं आयी तो उसने अपनी पति की तलाश करनी शुरू की। काफी देर तलाश करने के बावजूद रेखा नहीं मिली और उसका मोबाइल भी स्विच ऑफ आ रहा था। थक हारकर उसने 15 मार्च को थाने जाकर अपनी पत्नी के अपहरण होने का मामला दर्ज कराया। मुखिया के पति ने थाने में दिए अपने आवेदन में खाप पंचायत के स्वर्गीय युगेश्वर कापर के पुत्र राम प्रगाश कापर और उसके द्वय पुत्र संजय कापर और विजय कापर पर आरोप लगाए हैं। अपने आवेदन में मुख्य के पति ने बताया है कि इन तीनों ने उसके घर की छवि को ख़राब करने के लिए उसकी पत्नी को बहला फुसलाकर भगा ले गए हैं। इस मामले की चर्चा अब शहर तक पहुंच गयी है। लोग जमकर महिला पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर रहे हैं। कई लोग कह रहे हैं कि यह उम्र उसके बच्चों की शादी की है और इस उम्र में वह अपनी शादी के सपने देख रही है।

हिमाचल प्रदेश में नेताओं का आम आदमी पार्टी में शामिल होने का सिलसिला शुरू

एजेंसी

कुल्लू। दिल्ली और पंजाब में अपनी जीत का परचम लहराने के बाद अब आम आदमी पार्टी हिमाचल प्रदेश में भी सक्रिय हो गई है। हाल ही में पंजाब राज्य में अपनी सरकार बनाने के बाद आम आदमी पार्टी ने पहाड़ों में भी अपनी जड़ें मजबूत करना शुरु कर दी है। पहाड़ के लोगों ने भी ठान लिया है कि अब प्रदेश में विकास और काम के आधार पर ही आगामी नई सरकार का चुनाव किया जाएगा। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार विभिन्न राजनीतिक दलों और अन्य संगठनों के नेता आम आदमी पार्टी का दामन थामने की तैयारी में है। हिमाचल से भी कई बड़ी हस्तियां अंदरखाते आप के बड़े नेताओं के सम्पर्क में है। हिमाचल प्रदेश के जिला मण्डी में आम आदमी पार्टी द्वारा 6 अप्रैल को एक रोड़ शो का आयोजन किया जाएगा जिसमें आप के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल तथा पंजाब के सीएम भगवंत मान विषेष रूप से उपस्थित रहेंगे। जिला कुल्लू के बंजार विधानसभा क्षेत्र में भी अपने दलों से रूष्ठ नेताओं द्वारा आम आदमी पार्टी में शामिल होने का सिलसिला शुरू हो गया है। बंजार पंचायत समिति के पूर्व चेयरमैन एवं वरिष्ठ कांग्रेसी नेता चंद्र वल्लभ नेगी पार्टी की नीतियों और सिद्धान्तों पर निष्ठा रखते हुए कांग्रेस छोड़ कर आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए है। यह अपनी युवावस्था से ही यूथ कांग्रेस में कार्य करते हुए पार्टी में विभिन्न पदों पर विराजमान रहे है तथा वर्तमान में कृषि बागवानी मजदूर संगठन (इंटक) के जिला अध्यक्ष तथा राजीव गांधी पंचायती राज विभाग ब्लॉक बंजार से बतौर अध्यक्ष कार्य कर रहे है। आप नेता एवं दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सतेंद्र जैन ने अपने मण्डी प्रवास के दौरान उन्हें पार्टी की प्राथमिक सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर आम आदमी पार्टी बंजार विधान सभा क्षेत्र के अध्यक्ष पूर्ण चन्द एवं आप के प्रदेश प्रवक्ता दौलत भारती एवं अन्य पदाधिकारी विशेष रूप से मौजूद रहे। आम आदमी पार्टी बंजार विधान सभा क्षेत्र के अध्यक्ष पूर्ण चन्द ने बताया कि आप नेता एवं दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन के हिमाचल जिला मण्डी प्रवास के दौरान कई नेताओं और समाजसेवियों ने उनसे मुलाकात करके पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है। इससे पहले कांग्रेस और भाजपा से असंतुष्ट नेता राजु सुद और बंजार विधान सभा क्षेत्र के युवा नेता राकेश वैद्य भोलू भी आप का दामन थाम चुके है।

प्रधानमंत्री वाराणसी से चुनाव लड़ सकते हैं, तो मैं आसनसोल से क्यों नहीं : शत्रुघ्न

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की आसनसोल लोकसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए टीएमसीके उम्मीदवार शत्रुघ्न सिन्हा ने खुद को बाहरी बताने के लिये रविवार को भाजपा पर निशाना साधा और पूछा कि पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में ऐसा क्यों नहीं कहती, जो वाराणसी से चुनाव लड़ते हैं। सिन्हा ने पश्चिम वर्धमान जिले के अंडल हवाई अड्डे पर पत्रकारों से कहा कि उन्हें विश्वास है कि आसनसोल की जनता तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की प्रमुख ममता बनर्जी के नाम पर वोट डालेगी, जो बंगाल के विकास के लिये हमेशा खड़ी रही हैं। सिन्हा ने कहा, यदि प्रधानमंत्री जैसी राष्ट्रीय हस्ती का कहीं और से चुनाव लड़ना स्वीकार्य है तो मेरे लिये भी यही होना चाहिये।

सुकांत मजूमदार और अग्निमित्र पॉल जैसे बंगाल भाजपा नेताओं ने हाल ही में सिन्हा को राज्य में बाहरी व्यक्ति के रूप में पेश किया है। आसनसोल लोकसभा सीट और बॉलीगंज विधानसभा सीट के उपचुनाव के लिये 12 अप्रैल को मतदान होगा। मतगणना 16 अप्रैल को होगी।

भविष्य में संक्रमण रोकने के लिए सतर्कता जरूरी: अशोक गहलोत

एजेंसी

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने चीन व दक्षिण कोरिया सहित कई देशों में कोरोना वायरस से संक्रमण के बढ़ते मामलों पर चिंता जताते हुए रविवार को कहा कि भारत में भी संक्रमण रोकने के लिए सतर्कता बरतने की जरूरत है। गहलोत के अनुसार इस तरह के देशों से आने वाली उड़ानें नियंत्रित की जानी चाहिए। गहलोत ने विभिन्न देशों में कोविड-19 के बढ़ते मामलों की एक खबर साझा करते हुए ट्वीट किया,''जैसे कि खबरें आ रही हैं, चीन, दक्षिण कोरिया समेत कई देशों में कोरोना के मामले बढ़ते जा रहे हैं। प्रतिदिन करीब 12 प्रतिशत संक्रमित बढ़ रहे हैं। ऐसे में भारत में भी सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।''उन्होंने कहा, '' जहां मामलों में वृद्धि हुई है उन देशों से आने वाली उड़ानें नियंत्रित की जानी चाहिए तथा यात्रियों की हवाई अड्डे पर जांच होनी चाहिये। देश में भी मास्क पहनना जारी रखना होगा।''उन्होंने लिखा कि ''भविष्य में संक्रमण को रोकने के लिये सतर्कता अत्यंत आवश्यक है। राजस्थान सतर्क है और हम लगातार स्थिति की निगरानी कर रहे हैं।

होशियारपुर में शुरू हुआ भारतीय संस्कृति को दर्शाने वाला शिल्प बाजार

एजेंसी

होशियारपुर । होशियारपुर के लाजवंती आउटडोर स्टेडियम में भारतीय संस्कृति को दर्शाने वाले शिल्प बाजार की शुरुआत हो चुकी है और इस बाजार का शुभारंभ कैबिनेट मंत्री पंजाब ब्रहम शंकर जिम्पा और शिल्प गुरु रूपन मथारू ने किया। इस अवसर पर उपायुक्त श्रीमती अपनीत रियात, अतिरिक्त उपायुक्त (शहरी विकास) हिमांशु जैन, अतिरिक्त उपायुक्त (जे) संदीप सिंह और एस. डी. एम. शिव राज सिंह बाल भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कैबिनेट मंत्री ने देशभर के 14 राज्यों और 2 केंद्र राज्यों से आए एंटीगोनिस्टों के स्टालों पर जाकर चींटियों का हौसला बढ़ाया। शिल्प बाजार हस्तशिल्प जैसी लुप्तप्राय कला को उजागर कर रहा है इसलिए ज्यादा से ज्यादा लोग इस शिल्प बाजार में भाग लेकर इन मेहनती कारीगरों का हौसला बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार शिल्पकारों और बंकरों के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि विभिन्न राज्यों से क्लैकर और कारीगर शिल्प बाजार पहुंच रहे हैं, जहां कारीगर अपने हाथ से बनी वस्तुओं को बेच रहे हैं, वहीं विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किए जा रहे हैं। उन्होंने अपील की कि बच्चों सहित अधिक से अधिक लोग इस शिल्प बाजार में भाग लें, क्योंकि भारतीय संस्कृति यहीं से देखने को मिलती है। उन्होंने कहा कि छात्र विभिन्न राज्यों से भाषा, संस्कृति, खान-पान व कला के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि स्व सहायता समूहों को भी विशेष स्टाल लगाकर संदेश दिया जा रहा है कि युवा वर्ग को अपने पैरों पर खड़ा होना अच्छा मंच है। डिप्टी कमिश्नर श्रीमती अपनीत रियात ने और कैबिनेट मंत्री का शिल्प बाजार आने पर स्वागत करते हुए कहा कि शिल्प बाजार 29 मार्च तक चलेगा और लोग रोजाना सुबह 10 बजे से रात 10 बजे तक बाजार आ सकते हैं। उन्होंने कहा कि 24 मार्च को शाम 7 बजे मशहूर पंजाबी सिंगर सतिंदर सरताज और 26 मार्च को शाम 7:00 बजे स्टैंड अप कॉमेडियन मनप्रीत सिंह दर्शकों का मनोरंजन करेंगे। जिलेवासियों से अपील करते हुए कहा कि शिल्प बाजार में स्वयं आएं और दूसरों को भी यहां आकर दूर से शिल्पकारों का उत्साहवर्धन करें। पहले दिन मुरली राजस्थान ने पंजाब लोकगीतों के अलावा विभिन्न राज्यों के लोक नृत्य किये जिसमे बिहू (असम), पंथी (छत्तीसगढ़), छपेली (उत्तराखंड), पंग चोलम, ढोल चोलम (मणिपुर), कालबेलिया (राजस्थान), बरसाना की होली (उत्ता r.p.) की व्यवस्था हो चुकी है।

दर्शकों से खचा-खच भरा था स्टेडियम, गैलरी का हिस्सा गिरा, 200 लोग घायल, वीडियो में कैद खौफनाक तस्वीर

एजेंसी

केरल। केरल में एक फुटबॉल स्टेडियम में उस समय अचानक अफरातफरी मच गयी जब लोगों से खचाखच भरे स्टेडियम का एक हिस्सा अचानक गिर गया। इस हादसे में लगभग 200 से ज्यादा लोग घायल हो गये। यह लोग फुटबॉल का मैच देख रहे थे। पुलिस ने कहा कि उत्तरी केरल के इस जिले में वंदूर के पास शाम के समय एक फुटबॉल स्टेडियम की अस्थायी गैलरी ढह जाने से 200 से अधिक लोग घायल हो गए। इस घटना का एक वीडियो न्यूज एजेंसी एएनआई ने शेयर किया है। वीडियो में अस्थायी गैलरी को दर्शकों पर गिरते हुए देखा गया, जिससे जमीन पर दहशत फैल गई। वीडियो में आयोजकों और कई अन्य लोगों को भी घटना के बाद मौके पर भागते हुए दिखाया गया है। पुलिस ने कहा कि घटना की सूचना वंदूर और कालिकावु के पास एक फुटबॉल के दीवाने गांव पोंगोडु से मिली, जहां एक सेवन्स फुटबॉल मैच खेला जा रहा था। सभी घायलों को पास के अस्पतालों में ले जाया गया। उन्होंने बताया कि उनमें से किसी की भी हालत गंभीर नहीं बताई जा रही है। घटना रात करीब 9 बजे की है जब दो स्थानीय टीमों के बीच सेवेंस का फाइनल मैच खेला जा रहा था। कथित तौर पर अस्थायी गैलरी में 2,000 से अधिक दर्शकों को समायोजित किया गया था।

कश्मीरी पंडितों के पलायन के समय कांग्रेस की नहीं, वीपी सिंह की सरकार थी: पवार

एजेंसी

पुणे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) प्रमुख शरद पवार ने रविवार को कहा कि घाटी से कश्मीरी पंडितों के पलायन पर आधारित फिल्म द कश्मीर फाइल्स में दिखाया गया है कि उस समय केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी, जबकि ऐसा नहीं है और उस वक्त वी.पी. सिंह की सरकार थी। पवार ने दावा किया कि वी.पी. सिंह की सरकार को भाजपा के कुछ सदस्यों का समर्थन हासिल था। पवार ने कहा कि भाजपा की ही मदद से मुफ्ती मोहम्मद सईद केंद्रीय गृह मंत्री बने थे। राकांपा नेता ने पुणे के बारामती में पत्रकारों से कहा कि जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल जगमोहन का कांग्रेस से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं था। पवार ने कहा, कांग्रेस पार्टी को दोषी ठहराने के लिए यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है जब यह सबकुछ हुआ तब कांग्रेस देश पर शासन कर रही थी, लेकिन अगर हम इसका अध्ययन करें, तो यह (कश्मीरी पंडितों का पलायन) तब हुआ जब विश्वनाथ प्रताप सिंह देश का नेतृत्व कर रहे थे। अब इस मुद्दे पर हल्ला मचा रही भाजपा के कुछ लोग उस समय सिंह का समर्थन कर रहे थे। पवार ने कहा, मुफ्ती मोहम्मद सईद जो उस समय केंद्रीय गृह मंत्री थे, उन्हें भाजपा की मदद से यह पद मिला था।

कभी कश्मीरी पंडितों के लिए लड़े थे बाला साहेब ठाकरे, अब The Kashmir Files की कहानी को झूठा बता रही शिवसेना

एजेंसी

मुंबई। फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को लेकर कई जगह विरोध हो रहा है। फिल्म पर राजनीति पार्टियों की छवी खराब करने का आरोप लगाया जा रहा है। फिल्म को लेकर पार्टियां भाजपा पर भी निशाना साथ रही हैं और आरोप लगा रही हैं कि फिल्म के माध्यम से मुस्लिमों के लिए नफरत भड़काई जा रही हैं और इससे राजनीतिक फायदा उठाया जाएगा।

चुनावों में महाराष्ट्र में बीएमसी चुनाव के दौरान फिल्म से राजनीतिक फायदा उठाया जाएगा। ऐसे में फिल्म को लेकर अब शिवसेना ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी हैं। बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) के चुनाव जल्द ही होने वाले हैं। शिवसेना सांसद संजय राउत ने कहा कि आने वाले चुनावों में 'द कश्मीर फाइल्स' किसी को राजनीतिक लाभ नहीं देगी। कश्मीरी पंडितों के पलायन पर आधारित विवेक अग्निहोत्री की फिल्म ने विवाद छेड़ दिया है क्योंकि आलोचकों को डर है कि फिल्म मुस्लिम समुदाय के खिलाफ नफरत को भड़काएगी। संजय राउत ने संवाददाताओं से कहा कि 'कश्मीर जैसे संवेदनशील मुद्दे पर राजनीति करना सही नहीं है... 'द कश्मीर फाइल्स' सिर्फ एक फिल्म है, मुझे नहीं लगता कि इससे आने वाले चुनावों में किसी को कोई राजनीतिक फायदा होगा। चुनाव आने तक, फिल्म चली जाएगी। सिनेमा में कुछ और आ चुका होगा। फिल्म में दिखाई गई घटनाएं सच हैं या नहीं इस पर बाद में चर्चा की जा सकती है। फिल्म में दिखाई गई कई चीजों पर सवाल उठाए जा रहे हैं जो सच नहीं हैं। कई लोग यह भी कह रहे हैं कि ऐसे कई तथ्य हैं जिन्हें दिखाया जाना चाहिए था, लेकिन नहीं दिखाया गया। उस समय मरने वालों में मुसलमान भी थे। ऐसे कई अधिकारी थे जिनकी जान मुसलमानों ने बचाई, ये सब ऐसी चीजें हैं जो फिल्म में हो सकती हैं लेकिन नहीं हैं। जहां कांग्रेस नेताओं ने फिल्म निर्माता पर गुस्सा भड़काने और हिंसा को बढ़ावा देने के लिए तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का आरोप लगाया है, वहीं इस फिल्म का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित भाजपा नेताओं ने समर्थन किया था। विरोधियों पर निशाना साधते हुए पीएम मोदी ने कहा कि जो लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का झंडा लहराते हैं, वह पूरा झुंड पिछले कुछ दिनों से चकरा गया है। आरोपों और जवाबी आरोपों के बीच राउत ने पहले कहा था कि 'द कश्मीर फाइल्स' की राजनीति सही नहीं है। पार्टी के संस्थापक बाला साहेब ठाकरे द्वारा कश्मीर पंडितों के लिए किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए, जिसे फिल्म में भी उजागर किया गया था, राज्यसभा सदस्य ने कहा कि पूरा देश कश्मीर और कश्मीरी पंडितों के लिए सेना की भावनाओं को जानता है।

खेल जगत में हरियाणा का वर्चस्व कायम, खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्राप्त किया श्रेष्ठ राज्य पुरस्कार

एजेंसी

चंडीगढ़ । हरियाणा ने खेल जगत में अपना वर्चस्व कायम रखते हुए 'खेलों को बढ़ावा देने के लिए श्रेष्ठ राज्य पुरस्कार' प्राप्त करने में सफलता हासिल की है। लगातार तीन वर्ष के विजेता उड़ीसा और अन्य सभी राज्यों को पछाड़कर हरियाणा ने यह पुरस्कार प्राप्त किया है। खेल विभाग के एक प्रवक्ता ने आज यहां यह जानकारी देते हुए बताया कि एसीईएस स्पोर्ट्स स्टार अवार्ड्स हिंदुजा ग्रुप द्वारा आयोजित वार्षिक स्पोर्टस अवार्डस समारोह में राज्य के खेल मंत्री सरदार संदीप सिंह ने राज्य की ओर से 'खेलों को बढ़ावा देने के लिए श्रेष्ठ राज्य पुरस्कार' प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, हरियाणा के खिलाडिय़ों ने राज्य के लिए आठ अन्य श्रेणियों में भी पुरस्कार प्राप्त कर राज्य का नाम रोशन किया। इस वर्ष जूरी ने जमीनी स्तर के खेल और ओलंपिक आंदोलन को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका के लिए हरियाणा को इस पुरस्कार के विजेता के रूप में चुना है। सुनील गावस्कर की अध्यक्षता वाली जूरी विशेष रूप से हरियाणा की खेलों के प्रति लम्बे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता और ओलंपियन ओलंपिक चैंपियन तैयार करने की राज्य की प्रवत्ति से अत्यंत प्रभावित थी। हरियाणा सरकार वर्षों से खेलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में हरियाणा के खिलाडिय़ों द्वारा दिखाए गए जौहर और बड़ी संख्या में प्राप्त किये गए पुरस्कारों ने राज्य में लागू खेल नीति की सार्थकता सिद्घ की है। सरकार राज्य में खेलों को बढ़ावा देने और शैशव काल से ही बच्चों को खेलों के प्रति आकर्षित करने के लिए ठोस कदम उठा रही है। खेलों के लिए अतिरिक्त बजट आवंटन से लेकर बेहतरीन बुनियादी ढांचे की सुविधा तक, खिलाडिय़ों को गुणवत्तापरक प्रशिक्षण प्रदान करने से लेकर बड़ी राशि के नकद पुरस्कार और योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरियां देकर युवाओं को अपनी रूचि के खेलों में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करने तक अनेक कदम उठा रही है। एसीईएस स्पोर्ट्स स्टार अवार्ड्स हिंदुजा ग्रुप द्वारा आयोजित वार्षिक स्पोर्टस अवार्डस समारोह में हरियाणा के नीरज चोपड़ा ने 'स्पोर्ट स्टार ऑफ दी ईयर' एवं 'बेस्ट प्लेयर इन ट्रेक एण्ड फील्ड' का पुरस्कार प्राप्त किया।

इसी प्रकार, सुमित अंतिल को 'बेस्ट पैरा मेल स्पोर्टसपर्सन'; रवि दहिया को 'व्यक्तिगत खेल में श्रेष्ठ खिलाड़ी'; सविता पुनिया को 'टीम में श्रेष्ठ खिलाड़ी'; भारतीय हॉकी टीम(पुरुष) को 'ओलंपिक(टीम) में बेस्ट मूवमेंट' तथा 'नेशनल टीम ऑफ दी ईयर' और भारतीय हॉकी टीम (महिला) को 'श्रेष्ठ टीम पुरस्कार' से नवाजा गया।

संक्षिप्त समाचार

भाजपा आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए 'कश्मीर फाइल्स' का प्रचार कर रही : संजय राउत

मुंबई। शिवसेना सांसद संजय राउत ने रविवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर गुजरात और राजस्थान के आगामी विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' का प्रचार करने का आरोप लगाया। उन्होंने यह भी कहा कि फिल्म में कई 'कड़वी सच्चाइयों' को दबाने का प्रयास किया गया है। राउत ने शिवसेना के मुखपत्र 'सामना' में अपने साप्ताहिक कॉलम 'रोकटोक' में लिखा कि कश्मीर में विस्थापित कश्मीरी पंडितों की वापसी सुनिश्चित करना भाजपा का वादा था, लेकिन अनुच्छेद-370 के निरस्त होने के बावजूद ऐसा नहीं हुआ है। शिवसेना सांसद ने जानना चाहा कि यह किसकी नाकामी है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'द कश्मीर फाइल्स' का मुख्य प्रचारक भी करार दिया। भाजपा पर निशाना साधते हुए राउत ने सवाल किया कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) को भारत में शामिल करने के पार्टी के वादे का क्या हुआ। विवेक अग्निहोत्री द्वारा लिखित और निर्देशित 'द कश्मीर फाइल्स' पाकिस्तान समर्थित आतंकियों की ओर से समुदाय के लोगों की सुनियोजित हत्याओं के बाद कश्मीर से समुदाय के पलायन को दर्शाती है। 11 मार्च को रिलीज के बाद से इस फिल्म को लेकर राजनीतिक दलों में बहस छिड़ गई है। मध्य प्रदेश और गुजरात सहित भाजपा शासित कई राज्यों ने इसे कर मुक्त घोषित कर दिया है। राउत ने कहा, "कश्मीर से हिंदू पंडितों के पलायन, उनकी हत्याओं, उन पर किए गए अत्याचारों और उनके गुस्से पर आधारित फिल्म परेशान करती है। लेकिन इससे भी ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि फिल्म के जरिये हिंदू-मुसलमानों को फिर से बांटने और चुनाव जीतने का प्रयास किया जा रहा है।"

गोरखपुर में मोहन भागवत से मिले सीएम योगी आदित्यनाथ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत शनिवार को गोरखपुर पहुंचे। उत्तर प्रदेश के कार्यवाहक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनसे मुलाकात की। दोनों की मुलाकात करीब 40 मिनट तक चली। योगी आदित्यनाथ 25 मार्च को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले हैं। इससे पहले उनकी मोहन भागवत से मुलाकात को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। संघ प्रमुख शनिवार की शाम 4 बजे माधव भवन पहुंचे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखनाथ मंदिर से निर्धारित शाम 7 बजे माधव भवन पहुंच गए। उन्होंने तकरीबन 40 मिनट तक संघ प्रमुख से बातचीत की। उन्होंने संघ प्रमुख को होली के पावन त्यौहार की बधाई दी। भाजपा की सूबे में बड़ी जीत के लिए आभार व्यक्त किया। 7:40 बजे माधव भवन से सीएम योगी आदित्यनाथ गोरखनाथ मंदिर के लिए प्रस्थान कर गए। योगी आदित्यनाथ 25 मार्च को दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले हैं। ऐसे में दोनों की ये मुलाकात काफी अहम मानी जा रही है। कहा जा रहा है कि इस दौरान भागवत और योगी ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संघ प्रमुख को शपथ ग्रहण का निमंत्रण भी दिया। संघ प्रमुख गोरखपुर में मंगलवार तक रहेंगे। वो 20 और 21 मार्च को संगठन श्रेणी और जागरण श्रेणी की बैठक लेंगे। इसमें प्रांत कार्यकारिणी शामिल होगी। यह बैठक माधव भवन में होगी। मोहन भागवत गोरक्ष प्रांत के कार्यकर्ताओं की बैठक में उनके कार्यों की समीक्षा करेंगे। वह 22 मार्च की शाम को गुरु गंभीर नाथ प्रेक्षागृह में संघ एवं विचार परिवार के कार्यकर्ताओं के परिवार के साथ कुटुंब प्रबोधन के कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। मंगलवार की शाम 5 बजे गुरु गंभीर नाथ प्रेक्षागृह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गोरखपुर महानगर इसका आयोजन करेगा। प्रांत प्रचारक सुभाष जी के निर्देशन में प्रांत सह व्यवस्था प्रमुख हरे कृष्ण सिंह, विभाग कार्यवाह आत्मा सिंह एवं भाग बौद्धिक प्रमुख शंकर सिंह जी के नेतृत्व में कार्यकर्ता इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तैयारी में लग गए हैं। कार्यक्रम में संस्कार भारती के कलाकारों एवं विद्या भारती के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी जाएगी।

मुख्यमंत्री राहत कोष बना जरूरतमंदों के लिए आशा की एक किरण

शिमला। हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य के अति गरीब व सभी ज़रुरतमन्द व्यक्तियों की सहायता करने की दिशा में ईमानदार प्रयास कर रही है। सरकार द्वारा ऐसे सभी गरीब एवं पात्र लोगों को विभिन्न विभागों के माध्यम से कार्यान्वित की जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के अधीन लाया जा रहा है। इन योजनाओं के अतिरिक्त, मुख्यमंत्री राहत कोष आपात स्थितियों में सहायता के लिये हर संभव कोशिश कर रहे गरीब एवं बेसहारा लोगों के लिये आशा की किरण साबित हुआ है। मुख्यमंत्री राहत कोष से वित्तीय सहायता मुख्यमंत्री के विवेक पर मानवीय आधार पर प्रदान की जा रही है। मुख्यमंत्री राहत कोष से राज्य में पिछले चार वर्षों के दौरान चिकित्सा उपचार तथा आपातकाल के दौरान खर्चों को पूरा करने के लिये 28,535 पात्र व्यक्तियों को 69,39,86,378 रुपये की राशि प्रदान की गई है। वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान इस निधि से 6,413 ज़रुरतमन्द लोगों को 13,21,24,419 रुपये की राशि वितरित की गई। वर्ष 2020-21 में 7,371 व्यक्तियों को 17,23,09,008 रुपये की वित्तीय सहायता तथा वर्ष 2021 से फरवरी, 2022 तक 7,273 व्यक्तियों को 16,03,61,600 रुपये का लाभ प्रदान किया गया है। पिछले चार वर्षों के दौरान निजी तौर पर, कंपनी निकायों तथा विभिन्न संगठनों से मानवीय प्रयोजन के लिये 46,99,13,882 रुपये की राशि अंशदान के रूप में प्राप्त हुई है। राज्य सरकार समय-समय पर नागरिकों, कंपनियों तथा संगठनों को इस निधि में उदारतापूर्वक दान करने का आग्रह कर रही है, क्योंकि यह धनराशि अस्वस्थ एवं व्यथित गरीब लोगों को राहत पहुंचाने के लिये वितरित की जाती है।

राज्यपाल ने कांगड़ा अंगेस्ट कोविड-19 वर्किंग ग्रुप एवं एनआईएफएए द्वारा आयोजित समारोह की अध्यक्षता की

एजेंसी

शिमला। कांगड़ा जिला प्रशासन के अन्तर्गत गठित कांगड़ा अगेंस्ट कोविड-19 वर्किंग ग्रुप एवं नेशनल इंटीग्रेटिड फोरम ऑफ आर्टिस्ट एंड एक्टिविस्ट्स (एनआईएफएए) के संयुक्त तत्वधान में धर्मशाला कॉलेज में आयोजित सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि जो संगठन समाज में निरंतर प्रयासरत रहते हैं वही देश की असली ताकत हैं। राज्यपाल ने कहा कि कांगड़ा अंगेस्ट कोविड-19 वर्किंग ग्रुप से प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज में अनेक ऐसी संस्थाएं हैं जो अपनी विचारधारा और विचारों के अनुसार काम कर समाज के लिए एक मिसाल कायम करती हैं। उनके अनुभव समाज में पहचाने जाते हैं और हम सभी के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करते हैं। नशे पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में नशा समाज की सबसे बड़ी समस्या है। समाज में विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में नशे के खिलाफ लोगों में जागरूकता लाने के लिए नशा मुक्ति कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने इस दिशा में सभी सामाजिक संगठनों से आगे आने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यदि समाज इस दिशा में सोचता है तभी उसके पास इस चुनौती से निपटने की शक्ति होगी। राज्यपाल ने कहा कि यह हमारी सोच की ताकत है कि हमने कोरोना के विरूद्ध युद्ध में जीत हासिल की है। उन्होंने कहा कि नशा मुक्त हिमाचल

के लिए हर व्यक्ति को सहयोग करना चाहिए क्योंकि प्रदेश में नशीली दवाओं के उपयोग के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। उन्होंने पर्यावरण के मुद्दे पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हम सभी को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करना चाहिए। अगर हम पर्यावरण को ठीक प्रकार से नहीं समझेंगे तो भविष्य में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान बेहतर कार्य करने वाले सभी अधिकारियों और संस्थाओं को बधाई दी और उनका आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व राज्यपाल ने विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों को सम्मानित किया। राज्यपाल ने इस समारोह में 250 संस्थाओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर समारोह के विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पर्यावरण विभाग के राष्ट्रीय संयोजक गोपाल आर्य ने कहा कि समाज में बहुत शक्ति होती है और कोरोना महामारी के दौरान समाज ने किसी को भी भूखा नहीं मरने दिया।

उन्होंने कहा कि इस महामारी से हमें तीन चीजें सीखने की जरूरत है। उन्होंने सुझाव दिया कि अपनी जीवनशैली में सुधार करें, अपनी जरूरत के अनुसार इसे पुनः परिभाषित करें और अपने जीवन को पुनः शुरू करें। उन्होंने प्रकृति के संरक्षण पर भी बल दिया। उपायुक्त, कांगड़ा निपुण जिंदल ने कांगड़ा अगेंस्ट कोविड-19 वर्किंग ग्रुप गठित किए जाने के पीछे की सोच और कोरोना महामारी के दौरान लोगों के सहयोग व योगदान के बारे में जानकारी दी। एनआईएफएए के उपाध्यक्ष नरेश बराना ने कहा कि यह संगठन देश के 28 राज्यों और सात केंद्र शासित प्रदेशों में कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि वे हर क्षेत्र में सामाजिक कार्य कर रहे हैं और सामाजिक मुद्दों के लिए सात बार गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो चुके हैं। भारत सरकार ने एनआईएफएए को सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए शीर्ष संगठन के रूप में घोषित किया है। एनआईएफएए की अध्यक्ष सारिका कटोच ने राज्यपाल का स्वागत करते हुए संगठन की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने जिले में कोविड-19 महामारी के दौरान उनके साथ सहयोग करने वाले अन्य संगठनों के योगदान के बारे में भी अवगत करवाया।

कांग्रेस के असंतुष्ट खेमे G-23 में पड़ी फूट, गुलाम नबी आजाद की डिनर पार्टी से दूर रहे 8 नेता

एजेंसी

हाल ही में संपन्न हुए पांच राज्यों के चुनाव में कांग्रेस को मिली हार के बाद पार्टी का असंतुष्ट खेमा G-23 पार्टी में नेतृत्व परिवर्तन को लेकर मुखर है। लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि G-23 में फूट पड़ती नजर आ रही है। पिछले दिनों गुलाम नबी आजाद के घर हुई डिनर पार्टी में G-23 गुट के कई नेता नजर नहीं आए। G-23 से 8 कांग्रेसियों ने खुद को अलग कर लिया है, जबकि जितिन प्रसाद ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले ही भाजपा का दामन थाम लिया है। G-23 के असंतुष्ट खेमे में अब केवल 14 नेता ही बचे हैं। इनमें गुलाम नबी आजाद, भूपेंद्र सिंह हुड्डा और पृथ्वीराज चव्हाण पूर्व सीएम रह चुके हैं। हालांकि, गुलाम नबी आजाद के घर बुलाई गई डिनर पार्टी में 4 नए नेता भी शामिल हुए, लेकिन उनमें से दो का कांग्रेस से नाता टूट चुका है। कांग्रेस ने पार्टी प्रवक्ताओं को यह कहा है कि असंतुष्ट खेमे के नेताओं के खिलाफ कोई बयान नहीं देना है, जिससे उन्हें बोलने का मौका मिले। कांग्रेस का असंतुष्ट खेमा जिसे हम G-23 के नाम से जानते हैं, गुलाम नबी आजाद उसके अगुआ बनकर उभरे थे। उनके अलावा इस खेमे में कपिल सिब्बल, शशि थरूर, मनीष तिवारी, आनंद शर्मा, पीजे कुरियन, रेणुका चौधरी, मिलिंद देवड़ा, मुकुल वासनिक, जितिन प्रसाद, भूपेंद्र सिंह हुड्डा और राजेंद्र कौर भट्टल शामिल हैं। इनके अलावा एम वीरप्पा मोइली, पृथ्वीराज चव्हाण, अजय सिंह, राज बब्बर, अरविंदर सिंह लवली, कौल सिंह ठाकुर, अखिलेश प्रसाद सिंह, कुलदीप शर्मा, योगानंद शास्त्री, संदीप दीक्षित और विवेक तंखा का नाम भी असंतुष्ट खेमे में शामिल है।

एक समाचार के पीछे होती है पत्रकार की बड़ी मेहनतः हरबंस सिंह ब्रसकोन

एजेंसी

शिमला। पत्रकार साल भर प्रतिदिन 24 घंटे समाचार संकलन का काम करता है। हम दिन रात जो समाचार देखते या पढ़ते हैं उसके पीछे पत्रकार की बड़ी मेहनत होती है, जो परिवार की मदद के बिना नहीं हो सकता है। निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, आईएएस हरबंस सिंह ब्रसकोन ने यह विचार विश्व संवाद केन्द्र शिमला द्वारा शिमला में आयोजित पत्रकार परिवार मिलन कार्यक्रम में रखे। उन्होंने कहा कि सूचना के युग में समाचारों का महत्व काफी बढ़ा है। हर व्यक्ति प्रातः से सायं जानना चाहता है कि उसके आसपास और पूरे विश्व भर में क्या घटित हो रहा है। ऐसे में पत्रकारों की भूमिका काफी बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि मीडिया

अगर सकारात्मक भूमिका अदा करे तो किसी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। वर्तमान दौर में मीडिया की उपयोगिता और इसकी भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है, सूचना के इस युग में सूचना से जुड़ना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हो गया है, ऐसे में मीडिया कर्मियों को समाज को तथ्यों पर आधारित सूचना उपलब्ध करवानी चाहिए ताकि समाज में कभी भी किसी भी तरह का भ्रम उत्पन्न न हो। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता हार्दिक मेहता, विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी के अखिल भारतीय आईटी संगठक द्वारा विचार रखे गए। उन्होंने व्यक्तिगत ध्येय को साथ में रखते हुए परिवारों की सोच के आधार पर अपना जीवन जीने की सलाह दी। साथ ही विघटनकारी पत्रकारिता के स्थान पर पूरे समाज और राष्ट्र के लिए पत्रकारिता करने पर भी बल दिया। इस दौरान सरस्वती विद्यामंदिर हिमरश्मि परिसर विकासनगर में पत्रकारों व उनके परिवारों के लिए विभिन्न प्रकार की खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसमें विजेताओं और प्रतिभागियों को पुरस्कार व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इससे पूर्व कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ किया गया। विश्व संवाद केन्द्र के प्रमुख डॉ. दलेल सिंह ठाकुर ने मुख्य अतिथि हरबंस सिंह ब्रसकोन, उपाध्यक्ष यादविन्द्र सिंह चौहान ने मुख्य वक्ता हार्दिक मेहता को हिमाचली परम्परा अनुसार शॉल व टोपी पहनाकर सम्मानित किया।

मनोज सिन्हा बोले- जम्मू कश्मीर को आतंक एवं भ्रष्टाचार से मुक्त बनाना है लक्ष्य

एजेंसी

उधमपुर (जम्मू कश्मीर)। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने रविवार को कहा कि जम्मू कश्मीर प्रशासन का लक्ष्य इस केंद्रशासित प्रदेश को आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार से मुक्त एक विकसित समाज बनाना है। उन्होंने यहां सहायक प्रशिक्षण केंद्र में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के 636 रंगरूटों के प्रमाणन-सह पासिंग आउट परेड में अपने संबोधन में सीमापार से घुसपैठ की कोशिशें तथा हथियारों एवं मादक पदार्थों समेत विभिन्न चुनौतियों का बहादुरी से मुकाबला करने को लेकर सुरक्षाबलों की भूमिका की तारीफ की।

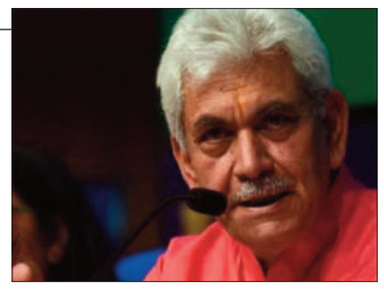

सिन्हा ने कहा, ' जम्मू कश्मीर विविधता से भरा है, जो हमारी ताकत है। हमने सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है एवं हमारे सुरक्षाबल चौकन्ने हैं। उन्होंने राष्ट्र-विरोधी तत्वों के नापाक मंसूबे को विफल कर नये जम्मू कश्मीर के निर्माण में अहम भूमिका निभायी है। परेड का निरीक्षण एवं मार्च पास्ट की सलामी लेने के उपरांत उपराज्यपाल ने कहा कि दशकों पुराने आतंकी इकोसिस्टम को पूरी तरह ध्वस्त करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, ''जम्मू कश्मीर को भ्रष्टाचार एवं भय से मुक्त विकसित समाज बनाने के लिए हमने भ्रष्टाचार, आतंकवाद वित्तपोषण एवं आतंकी इकोसिस्टम पर निर्णायक प्रहार करने की अपनी कोशिश जारी रखी है। उन्होंने बीएसएफ के रंगरूटों से बल एवं लोगों की परंपरा एवं आशाओं पर खरा उतरने तथा पेशेवर ढंग से अपनी ड्यूटी करने की अपील की ताकि कोई भी दुश्मन, देश की सीमा का उल्लंघन नहीं कर सके। उपराज्यपाल ने कहा, मादक पदार्थ का व्यसन एक बड़ी चुनौती है क्योंकि मादक पदार्थ एक साजिश के तहत पाकिस्तान से तस्करी के रास्ते भेजा जाता है। आपको मादक पदार्थों की तस्करी को रोकने में बड़ी भूमिका निभानी होगी। रंगरूटों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा, आप पूरी तरह सक्षम एवं तैयार हैं देश देख रहा है कि बीएसएफ पर्वतीय क्षेत्रों, मैदानों, मरूभूमि एवं घने जंगल में पूरे समर्पण के साथ अपनी ड्यूटी कर रहा है। यह बल देश की क्षेत्रीय अखंडता एवं संप्रभुता के हर खतरे से डटकर लोहा ले रहा है।

संजय टंडन ने की धूमल से शिष्टाचार भेंट--नगर निगम शिमला के चुनावों को लेकर की विस्तृत चर्चा

एजेंसी

शिमला । भाजपा सह प्रभारी संजय टंडन ने अपने दो दिवसीय हिमाचल प्रदेश प्रवास के दौरान आज समीरपुर में पूर्व मुख्यमंत्री प्रो प्रेम कुमार धुमल के निवास पर उनसे शिष्टाचार भेंट की और आगामी शिमला नगर निगम चुनाव एवं वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव के विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा की भाजपा आने वाले नगर निगम शिमला के चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेगी, भाजपा ने नगर निगम शिमला में अच्छा काम किया है। उन्होंने कहा की भाजपा एक कार्यकर्ता आधारित राजनीतिक दल है जिसके आधार पर हम नगर निगम शिमला में अच्छे प्रदर्शन का दावा करते है।

मंत्रिमण्डल की बैठक में नई आबकारी नीति को स्वीकृति प्रदान की गई

एजेंसी

शिमला । मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में आज यहां आयोजित प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक में वर्ष 2022-23 के लिए आबकारी नीति को स्वीकृति प्रदान की गई, जिसमें वर्ष के दौरान 2,131 करोड़ रुपये के राजस्व प्राप्ति की परिकल्पना की गई है, जो कि वित्त वर्ष 2021-22 से 264 करोड़ रुपये अधिक होगा। यह राज्य आबकारी राजस्व में 14 प्रतिशत की कुल वृद्धि को दर्शाता है। बैठक में वित्तीय वर्ष 2022-23 राज्य में प्रति इकाई चार प्रतिशत नवीनीकरण शुल्क पर खुदरा आबकारी ठेकों के नवीनीकरण को स्वीकृति प्रदान की गई। इसका उद्देश्य सरकारी राजस्व में पर्याप्त बढ़ोतरी प्राप्त करना और पड़ोसी राज्यों में दाम कम करके होने वाली देसी शराब की तस्करी पर रोक

लगाना है। लाइसेंस फीस कम होने के कारण देसी शराब ब्रांड सस्ती होगी। इससे उपभोक्ताओं को सस्ती दरों पर अच्छी गुणवत्ता की शराब उपलब्ध होगी और उन्हें अवैध शराब खरीदने के प्रलोभन से भी बचाया जा सकेगा और शुल्क चोरी पर भी निगरानी रखी जा सकेगी। नई आबकारी नीति में खुदरा लाइसेंसधारियों को आपूर्ति की जाने वाली देसी शराब के निर्माताओं और बॉटलर्ज के लिए निर्धारित 15 प्रतिशत कोटा समाप्त कर दिया गया है। इस निर्णय से खुदरा लाइसेंसधारी अपना कोटा अपनी पसंद के आपूर्तिकर्ता से उठा सकेंगे और प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यों पर अच्छी गुणवत्ता की देसी शराब की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। देसी शराब का अधिकतम खरीद मूल्य मौजूदा मूल्य से 16 प्रतिशत सस्ता हो जाएगा। इस वर्ष की नीति में गौवंश के कल्याण के लिए अधिक निधि प्रदान करने के दृष्टिगत गौधन विकास निधि में एक रुपये की बढ़ोतरी करते हुए इसे मौजूदा 1.50 रुपये से बढ़ाकर 2.50 रुपये किया गया है। राज्य में कोविड-19 के मामलों में कमी को देखते हुए कोविड उपकर में मौजूदा से 50 प्रतिशत की कमी की गई है। लाइसेंस शुल्क के क्षेत्र विशिष्ट स्लैब को समाप्त करके बार के निश्चित वार्षिक लाइसेंस शुल्क को युक्तिसंगत बनाया गया है। अब पूरे राज्य में होटलों में कमरों की क्षमता के आधार पर एक समान लाइसेंस स्लैब होंगे। जनजातीय क्षेत्रों में आने वाले पर्यटकों को बेहतर सुविधा प्रदान करने और होटल उद्यमियों को राहत प्रदान करने के लिए जनजातीय क्षेत्रों में बार के वार्षिक निर्धारित लाइसेंस शुल्क की दरों में काफी कमी की गई है। शराब के निर्माण, संचालन, थोक विक्रेताओं को इसके प्रेषण और बाद में खुदरा विक्रेताओं को बिक्री की निगरानी के लिए इन सभी हितधारकों को अपने प्रतिष्ठानों में सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य किया गया है।

विभाग द्वारा हाल ही में शराब बॉटलिंग प्लांटों, थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं में पाई गई अनियमितताओं को ध्यान में रखते हुए हिमाचल प्रदेश आबकारी अधिनियम, 2011 को और सख्त किया गया है। राज्य में एक प्रभावी एंड-टू-एंड ऑनलाईन आबकारी प्रशासन प्रणाली स्थापित की जाएगी जिसमें शराब की बोतलों की ट्रैक एंड ट्रेस की सुविधा के अलावा निगरानी के लिए अन्य मॉडयूल शामिल होंगे। मंत्रिमंडल ने वर्ष 2022-23 के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य पथकर नीति को अपनी मंजूरी प्रदान की है जिसमें राज्य में सभी पथकर बेरियर की नीलामी व निविदा शामिल हैं। वर्ष 2021-22 के दौरान टोल राजस्व में गत वर्ष के राजस्व के मुकाबले 20 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। मंत्रिमंडल ने हिमाचल प्रदेश आपदा राहत नियमावली, 2012 में संशोधन को अपनी मंजूरी प्रदान की जिसमें मधुमक्खी, हॉरनेट और वैस्प के काटने से होने वाली मृत्यु, दुर्घटनाग्रस्त डूबने, और वाहन दुर्घटना में होने वाली मृत्यु के मामलों को राहत नियमावली के अन्तर्गत शामिल किया गया है। मंत्रिमंडल ने लोक सेवा आयोग के माध्यम से राजस्व विभाग में नियमित आधार पर सीधी भर्ती के माध्यम से तहसीलदार श्रेणी-1 के 11 पदों को भरने की स्वीकृति प्रदान की।

संक्षिप्त समाचार

हर वर्ष की भांति बाबा भीष्म दास मंदिर मे हुआ मेले का आयोजन

योगेंद्र / एनसीआर समाचार

हर वर्ष की भांति बाबा भीष्म दास मंदिर मे लगने वाले मेले मे हजारों की संख्या मे श्रद्धालू पहुंचे, बाबा भीष्म दास मंदिर परिषर मे रंगोंत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, हर वर्ष के भांति इस वर्ष भी हजारों की संख्या मे दूर-दूर से श्रद्धालू बाबा के दर्शन के लिए पहुंचे। मंदिर कमेटी के द्वारा भजनो व खेलो का आयोजन करवाया गया, जिसमे कबड्डी प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान बराड खेड़ा व दूसरा स्थान कन्हैरी की टीम ने प्राप्त किया जिन्हे 31000 व 21000 का नगद पुरस्कार दिया गया, वहीं कुस्ती का नगद पुरस्कार 11000/- बिशन सिंह सांसरोली व बुजुर्गो की दौड़ का 1100/- नगद पुरस्कार रामकिशन बाढड़ा ने प्राप्त किया, पुरस्कार वितरण के समय भाजपा OBC मोर्चा मण्डल अध्यक्ष देवदत्त जांगड़ा, सरपंच महेन्द्र, जगदेव, हरीश बोहरा, डॉ.वेद, विनोद व समस्त ग्रामवासी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सुश्री कावेरी को 11 लाख रुपये का चेक प्रदान किया

देवेन्द्र कुमार जैन / एनसीआर समाचार

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 31वीं राष्ट्रीय सीनियर कैनो स्प्रिंट चैंपियनशिप में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए सात स्वर्ण पदक अर्जित करने वाली सुश्री कावेरी ढीमर को 11 लाख रुपए का चेक प्रदान किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निवास कार्यालय स्थित सभागार में कावेरी को चेक प्रदान कर कहा कि खेलते जाओ-जीतते जाओ, राज्य सरकार हर कदम पर आपके साथ है। सरकार हर संभव सहयोग करेगी। राष्ट्रीय चेम्पियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली चेम्पियन सुश्री कावेरी 24 से 27 मार्च 2022 तक थाईलैंड में आयोजित होने वाली एशियन चैंपियनशिप में सम्मिलित होंगी। उल्लेखनीय है कि सीहोर जिले के ग्राम मंडी की निवासी कावेरी ने 24 से 27 अक्टूबर 2021 तक हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में आयोजित प्रतियोगिता में 7 स्वर्ण पदक जीते थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने इस उपलब्धि पर कावेरी को 11 लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की थी।

साइबर क्राइम द्वारा 40 हजार की ठगी हुई

अनंत ठाकुर / एनसीआर समाचार

आज 18 मार्च 2022 को लगभाग 12:00 बजे के करीब विष्णु कमल जो की चंबाघाट सोलन हिमाचल प्रदेश के निवासी है उसके साथ एक साइबर अपराध हुआ। विष्णु कमल के खाते से साइबर क्राइम वाले लगभाग 40 हजार रूपए उडा ले गए विष्णु कमल द्वार सिटी चौकी सोलन में प्राथमिकी कार्यवाई की परांतु चौकी से भी उपयोग आश्वसन के शिवाय कुछ नहीं मिला, विदित रहे काम विष्णु कमल ने पिछले दिन ऑनलाइन कुछ समान मंगवाया था, जो की 8596719905 नंबर ऑनलाइन है उनके द्वारा में नंबर से कमल के साथ साइबर क्राइम द्वारा 40 हजार की ठगी हुई है। विष्णु कमल ने साइबर अपराध नियंत्रण हिमाचल टोल फ्री नंबर 1930 पर कॉल करके अपनी FIR दर्ज करवई परंतु वहां से भी कोई जवाब नहीं मिला, उसके बाद विष्णु कमल ने (एनसीआर समाचार) से गुहार लगाई की जल्द से जल्द मेरे 40 हजार रूपए वापस दिलाया जाए।

मानवता की पेश की मिसाल लकवाग्रस्त पैसेंजर के नहीं लिया टिकट

देवराम ठाकुर / एनसीआर समाचार

इंदौर की पहचान जहां हिन्दुस्तान के सबसे स्वच्छ शहर के रूप मे होती हैं साथ ही साथ इंदौर की पहचान मदद करने वाले शहर के रूप मे भी होती हैं एसा ही एक मामला इंदौर मे गुरुवार यानी 17/03/2022 को देखने को मिला जहां एक महिला अपने बेटे के इलाज के लिए इंदौर आयी थी, वहां अपने 3 बच्चों के साथ सिटी बस से हॉस्पिटल जा रहीं थीं। जब टिकट कटाने की बारी आयी तो महिला द्वारा 4 लोगों का टिकट काटने को कहा गया परंतु सिटी बस कन्डक्टर कपिल कदम द्वारा 3 लोगों का ही टिकट लिया गया, और कहा गया कि 3 लोगों का टिकट दीजिए, महज एक कन्डक्टर की पोस्ट पर होने के बाद भी मदद करने का यह ज़ज्बा काबिले तारीफ है। सलाम है उन लोगों को जो किसी न किसी तरीके से निस्वार्थ भाव से लोगों की मदद करने मे पीछे नहीं हटते।

UDH मंत्री शांति धारीवाल ने कोटा की आदर्श होली सभी प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दी

महावीर धोबी / एनसीआर समाचार

UDH मंत्री धारीवाल ने सभी प्रदेशवासियों को होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा, कि देशवासियों को जितना उत्साह होली पर होता है उतना ही उत्साह पूरे साल भी होना चाहिए, इसी तहर उत्साह के साथ जीवन को जीने की सीख लेनी चाहिए। UDH मंत्री शांति धारीवाल कोटा दौरे पर हैं पहले अग्रवाल सेवा समिति के होली मिलन समारोह में धारीवाल ने शिरकत की ओर उसके बाद मंत्री धारीवाल नयापुरा आदर्श होली स्थान पर पहुंचे ओर होली का पूजन किया। धारीवाल ने आदर्श होली में बनी सभी झांकियों का अवलोकन किया और झांकियों की खुले दिल से बहुत तारीफ भी की धारीवाल ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि आदर्श होली कोटा की बेहतरीन होलियों में से एक है और इस होली की खासियत यह है कि यहां पर जो झांकियां बनाई जाती हैं उसे पुरे साल में सबसे अधिक यादगार किया जाता हैं जो लोगों के जहन में वर्षों तक जिंदा रहते हैं और जनता को आकर्षित करते रहते हैं।

रक्तदान करने वाले शासकीय सेवकों को आधे दिवस का अवकाश

ब्रज राठौर / एनसीआर समाचार

शाजापुर जिले में 23 मार्च 2022 शहीद दिवस के अवसर पर जिले में विभिन्न स्थानों पर विशाल रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है रक्तदान शिविरों में रक्तदान करने वाले शासकीय सेवकों को कार्यालय से आधे दिवस की विशेष छूट दिए जाने की विभिन्न संगठनों द्वारा बैठक में की गई मांग को देखते हुए कलेक्टर श्री दिनेश जैन द्वारा रक्तदान करने वाले शासकीय सेवकों को 23 मार्च के लिए आधे दिवस का विशेष अवकाश दिया जाने का निर्णय लिया गया, कलेक्टर ने जिले के समस्त शासकीय कार्यालय प्रमुखों को निर्देशित किया है शासकीय कर्मचारियों आधे दिवस की विशेष छूट इस पर दी जाएगी की वहां रक्तदान उपरांत प्रमाण पत्र कार्यालय प्रमुख को प्रस्तुत करें।

शिविर में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून समेत विभिन्न विषयों पर दिया गया प्रशिक्षण

मुकेश हरयानी / एनसीआर समाचार

सागर शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्र इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम कनेरादेव में संपन्न हुआ। उच्च शिक्षा विभाग के क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक और महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जी एस रोहित के निर्देशन में 11 से 17 मार्च तक चले इस प्रशिक्षण शिविर का समापन मशहूर लोक कलाकार पद्मश्री रामसहाय पांडे द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि उच्च शिक्षा विभाग की ओएसडी डॉ भावना यादव तथा समाजसेवी बसंत घोषी रहे। अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ संजीव दुबे ने की। कार्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान विभाग के अतिथि प्राध्यापक डॉ संदीप सबलोक ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पित किए तथा छात्राओं ने सरस्वती वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत तथा आभार प्रदर्शन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ दीपक जॉनसन ने किया। शिविर में प्राथमिक शाला के प्राचार्य श्री राकेश साहू व अतिथि विद्वान डॉ अनिल मेहरोलिया का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ मधु स्थापक डॉ उमाकांत स्वर्णकार डॉ अंकुर गौतम डॉ संदीप तिवारी शैलेंद्र सिंह राजपूत डॉ जय नारायण यादव डॉ स्वदीप श्रीवास्तव डॉ सीपी सिंह चंदन सिंह डॉ भूपेंद्र कुमार लक्ष्मी मिश्रा कीर्ति रैकवार रविन्द्र सिंह अंकित चौरसिया अमित चौरसिया आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम के अतिथियों का स्वागत उद्बोधन देते हुए एनएसएस की छात्र इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ दीपक जॉनसन ने विभिन्न सत्रों में शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों का भी प्रशिक्षण विषय विशेषज्ञों के माध्यम से दिए जाने की जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि 15 मार्च को विश्व उपभोक्ता दिवस पर उपभोक्ता संरक्षण और जागरूकता के क्षेत्र में सक्रिय सचेत संस्था के अध्यक्ष व सेल्फ वर्कर डॉ संदीप सबलोक ने शिविरार्थियों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून 2013 की जानकारी देकर इसे उपभोक्ता संरक्षण के क्षेत्र में भारत सरकार का क्रांतिकारी कदम बताया। उन्होंने कहा कि इस कानून के तहत प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध और पौष्टिक भोजन प्राप्त करने का कानूनी अधिकार है। डॉ सबलोक ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवको से ग्रामीण और अशिक्षित वर्ग में जाकर इस कानून का लाभ दिलाने और उपभोक्ता संरक्षण व जागरूकता के क्षेत्र में काम कर राष्ट्र व समाज की सेवा करने का आव्हान भी किया।

उन्होंने मोबाइल फोन की बढ़ते उपयोग के साथ इससे जुड़े ठगी के तरीकों और उनसे बचने के उपाय भी छात्रों को बताए। शिविर के दौरान डॉक्टर जय नारायण यादव तथा डॉ मनीष जैन ने भी प्रशिक्षण प्रदान किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पद्मश्री रामसहाय पांडे ने कहा कि सरकार ने उन्हें जो सम्मान दिया है वह भारतीय संस्कृति का सम्मान है। उन्होंने उपस्थित शिविरार्थी छात्रों से भारतीय संस्कृति और मूल्यों को बनाए रखते हुए समाज और राष्ट्र की सेवा का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने अस्पताल पहुँचकर रायसेन वारदात के घायलों से स्वास्थ्य का हालचाल पूछा

देवेन्द्र कुमार जैन / एनसीआर समाचार

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार 18 मार्च की रात्रि रायसेन जिले की खमरिया ग्राम के पास हुई वारदात के घायलों से आज हमीदिया अस्पताल जाकर भेंट की मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि यह घटना दुःखद है। अपराधियों को किसी भी स्थिति में नहीं छोड़ जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने घायलों के संपूर्ण बेहतर से बेहतर उपचार के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मृतक श्री राजू आदिवासी के परिवार को 5 लाख रूपए की सहायता राशि दी जाएगी, गंभीर घायल श्री हरि सिंह और श्री रामजी भाई को 2-2 लाख रूपए की राशि प्रदान की जाएगी। घायल श्री नरेन्द्र की आंख में चोट है, इन्हें भी 2 लाख रूपए की सहायता दी जाएगी। अन्य घायलों को भी 50-50 हजार रूपए की राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सभी घायलों की स्वास्थ्य जांच और संपूर्ण उपचार के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि सभी घायलों का इलाज पूर्णतः निःशुल्क होगा, मुख्यमंत्री श्री चौहान ने GMC भोपाल के डीन डॉ.अरविंद राय और आर्थोपेडिक विभाग के अध्यक्ष डॉ.सुनील टंडन से घायलों के उपचार के संबंध में चर्चा की। कमिश्नर भोपाल श्री गुलशन बामरा घटना स्थल पर रात में ही पहुंच गए थे और उन्होंने वहां की स्थिति का मुआयना कर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। श्री बामरा घटना स्थल से सीधे हमीदिया अस्पताल पहुंचे और मुख्यमंत्री को उन्होंने घटना से अवगत कराया, इस समय वहाँ पर कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

पावटा की प्रसिद्ध है डोलची होली

राजेश कुमार / एनसीआर समाचार

दौसा जिला की पावटा उप तहसील में एक प्रकार की खूनी होली खेली जाती है। यहां महिलाएं पुरुषों पर इतने कोड़े बरसाती है की पुरष लहू लुहान हो जाते है यहां तक की गांव के बड़े बुजर्ग हाथ में हुक्का लेकर महिलाओं को और पुरषों को प्रोत्शाहित करते रहते है। दरहसल शहीद बल्लू की याद में होली के बाद भाई दूज को ये होली खेली जाती है। पावटा गांव के हदीरा चौक रणभूमि में तब्दील हो जाता है। वहां महिलाएं पुरषों पर तीन घंटे तक कोड़े बरसाती है और पुरूष उन पर पानी फैंकते है यह महिलाएं तब तक नहीं रुकती जब तक पुरुष लहूलुहान नहीं हो जाते पूरा गांव बल्लू शाहिद के जयकारों से गूंजता रहता है। इस आयोजन से पहले टोलिया बनाई जाती है उसके बाद गांव के पंच पटेल कार्यकम को सुरु करने की घोषणा करते हैं तीन घंटे चलने वाली इस होली में कौन जीता कौन हारा इसका फैसला पंच पटेल ही करते है, इस होली को देखने दूर दराज से लोग आते है। ग्रामीण लोग बताते है की एक बार होली नहीं मनाई तो मवेशी मरने लग गए थे। उसके बात रैगुरल होली मनाई जाती है और शहीद बल्लू के जयकारे लगाए जाते है ग्रामवासी बताते है यह होली बल्लू शहीद की याद में मनाई जाती है आयोजन में ही महिलाए लोकगीत भी गाती हैं।

होली मिलन समारोह में सम्मिलित हुए मुख्यमंत्री

देवेन्द्र कुमार जैन / एनसीआर समाचार

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि हमारा समाज उत्सवधर्मी समाज है। उत्सव के बिना जिन्दगी अधूरी है। पिछले दो साल से कोरोना के कारण हम त्यौहार नहीं मना पा रहे थे, अब कोरोना नियंत्रण में है, इसलिए सब मिलकर आनंद के साथ त्यौहार मनाएं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने श्री गुजराती समाज भवन में राजधानी वस्त्र व्यवसायी संघ तथा मानस भवन में भोपाल उत्सव मेला समिति द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में यह बात कही, मुख्यमंत्री श्री चौहान ने होली मिलन समारोह में उपस्थित नागरिकों को होली की अनंत शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इस वर्ष किसानों की फसल अच्छी हुई है। इसलिए बाजार से सामग्री की खरीदी व्यापक स्तर पर होगी। उन्होंने कहा कि किसानों के बैंक खातों में 7 हजार 618 करोड़ रूपए फसल बीमा की राशि सरकार द्वारा दी गई है। कर्मचारियों के लिए भी कोई कसर नहीं छोड़ी गई है। कर्मचारियों को 11 प्रतिशत महंगाई भत्ता के रूप में 6 हजार करोड़ रूपए की राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कोरोना के कारण प्रदेश के 88 लाख परिवार अपने बिजली का बिल नहीं भर पाए थे। उनके बिजली बिल माफ कर दिए गए हैं। अब माफ किए गए बिजली बिलों की लगभग 6 हजार करोड़ रूपए की राशि सरकार भरेगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि जनता के पास पैसा होगा तो व्यवसाय और रोजगार बढ़ेगा, अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। देश और प्रदेश लगातार खुशहाली की तरफ बढ़ता जाएगा। उन्होंने कहा कि जनता के सहयोग से कार्य आसानी से हो जाते हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने जनता से अपील करते हुए कहा कि स्वच्छता सर्वेक्षण चल रहा है, जिसमें भोपाल को स्वच्छता में नंबर एक लाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ें। जन्मदिन और शादी की वर्षगांठ पर एक पेड़ अवश्य लगाएं। गांव और शहर का विकास भी जनता के द्वारा ही संभव है। उन्होंने कहा कि हमने तय किया है कि गांव और शहर का जन्मदिन गौरव दिवस के रूप में मनाया जाएगा। भोपाल शहर का गौरव दिवस 01 जून को मनाने का निर्णय लिया गया है। इस दिन भोपाल का विलीनीकरण हुआ था, मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मानस भवन स्थित श्री सिद्ध रघुनाथ मंदिर में दर्शन किए और वृदावंन से आयी झांकी भी देखी। मुख्यमंत्री श्री चौहान से पूर्व महापौर श्री आलोक शर्मा द्वारा चौक बाजार में पार्किंग की मांग पर कहा कि चौक बाजार भोपाल की शान है। यहां सुव्यवस्थित पार्किंग बनवाई जाएगी। श्री शर्मा ने पुराने शहर के बड़वाले महादेव मंदिर के निर्माण की जानकारी से भी अवगत करवाया।

भोपाल से JMB के चार आतंकी गिरफ्तार

तोप सिंह राजपूत / एनसीआर समाचार

भोपाल में जमात-ए-मुजाहिदीन बांग्लादेश (JMB) के आतंकी जन्नत और हूरों के लालच में जुड़े थे। उनका मानना है कि गिरफ्तारी के बाद अब उन्हें जन्नत नहीं मिलेगी, वह इस अटूट विश्वास के साथ जेहादी मुहिम में शामिल हुए, कि इस लड़ाई में मौत के बाद वे शहीद माने जाएंगे, जन्नत में उन्हें 72 हूरें तोहफे में मिलेंगी। पूछताछ दौरान ATS की टीम को आतंकियों JMB में जुड़ने का मकसद बताया रणनीति के तहत वह मध्य प्रदेश के युवाओं को जेहादी विचारधारा से प्रभावित करने में जुटे रहे, युवाओं को बहकाने के लिए वह देश में हो चुकी मॉब लिंचिंग की घटनाओं के वीडियो दिखाते हैं। युवाओं को भड़काते थे कि भारत में मुस्लिमों के साथ अन्याय हो रहा है। मिशन के साथ उनके जुड़ने से भारत में फिर से खलीफा राज कायम करने में जल्द सफलता मिल जाएगी, पकड़े जाने के बाद अब उन्हें लग रहा है कि उनका जेहादी सपना चकनाचूर हो गया है। अब जेल में जिंदगी कटेगी, साथ ही अपनी सरजमीं में अब उनके कदम नहीं पड़ेंगे। बता दें कि MP ATS और केंद्रीय खुफिया एजेंसियों के संयुक्त अभियान में रविवार को भोपाल से JMB के चार आतंकियों को गिरफ्तार किया गया था, सोमवार को ATS ने इन्हें कोर्ट में पेश कर 28 मार्च तक के लिए रिमांड पर ले लिया। ATS की पूछताछ में आतंकियों ने खुलासा किया था कि उन्होंने दलाल को 4 हजार रुपए देकर भारत में घुसपैठ की थी, वे 2021 में कोविड के दौरान लगे लॉकडाउन में भारत में दाखिल हुए, ATS ने इनके पास से बड़ी मात्रा में जेहादी साहित्य व लैपटॉप बरामद किए थे। मोबाइल की डेटा निकाल रही ATS आतंकियों के पास से बरामद लैपटॉप , मोबाइल की जांच कर रही है।

डेटा रिकवर के लिए भी काम किए जा रहे, आतंकी इतने एक्सपर्ट हैं कि सुरक्षा एजेंसियों के राडार नहीं आएं इसके लिए तमाम तकनीक अपनाते रहे, वे इंटरनेट वाइस कॉलिंग के जरिए ही फोन पर बात करते थे। ATS इनके आकाओं का पता लगाने में जुटी है, ATS ने इनके खिलाफ UAPA और विदेशी अधिनियम के तहत मामला किया है।

'द कश्मीर फाइल्स' को लेकर कई विवादित बयान आये सामने

नमिता चौहान / एनसीआर समाचार

'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म को लेकर जनता के साथ साथ बीजेपी में भी उत्साह देखा गया है, लेकिन अब इस फिल्म को लेकर कई बड़े चेहरों का विवादित बयान सामने आ रहा है जिसमे यह कहा जा रहा है कि इस फिल्म को सांप्रदायिक दंगों के लिए बनाया गया है। इस फिल्म का एक मात्र उद्देश्य है आम नागरिकों को हिन्दू मुस्लिम के नाम पर आपस में लड़वाना है। पहले तो CM योगी खुद फिल्म देखने सिनेमाघर पहुंचे और उसके बाद उन्होंने यूपी में इस फिल्म को टैक्स फ्री कर दिया। जिसके बाद लोग बीजेपी के समर्थन में नारेबाजी करते दिखे। लोग सिनेमाघरों के अंदर ही मोदी और बीजेपी की जयजयकार करते दिखाई दिए। इतना ही नहीं दिल्ली के डिलाइट सिनेमा घर के बाहर भी लोगो चक्काजाम करके मोदी मोदी चिल्लाते नज़र आये। टैक्स फ्री करने के साथ ही अब भोपाल पुलिसकर्मियों को एक दिन की छुट्टी भी दी गई है ताकि वो पुरे परिवार संग इस फिल्म को देखने जा सकें। कुछ लोगों द्वारा ये भी कहा जा रहा है कि ये फिल्म जानबूझकर सभी को दिखाई जा रही है ताकि सभी को ये पता चल सके कि कश्मिरी पण्डितों पर कितना सितम हुआ था।

पत्नी के छोड़कर जाने पर पति ने जहर पीकर की आत्महत्या

शेखर घाटोळे / एनसीआर समाचार

नागपुर हुडकेश्वर थानांतर्गत एक पति ने पत्नी के छोड़कर जाने पर जहर पीकर आत्महत्या कर ली, इस घटना से परिसर में हड़कंप मचा हुआ है, पुलिस सूत्रों के अनुसार हुड़केश्वर, दौलत नगर परिसर निवासी नीलेश चव्हाण अपने परिवार के साथ रहता था, घर में वृद्ध माता-पिता व दो बच्चे हैं, पत्नी गृहिणी थी, नीलेश पिछले कुछ वर्षों से Tours and Travels का व्यवसाय करता था, उसके साथ में एक दोस्त भी था जो Travels के व्यवसाय में जुड़ा था। दोस्त का घर में आना-जाना लगा रहता था, दोस्त और पत्नी के बीच में दोस्ती हो गई, नीलेश जब भी बाहर जाता तो उसका दोस्त घर पहुंच जाता था. इसकी भनक नीलेश को लगी, जिसको लेकर परिवार में झगड़े शुरू हो गए, नीलेश ने पत्नी को फटकार लगाई। उसके बावजूद वह पीछे नहीं हटी और पति के दोस्त के साथ दोस्ती बरकरार रखी, परिसर में चर्चा है कि दोनों के बीच अफेयर हो गया और यह अफेयर परिवार के लिए मुसीबत बन गई, दो दिन पहले ही पति-पत्नी के बीच जमकर झगड़ा हुआ तो यह मामला थाने पहुंचा, पत्नी और पति को थाने में बुलाया गया और पुलिस ने पत्नी की पुछताछ की तो उसने पति नीलेश के साथ रहने से मना कर दिया, वह दोनों बच्चों को लेकर नीलेश के दोस्त के साथ चली गई। नीलेश इससे आहत हो गया और उसने जहरीली दवा खा ली, दवा खाने के बाद वीडियो कॉलिंग से पत्नी को फोन भी लगाया, लेकिन नीलेश शराब के नशे में होने से पत्नी उसे मजाक समझ बैठी, और कुछ घंटों बाद नीलेश की मौत हो गई, नीलेश के घर में वृद्ध माता-पिता हैं, 20 दिन पहले ही नीलेश के बड़े भाई की दुर्घटना में मौत हो चुकी थी। माता-पिता का नीलेश ही एकमात्र सहारा था अब वो उसके चले जाने से सुधबुध खो चुके हैं, ट्रैवल्स का व्यवसाय करने वाले नीलेश के दोस्तों को इस घटना पर विश्वास नहीं हो रहा है।

स्पा थेरेपी के नाम पे चलाया जा रहा है सेक्स रैकेट

अशोक गलफड़े / एनसीआर समाचार

स्पा थेरेपी आयुर्वेदिक और औषधीय तेलों से शरीर की मालिश करके विश्राम का एक रूप है। हाल के दिनों में स्पा सेंटरों की आड़ में वेश्यावृत्ति और पोर्नोग्राफी की खबरें आती रही हैं। अब इस बात को लेकर भी शंका जताई जा रही है कि कहीं जलगांव में भी स्पा सेंटर का कीट तो नहीं लगा। रिंग रोड स्थित एक स्पा सेंटर के मालिक पर वहां काम कर रही एक विवाहिता के साथ शारीरिक जबरदस्ती करने का आरोप लगाया गया है, जलगाँव में कुछ स्पा सेंटर बिना अनुमति के गुप्त रूप से चल रहे हैं और कुछ खट्टे प्रेमी अपनी संतुष्टि के लिए जगह का अनुभव कर रहे हैं। हालांकि मेट्रो सिटी में स्पा सेंटर के नाम से सेक्स रैकेट की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं, लेकिन जलगांव में स्पा सेंटर के अस्तित्व के बारे में कम ही लोग, खासकर खट्टे प्रेमी, जानते हैं, जलगांव शहर के कई जगहों पर अनधिकृत स्पा सेंटर भी हैं और उनमें से ज्यादातर शहर के मध्य भाग में स्थित हैं। इस बात की जानकारी स्थानीय पुलिस को होने के बावजूद अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है, आज तक कई लोग मानते हैं कि स्पा सेंटर सिर्फ मालिश करने की जगह है। सबसे पहले, स्पा सेंटर शरीर को आराम देने के लिए आयुर्वेदिक तेल की मदद से एक उपचार पद्धति है। लेकिन अब उन्हें एक अलग मोड़ दिया जा रहा है। स्पा सेंटर के नाम से चलाए जा रहे सेक्स रैकेट के स्थान पर वेश्यावृत्ति का बोलबाला है। जलगांव में हालांकि ऐसा कुछ नहीं है, लेकिन कुछ अनाधिकारिक छिपे हुए स्पा में अश्लीलता घटनाए सामने आ राही हैं, एक स्पा सेंटर में प्रवेश करने पर, आपको एक सेट पैकेज और थेरेपी के अनुसार एक कमरे में ले जाया जाता है। ग्राहक को 'यूज एंड थ्रो' प्रकार के अंडरवियर दिये जाते हे और कपड़े उतारने के लिए बोल कर एक रूमाल दिया जाता है। मसाज शुरू होते ही आपको मसाज करने वालों से कुछ ऑफर्स मिलते हैं।

संक्षिप्त समाचार

बनेठी डूडू मेले की शांति व्यवस्था हेतु डीवाईएसपी संध्या यादव ने ली बैठक

दीपक कौशिक / एनसीआर समाचार

बनेठी ऐतिहासिक एवं प्राचीन डूडू मेला 19 मार्च 2022 को भरेगा, जिसके लिए शांति व्यवस्था हेतु आज दिनांक 16 मार्च 2022 को DYSP संध्या यादव ने ग्रामीणों की बैठक ली एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु ग्रामीणों से सहयोग करने की अपील की ग्रामीणों ने भरोसा दिलाया कि पारंपरिक व्यवस्था में किसी प्रकार का कोई व्यवधान नहीं होगा। पुलिस प्रशासन एवं ग्रामीण मिलकर मेले की व्यवस्था को संभालेंगे, ऐतिहासिक तौर पर मेले की व्यवस्था ग्रामीणों के द्वारा संभाली जाती है। आज की बैठक में उपस्थित पूर्वप्रधान विक्रम सिंह तंवर, पूर्व सरपंच सुरेश सिंह तंवर, भूतपूर्व सरपंच उदयवीर सिंह, सरपंच प्रतिनिधि देवी सिंह सहित ग्रामीण मौजूद रहे, मंच संचालन प्रदीप भारद्वाज ने किया।

जनहित ट्रस्ट का हर दिन भलाई के काम को करते देख जुड़ने लगे लोग

रमेश कुमार / एनसीआर समाचार

फतेहाबाद जनहित ट्रस्ट हर दिन भलाई के काम करती आ रही है जिसमे ट्रस्ट निशुल्क सिलाई मशीनें, निशुल्क, हेल्थ कैम्प लगवाती है और साथ ही दवाइयां फ्री वितरित करती है, लड़की की शादी में शगुन के रूप में मदद करती है, गरीब परिवार के बच्चो के लिए कॉपी, किताबे, पैन, पेंसिल, जूते, बैग की सहयता करती है और भी अन्य सहयोग करती है जिसको देख कर तमाम लोग ट्रस्ट में जुड़ रहे है, ट्रस्ट के वाइस चेयरमैन डॉक्टर सुनील भारद्वाज के नेतृत्व में गांव टोली की दर्जनों महिलाए जनहित ट्रस्ट से जुड़ी है, सुनील भारद्वाज ने जनहित ट्रस्ट की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

गोरधपुरा में 99.63 लाख रूपये की पानी की नई पाईप लाईन लगेगी

गजेंद्र कुमार शर्मा / एनसीआर समाचार

लाडपुरा विधानसभा में स्थित कोटड़ी गोरधपुरा क्षेत्र में कई वर्ष पुरानी पानी की पाईप लाईन बिछी हुई है जिसके जगह-जगह से टूटने व गल जाने से ज्यादातर पानी व्यर्थ चला जाता है साथ ही पानी का प्रेशर भी कम आता है। इससे क्षेत्र में पानी की किल्लत बनी रहती है और गर्मियों मे यह एक भीषण समस्या बन जाती है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इसके समाधान हेतु विधायक श्रीमती कल्पना देवी ने मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी को पत्र लिखा जिसके पश्चात जन स्वास्थ्य अभियांत्रकी विभाग द्वारा 99.63 लाख रूपये की स्वीकृती जारी की गई। इससे क्षेत्र में सभी जीर्ण शीर्ण पाईप लाईनों को बदला जायेगा। क्षेत्र में निवास कर रहे लगभग 20,000 - 22,000 लोंगो को इसका फायदा मिलेगा और सभी को पीने के लिए उचित मात्रा में पेयजल प्राप्त होगा।

होलिका दहन की कुछ महत्वपूर्ण बातें

मुकेश हरयानी / एनसीआर समाचार

होलिका दहन से पहले सभी परिवार के सदस्यों को हल्दी का उबटन, सरसों तेल में मिलाकर पूरे बदन पर लगाना चाहिए. फिर सूखने के बाद उसे एक कागज में शरीर से छुड़ाकर जमा कर लेना चाहिए. जिसे होलिका दहन के समय होलिका में डालना चाहिए. ताकि होलिका दहन के साथ ही सभी मलीनता भी भस्म हो जाए. मान्यता है कि ऐसा करने से स्वास्थ्य लाभ मिलता है. तन और मन दोनों से मलिनता का त्याग करने का त्योहार है होली, इसलिए जिन लोगों को मनमुटाव या मनभेद है वह सब नाराजगी होलिका में मानसिक रूप से अर्पित करके भस्म कर देनी चाहिए। इसी तरह उबटन से शरीर का मैल निकाल कर उसे भी होलिका की अग्नि में भस्म कर दिया जाता है, होली के दिन लोग रंगों से सराबोर होते हैं, होली से ठीक एक दिन पहले होलिका दहन होता है, होलिका दहन से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, अगर आप होलिका दहन के दिन कुछ उपायों को प्रयोग करें तो पूरे साल अपने जीवन में खुशहाली और समृद्धि ला सकते है, होली की पूजा करने से महालक्ष्मी प्रसन्न हो जाती हैं।

मारपीट के दो दिन बाद युवक की मौत

रामा शंकर सिंह / एनसीआर समाचार

मारपीट की घटना में 2 दिन बाद युवक की मौत हुई जिससे मृतक के परिजन आक्रोशित हुए, और सुलतानपुर कुड़वार रोड पर मृतक का शव रखकर किया प्रदर्शन, पीड़ित पक्ष को मुलजिम बनाए जाने के मुद्दे पर पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे मृतक के परिजन व स्थानीय नागरिक, सूचना मिलने पर पहुंचे एसडीएम सदर सीपी पाठक व नगर कोतवाल राम आशीष उपाध्याय अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को समझा-बुझाकर शांत करने का किया जा रहा प्रयास।

जिला प्रमुख रमा चोपड़ा ने कोटपुतली क्षेत्र के विभिन्न गांवो के दौरे पर रही

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

बता दे कि आज कोटपूतली क्षेत्र में जिला प्रमुख रमा चोपड़ा ने विभिन्न गांवो के दौरे पर रही, उन्होंने नांगल पंडित पूरा के हासिया वास में आयोजित मेले में हिस्सा लिया इसके उपरांत नांगडीवास स्थित गणेश स्कूल में बच्चों को होली की शुभकामनए प्रेषित की। जहा शंकर कसाना व एडवोकेट मनोज चौधरी के नेतृत्व में जिला प्रमुख का स्वागत किया। इसके उपरांत उन्होंने पेजूका, जाहिदपुरा एवं बसई गांव का दौरा किया। जंहा वे स्थानीय लोगो से मिली एवं उनकी समस्याओं को सुनी तथा उनके निराकरण का भरोसा दिलाया। इस दौरान युवा रिवॉल्यूशन के अध्यक्ष मनोज चौधरी के नेतृत्व में जिला पार्षद अमीचंद कसाना, डेलीगेट अशोक आर्य, जिला पार्षद भोमाराम, जिला पार्षद शिवदान गुर्जर, जिला पार्षद विजय मीना आदि लोग साथ रहे। युवा रिवॉल्यूशन के अध्यक्ष मनोज चौधरी ने जिला प्रमुख चोपड़ा को क्षेत्र में पानी, सड़क व शमशान की चार दिवारी के लिए मांग भी रखी।

सिंधी समाज की परंपरा, स्नेह की मिठाई है घीहर, कराची हलवा से तैयार होता है मीठा समोसा

मुकेश हरयानी / एनसीआर समाचार

सागर अविभाजित भारत के सिंध प्रांत की मिठाइयों की खुशबू आज भी सिंधी समाज में स्नेह का प्रतीक है। होली पर सिंधी परिवारों में घीहर और मीठा समोसा समाज एवं रिश्तेदारों में बांटा जाता है। मुकेश हरयानी ने बताया की सिंधी कॉलोनी में होली के पर्व से 12 दिन पहले ही घीहर एवं मीठा समोसा बनाने की तैयारी शुरू हो जाती है। यह सिलसिला होली के 10 दिन बाद तक चलता है। सिंधी कॉलोनी निवासी मिठाई विक्रेता निर्मल बजाज, बबलू पुरसवानी, मुकेश, मोहन छाबड़ा ने बताया घीहर और मीठा समोसा का होली पर विशेष महत्व होता है। यह सिंधी समाज की प्रमुख मिठाई है। स्वतंत्र भारत में यह मिठाई सिंधी परिवारों के साथ आई। सागर में पिछले 70 सालों से घीहर एवं मीठा समोसा होली पर्व पर सिंधी समाज के हर घर में मिलता है। सिंधी समाज में अपनी ब्याही लड़की को गेहर भेजने की परंपर ह, राजेश मनवानी होली के10 दिन पहले से ही बहन और बेटियों के घर भेजे जाने वाली यह विशेष प्रकार की मिठाई अपने रिश्तेदारों एवं दोस्तों में मिठास घोल रही है। गेहर खाने-खिलाने का दौर रंग-पंचमी तक अनवरत चलता है। इस बार होली पर सिंधी समाज की महिलाओं को मायके से आने वाले गेहर का बेसब्री से इंतजार रहता है। शादी-शुदा महिलाएं अपने मायके से गेहर आते ही आस-पड़ोस में मुंह मीठा कराती है। नया बाजार में खूबामल होटल, राहतगढ़ बस स्टेड के सामने गुरदासमल होटल व सिंधी कॉलोनी में मोहनलाल छाबड़ा इन लोगों की दुकान पर रोजाना 4 से 5 क्वांटल गेहर बनते है। महिने भर पहले से कई लोगों के आर्डर आते हैं। जिसे भेजने का सिलसिला शुरू हो जाता है। कमल हिंदुजा, ज्ञानचंद कुकरेजा, सुरेश मोहनानी, अनिल जसवानी एवं अनिल सुंदरानी, राजेश मनवानी ने बताया कि जब तक अपनी बहन व बेटियों के घर गेहर पहुंचने की जानकारी नहीं मिल जाती तब-तक हम लोग स्वयं भी गेहर का स्वाद नहीं चखते। श्रीमती रूकमणी, आशा निरंकारी, श्रीमती सपना ने बताया कि सिवनी, कटनी, बुरहानपुर, जबलपुर, नागपुर, सतना, इटारसी, मद्रास, मुंबई, बनारस में ब्याही अपनी बेटी के लिए गेहर भेंजती हैं। समाज के वयोवृद्ध किशनचंद चंदानी, सिंधी पंचायत अध्यक्ष भीष्म राजपूत, मोहनलाल सडानी, झामनदास जयसिंघानी ने बताया कि सिंध प्रांत में नई फसल आने पर किसान गेहर से मुंह मीठा कराकर अपनी खुशी का इजहार करते थे। भारत आने के बाद सिंधी समाज में होली पर गेहर खाने-खिलाने की यह परंपरा आज भी जीवंत स्वरूप में दिखाई देती है। राजेश मनवानी ने बताया कि वह अपने मित्रों के साथ सिंधी समाज की इस विशेष मिठाई को बांटकर आनंद की अनुभूति को प्राप्त करते है। उनके परममित्र डॉ.सुरेशचनद्र रावत, कमल पाहवा, ब्रज किशोर पुरोहित, चम्पक भाई, समाजसेवी नारायण जैन बताते है कि सिंधी समाज का यह गेहर बांटने का सिलसिला हम सबको मिल-जुलकर रहने की नई शिक्षा देता है। घीहर (मैदा का घोल बनाकर डालडा में जलेबी की तरह बनाया जाता है।

खाटू मेले से वापस लौटने पर स्थानीय संघ द्वारा किया सम्मानखाटू मेले से वापस लौटने पर स्थानीय संघ द्वारा किया सम्मान

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड स्थानीय संघ कोटपूतली के रोवर्स वह यूनिट लीडर की टीम टीम खाटू मेले में अपनी सेवाएं प्रदान करने के बाद वापस कोटपुतली लौट आई, सचिव हंसराज यादव ने बताया कि स्काउट रोवर्स के 21 टीम मेंबर्स खाटू मेले में 9 दिनों से अपनी सेवाएं दे रहे थे। उनके वापस लौटने पर स्काउट प्रधान एडवोकेट मनोज चौधरी खुद उन्हे रिसीव करने पहुंचे और उनकी सेवाओं एवं वापसी पर उनका भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर ACBEO दयाराम, RP राजेंद्र सैनी, समाजसेवी गिरधारी लाल यादव, सचिव हंसराज यादव, पप्पूराम यादव आदि लोग उपस्थित रहे। सीताराम गुप्ता की अगुवाई में खाटू में सेवाए दे रहे सभी रोवर्स कृष्णकांत, अजय, देवराज कुमावत, मनीष सैनी, गोविंद आदि, को माला पहनाकर स्वागत किया गया। गौरतलब की जिला कलेक्टर सीकर, एवं मेला मजिस्ट्रेट द्वारा कोटपुतली स्काउट टीम की प्रशंशा की गई, सेवाओं के लिए मेला कमेटी ने सभी रोवर्स को प्रतीक चिन्ह, प्रमाण पत्र देकर विदा किया, स्काउट के सदस्यों को चांदी का मुकुट रास्ते पर पड़ा मिला जिसे उन्होंने ईमानदारी का परिचय देते हुए लौटाया जिसके लिए उन्हें प्रधान चौधरी द्वारा सम्मानित किया। उन्होंने कहा बिना स्काउट की मदद के इतना बड़ा मेला का आयोजन व व्यवस्था संभव नहीं हो सकती थी, प्रधान चौधरी ने रोवर्स का उत्साह वर्धन किया व उनकी हौसला अफजाई की, वहीं स्थानीय संघ कार्यकारिणी व समस्त टीम ने बधाई पेश की है।

जिलाधिकारी व पुलिस ने मदिरा की दुकान का किया गया निरीक्षण

रामा शंकर सिंह / एनसीआर समाचार

सुलतानपुर 16 मार्च / जिलाधिकारी रवीश गुप्ता एवं पुलिस उपमहानिरीक्षक डॉ0 विपिन कुमार मिश्र द्वारा बुधवार को होली पर्व के दृष्टिगत नगर क्षेत्र में सरकारी शराब के ठेकों / दुकानों का सघन निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जनपद में संचालित बाघमण्डी चौराहा स्थित देशी, बीयर की दुकानों / ठेकों पर स्टॉक का निरीक्षण कर सभी के लाईसेंस एवं रेटलिस्ट को चैक किया गया। साथ ही साथ दुकानो में लगे CCTV कैमरो की जाँच की गयी तथा इसके अतिरिक्त मुख्य रूप से यह भी चेक किया गया कि किसी शराब की दुकान /ठेके पर किसी प्रकार की कोई अवैध शराब अथवा कोई अपमिश्रित शराब आदि का विक्रय तो नही किया जा रहा है। सभी सेल्समैनों को सचेत किया गया कि अपने ठेको / दुकानों पर किसी प्रकार की कोई अपमिश्रित शराब की बिक्री न की जाए जिससे आमजन को कोई क्षति पंहुचे । अगर कोई सेल्समेन इस तरह के कृत्य में संलिप्त पाया जाता है तो उसके विरूद्ध वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।

हारों पर कानून व्यवस्था और जनसुविधाएं सुदृढ़ रहेंगी, शांति समिति की बैठक सम्पन्न

देवेन्द्र कुमार जैन / एनसीआर समाचार

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट भोपाल श्री अविनाश लवानिया ने शांति समिति के सदस्यों और जनप्रतिनिधियों को आश्वस्त किया है कि आगामी माहों में होने वाले पर्वों के दौरान कानून व्यवस्था और सभी नागरिक सुविधाएं सुदृढ़ रहेंगी। उन्होंने सदस्यों से आग्रह किया कि वे जिला प्रशासन का सहयोग करें और शांति-सद् भाव के साथ पर्व मनाएं। उन्होंने कहा कि होलिका दहन में लकड़ी का उपयोग प्रतीकात्मक रूप से किया जाये, होलिका दहन में गौकाष्ठ का अधिक से अधिक उपयोग करें, कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बुधवार को सम्पन्न हुई शांति समिति की बैठक में एसीपी श्री सचिन अतुलकर, आयुक्त नगर निगम श्री KVS कोलसानी सहित शांति समिति के सदस्य, जनप्रतिनिधि और जिला तथा पुलिस प्रशासन के अधिकारी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि आगामी माहों में होली, शब ए बारात, रंगपंचमी, रमजान, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, चैतीचांद, रामनवमी, महावीर जयंती, डॉ. अम्बेडकर जयंती, बैसाखी, गुड फ्राइडे, परशुराम जयंती, ईद, बुद्धपूर्णिमा के पर्वों के दृष्टिगत कानून व्यवस्था और जनसुविधाओं की व्यवस्था के संबंध में शांति समिति की बैठक में चर्चा की गई, कलेक्टर श्री लवानिया ने कहा कि त्यौहारों के दौरान बेहतर से बेहतर व्यवस्थायें करने के लिए पुलिस और प्रशासन प्रतिबद्ध है। साथ ही उन्होंने कहा कि सदस्यों द्वारा दिए गए सुझावों पर प्रशासन अमल करेगा, साफ-सफाई, जल प्रदाय, बिजली और अन्य व्यवस्थाओं से जुड़े कार्यों के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंप दी गई हैं। होली दहन के लिए चिन्हित स्थानों पर विक्रय हेतु शासकीय दर पर गौकाष्ठ उपलब्ध कराया गया है। उन्होंने बताया कि न्यू मार्केट, रोशनपुरा, लालघाटी चौराहा, ज्योति टॉकीज, माता मंदिर, बोर्ड ऑफिस चौराहा,10 नम्बर मार्केट,अपेक्स बैंक चौराहा, हमीदिया रोड, पीरगेट, पॉलिटेक्निक चौराहे पर गौकाष्ठ का विक्रय किया जा रहा है, एसीपी श्री सचिन अतुलकर ने आने वाले त्यौहारों के दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने की बात कही।

, उन्होंने बताया कि होली पर जोर जबरदस्ती से चंदा वसूली करने और पेड़ काटने वालों की शिकायत पर उनके खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। शिकायत उनको सीधे अथवा डायल 100 पर भी की जा सकती है, असामाजिक तत्वों पर पुलिस कड़ी नजर रखेगी, बैठक में शांति समिति के सदस्यों ने भी अनेक सुझाव दिए।

मंत्री मंडल चिंतन बैठक 26-27 को पचमढ़ी में मंत्री-मंडल उप समिति ने की बैठक की तैयारियों की समीक्षा

मुकेश हरयानी / एनसीआर समाचार

भोपाल मंत्री-मंडल चिंतन बैठक की सभी तैयारियाँ समय पर सुनिश्चित करें। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने 26 और 27 मार्च को पचमढ़ी में होने वाली चिंतन बैठक की तैयारियों की समीक्षा की। चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग एवं पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण (स्वतंत्र प्रभार) तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री रामखेलावन पटेल ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। मंत्री श्री सिंह ने बताया कि चिंतन बैठक में शामिल होने के लिये 25 मार्च की शाम सभी मंत्री, बस से पचमढ़ी के लिए रवाना होंगे। चिंतन बैठक 26 मार्च को सुबह 10 बजे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के संबोधन के साथ शुरू होगी। चिंतन बैठक में दोनों दिन विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं एवं विषयों पर सत्र होंगे। सत्र-समापन के बाद मंत्रीगण बस से ही भोपाल वापस आयेंगे। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने बैठक की तैयारियों के लिए उप समिति गठित की है। समिति में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेन्द्र सिंह, चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग और पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण (स्वतंत्र प्रभार) तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री रामखेलावन पटेल शामिल हैं। अपर मुख्य सचिव गृह डॉ.राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री विनोद कुमार, प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति शिवशेखर शुक्ला और प्रमुख सचिव लोक निर्माण नीरज मण्डलोई उपस्थित थे।

शाजापुर जिले में आग का कहर

राजेश मेवाड़ा / एनसीआर समाचार

एमपी के शाजापुर जिले की शुजालपुर तहसील के ग्राम पंचायत इख्तियार पुर मैं चतुर मालवीय के गेहूं जल गए बताया जा रहा है की लाइनमैन की लापरवाही से ट्राली में आग लगी और रासन के कई कुंटल के हो गए खाक। यहाँ आए दिन ऐसी घटना होती रहती है अभी 2 दिन पहले ही कालापीपल तहसील के ग्राम खेड़ी में हुआ, जो कि ग्राम पंचायत रसूलपुर से जुड़ता है इस घटना में भी लाइनमैन की लापरवाही को देखते हुए कई कुंटल अनाज, गेहूं के ट्राली में आग लग गई इसमें ट्राली भी जल गई, कई जगह तारझूल रहे हैं, जमीन पर कई जानवर मर चुके है, फसल नष्ट हो चुकी है, इसका जिम्मेदार कौन है उसको देखते हुए शासन प्रशासन को ध्यान देना चाहिए। किसानों की फसल बिल्कुल ख़तम होने के कगार पर है तो लाइट की जो तार सही किया जाए कि यह सब फॉल्ट ना हो यहाँ आए दिन लाइनमैन घूमते-फिरते हैं और चले जाते हैं कोई इस पर ध्यान नहीं दे रहा यहां के माननीय इंदर सिंह जी परमार राज्य शिक्षा मंत्री के विधानसभा में आता है इस गांव में ऐसे लोगो पर सख्त कार्रवाई की जाए और यहाँ के लोगो की सुरक्षा के लिए जल्द की कोई शख्त कार्यवाही की जाए।

भामाशाह वार्षिकत्सव पर शिक्षक और भामाशाहों ने दिया योगदान

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

पावटा के निकितवर्ती गांव दातिल के Govt Senior Secondary School में वार्षिक उत्सव, भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सरपंच पति महेश जी सांखला व अध्यक्षता श्री डूंगाराम जी कुमावत सेवानिवृत्त शिक्षाविद् ने स्थानीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकगणों ने विद्यालय विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया।

1. श्री सुभाष चन्द सैनी (व.अ) एक्साइड बैटरी मय इन्वर्टर, 2. श्री संतराम वर्मा (व्या.) एचपी प्रिंटर 3. श्री ओमप्रकाश शर्मा (अ) सपोन प्रिंटर 4. श्री कैलाश चंद दौराता (आर्मी) 48 रएल इ डी सोनी कंपनी 5. श्रीमती गायत्री जी शर्मा (अ .) 21000 नगद जल व्यवस्था के लिए। इस कार्यक्रम में SBI शाखा प्रबंधक श्री नरसी लाल जी सैनी व श्री सुरेन्द्र जी स्वामी CBEO प्रतिनिधि, पावटा विशिष्ट अतिथि रहे। अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य श्री राजु मीणा (पं.स. सदस्य) , श्री ओमप्रकाश सैनी (उपसरपंच) , श्री प्रहलाद सैनी , श्री सेडूराम सैनी (से.उ.कोषाधिकारी) , अशोक सैनी , अशोक सांखला , राजू वर्मा , सुभाष सांखला ,, रामावतार स्वामी , बोदूराम (सैनी टेंट हाउस) , देशराज सैनी (RO वाले) , कैलाश चंद गुर्जर (पूर्व व्या .) सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

परम्परागत उल्लास एवं भाईचारे के साथ मनाएं रंगों का त्यौहार होली

मुकेश हरयानी / एनसीआर समाचार

सागर हर्षोल्लास एवं भाईचारे के साथ होली एवं रंग पंचमी का त्यौहार मनाए, साथ ही केमिकल युक्त रंग एवं गुलाल का प्रयोग न करें, उक्त निर्देश अपर कलेक्टर श्री अखिलेश जैन ने जिला स्तर की शांति समिति की बैठक में दिए, इस अवसर पर जिला शांति समिति के सदस्य अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री विक्रम सिंह कुशवाहा सहित अन्य अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक मौजूद थे। समिति की बैठक में अपर कलेक्टर श्री जैन ने महाशिवरात्रि एवं अन्य त्योहारों को शांतिपूर्ण बनाए जाने पर सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कहा कि कलेक्टर श्री दीपक आर्य एवं पुलिस अधीक्षक श्री तरुण नायक आपके बीच इस कारण उपस्थित नहीं हो पाए हैं कि शहर में एक बड़ी आगजनी की घटना हुई है वह लगातार 6 घंटे से अधिक आग बुझाने के लिए प्रयासरत हैं। समिति की बैठक में चर्चा के उपरांत निर्णय लिए की केमिकल युक्त रंग गुलाल का प्रयोग न करें एवं नशे में गाड़ी न चलाएं, वंही अपर कलेक्टर श्री अखिलेश जैन ने समस्त लोगों से अपील की होलिका दहन विद्युत तारों के नीचे न करें और यह भी ध्यान रखें के होलिका दहन के आजू-बाजू कोई ऐसी वस्तु तो नहीं है जिससे किसी तरह का कोई घटना घट सके। उन्होंने कहां की होलिका दहन रात्रि कालीन 10:00 बजे के पूर्व समस्त लोग कर ले और होली एवं रंग पंचमी के दिन किसी भी व्यक्ति को जबरदस्ती रंग गुलाल न लगाएं । अपर कलेक्टर श्री जैन ने कहां की होलिका दहन के लिए जबरदस्ती चंदा वसूली न की जाए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री विक्रम सिंह कुशवाहा ने समस्त लोगों से अपील करी कि नशे का सेवन कर गाड़ी न चलाएं और न ही नशे का सेवन करें, उन्होंने कहा कि इसी प्रकार अनेक लोग पिकनिक मनाने जाते हैं। पिकनिक स्पॉट पर भी पूरी सावधानी के साथ पिकनिक मनाए उन्होंने कहा कि समस्त पिकनिक स्थानों पर पुलिस बल भी तैनात किया जाएगा। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री कुशवाहा ने कहा कि समस्त क्षेत्रों में पुलिस की अतिरिक्त व्यवस्था की जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

CRO टीम के लोगो ने की श्रद्धालुओं की मदद

सतीश कुमार / एनसीआर समाचार

तीश कुमार, रवि कुमार, कृष्ण कुमार, विजय कुमार, सभी CRO टीम ने महेंद्रगढ़ के गांव अटाली से श्री खाटू श्याम जी धाम तक श्याम भक्तों की सेवा की जिसमें श्याम भक्तों को पानी की बोतल, मेडिकल का सामान व फल आदि बांटे गए, हमारी टीम आगे भी ऐसे ही पब्लिक की सेवा में कार्य करती रहेगी। हमारी टीम ने वहां पर जाकर के श्याम भक्तों की गाडीयो को जाम से निकलवाने में पुलिस प्रशासन का सहयोग किया और छोटे बच्चों को फल व पानी आदि का सहयोग किया, अगर किसी श्याम भगत के पैरों में छाले पड़े तो हमारी टीम ने उसका पूरा सहयोग किया उसकी पूरी मदद की और उसकी दवाई पट्टी की किसी को भी किसी तरह की परेशानी नहीं होने दिया और हम सभी आगे भी ऐसे ही कार्य करते रहेंगे।

छात्र ने बनाया विद्यालय का मॉडल

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

नारेहड़ा के विवेकानंद आदर्श विद्यालय के पूर्व छात्र ने विद्यालय का मॉडल बनाकर विद्यालय को भेंट किया। छात्र के हुनर को देख सब दंग रह गए। वेस्ट मैटेरियल से बनाए गए माडल की सभी ने सराहना की। इस दौरान छात्र विकास जांगिड़ ने बताया कि मॉडल को बनाने में कॉर्ड बोर्ड व कलर मैटेरियल का प्रयोग किया गया है। विद्यालय के निदेशक रतन लाल सैनी ने छात्र के द्वारा बनाए गए माडल की सराहना करते हुए माला, साफा पहनाकर व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजय जोशी ने कहा कि समाज में ऐसे अनेक छात्र हैं। जिनकी कला छिपी हुई है, इन विद्यार्थियों को तराशने की जरूरत है, जिससे ये अपने गांव का नाम रोशन कर सके। इस मौके पर विजय कुमार शर्मा सहित विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

थाना पनियाला जयपुर ग्रामीण के लोकल एवं स्पेशल एक्ट अभियान के दौरान आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

कोटपूतली के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विद्या प्रकाश एवं उपाधीक्षक डॉक्टर संध्या यादव कोटपूतली जिला जयपुर ग्रामीण के निर्देशन में थानाधिकारी पनियाला हितेश कुमार शर्मा द्वारा एक टीम का गठन किया गया। पुलिस को मुखबिर द्वारा सूचना मिली कि एक व्यक्ति हथियार लेकर घूम रहा है पुलिस टीम ने तुरंत प्रभाव से कार्रवाई करते हुए मुखबिर के बताए हुए ठिकाने पर पुलिस टीम पहुंची लिली होटल पनियाला के पास एक खेत में एक आदमी खड़ा हुआ था पुलिस को देखकर वह भागने लगा लेकिन पुलिस टीम ने उसे पकड़ लिया पुलिस ने तुरंत उसकी चेकिंग की चेकिंग के दौरान देसी कट्टा सहित 3 जिंदा कारतूस मिले मुलजिम प्रकाश गुर्जर पुत्र अडीसाल गुर्जर उम्र 35 को गिरफ्तार किया गया।

सरस्वती पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल चुरी में मनाया वार्षिकोत्सव

दीपक कौशिक / एनसीआर समाचार

सरस्वती पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल चुरी में कक्षा 12वीं कशा का विदाई समारोह एवम वार्षिक उत्सव मनाया गया, इस कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थाप्रधान निहालसिंह यादव एवम श्यामसिंह तंवर के द्वारा मां शारदे के सामने दीप प्रज्वलन कर किया गया, विद्यार्थियों ने डीजे की धुन पर प्रस्तुति भी दी, विद्यालय स्टाफ ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। इस मौके पर सुरेंद्र सिंह, लीलाराम यादव, हवासिंह यादव, अशोक यादव, कमलेश सिंह, राजेन्द्र प्रसाद, अमित कुमार, दीपेंद्र सिंह, ममता यादव आदि उपस्थित रहे।

छोटा नागपुरिया तेली उत्थान समाज का होली मिलन समारोह

नवनीत पाण्डेय / एनसीआर समाचार

छोटा नागपुरिया तेली उत्थान समाज का होली मिलन समारोह साहू चौक, पुनदाग के संगी मिलन बैंक्वेट हॉल में किया गया, जिसमें तेली समाज के अध्यक्ष धनी नाथ साहू, विकेश साहू, विशाल साहू, अनिल साहू, राकेश साहू ईश्वर शंकर विद्यार्थी, गौरी शंकर विद्यार्थी आदि लोग मौजूद थे। इस मौके पर तेली समाज के अध्यक्ष धनी नाथ साहू ने सरकार से 1932 खतियान का भी मांग किया, उन्होंने कहा खतियान आधारित स्थानीय नीति नियोजन नीति उद्योग नीति और विस्थापन नीति जल्द से जल्द सरकार परिभाषित करें नहीं तो तेली समाज सरकार का विरोध करेगी।

फसल बीमा राशि मिलने पर दयाराम गुर्जर ने सरकार को कहा धन्यवाद

ब्रज कुमार राठौर / एनसीआर समाचार

दयाराम गुर्जर बीमा राशि खुश हुए दयाराम गुर्जर को खरीफ सीजन में सोयाबीन की फसल को हुए नुकसान के बदले pmFBy अंतर्गत 54 हजार रुपए की राशि प्राप्त हुई है। दयाराम ने 2,70 हेक्टर क्षेत्र में सोयाबीन की फसल बोई थी जो प्राकृतिक प्रकोप के कारण नष्ट हो गई थी फसल बीमा राशि मिलने पर दयाराम गुर्जर ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को धन्यवाद किया।

2016 से पुलिस को चकमा देने वाले अमजद को पुलिस ने किया गिरफ्तार

तोप सिंह / एनसीआर समाचार

मंदसौर। 2016 से मंदसौर पुलिस ही नहीं बल्कि उज्जैन संभाग की पुलिस को चकमा दे रहा मादक पदार्थों का कुख्यात तस्कर अमजद लाला आखिरकार मंदसौर पुलिस की गिरफ्त में आ ही गया। अमजद लाला उज्जैन संभाग का मोस्ट वांटेड अपराधी था जिसे मंदसौर पुलिस कप्तान श्री अनुराग सुजानिया के मार्गदर्शन में थाना नई आबादी TI जितेंद्र सिंह सिसोदिया की टिम ने धर दबोचा। यह बहुत बड़ी सफलता मंदसौर पुलिस को मिली है और SP श्री अनुराग सुजानिया ने इसका पूरा श्रेय अमजद को पकड़ने के लिए बनाई गई टिम को दिया है। प्रेसवार्ता में एसपी श्री अनुराग सुजानिया ने बताया की अमजद को पकड़ने गई सीतामऊ थाने की टिम पर अमजद ने 23/11/2020 को पिस्टल से फायर किया था,जिसमें TI अमित सोनी के कान को छूती हुई गोली निकल गई थी। इसके बाद अमजद ने गुजरात के हिम्मत नगर के पास साबरकांठा में फरारी काटी। फरारी कटवाने में चुन्नु लाला के रिश्तेदार नवाज ने पूरी मदद की थी। कई बार अमजद को पकड़ने के लिए दबिश दी गई लेकिन हर बार पुलिस को चकमा देने में सफल रहा। इस बार पुलिस को मुखबिर से सुचना मिली की अमजद मंदसौर में कहीं मादक पदार्थ अल्फाझोलेम सप्लाई करने आ रहा है। इस पर नई आबादी TI जितेंद्र सिंह सिसोदिया ने जाल बिछाया जिसमें अमजद ऐसा उलझा की अब कई सालों तक बाहर आना मुश्किल है, फर्जी आधार कार्ड बनाकर काट रहा था फरारी अमजद लाला फरारी के

दौरान कई शहरों व जंगल की खाक छानता रहा। इसके बाद भीलवाडा जाकर फर्जी आधार कार्ड बनाया जिसमें अपना नाम शुरवीर सिंह राठौर रखा। इसी नाम से किराए का मकान लेकर लम्बे समय से फरारी काट रहा था, मंदसौर में भी है अमजद के साथी और महिला मित्र एक दर्जन से अधिक अपराधों में लिप्त कुख्यात अपराधी अमजद लाला के कुछ साथी मंदसौर में भी है। इतना ही नहीं अमजद की महिला मित्र भी मंदसौर में निवास करती है। शादीशुदा अमजद की अविवाहित महिला मित्र लम्बे समय से अमजद के संपर्क में है। अमजद के बारे में बताया जाता है की ये रंगीन मिजाज और महिला मित्र बनाने का आदि है। अमजद के ज्यादातर संबंध अंतर्जातीय है। अपनी अवैध कमाई से अय्याशी करना इसकी आदत है। वहीं आपको बता दे की अमजद लाला सिंथेटिक ड्रग का बड़ा तस्कर है। पूर्व में भी इस पर एमडीएमए का केस दर्ज है। फरारी के दौरान भी ये सिंथेटिक ड्रग की तस्करी कर रहा था। सिंथेटिक ड्रग ये कहां से लाता था अगर मंदसौर पुलिस उस जगह तक पहुंच जाए तो बहुत बड़ी सफलता होगी।

यातायात प्रबंधन मित्र योजना से जुड़कर 260 जिम्मेदार नागरिक दे रहे अपनी सेवाएं

देवराम ठाकुर / एनसीआर समाचार

यातायात प्रबंधन पुलिस, महानगर इंदौर की 'यातायात प्रबंधन मित्र' योजना से जुड़कर श्री शुभम मंडलोई द्वारा भवरकुआँ चौराहा पर अपार उर्जा एंव समर्पण भाव से यातायात प्रबंधन मे सहयोग कर शहर के यातायात को सुगम, सुरक्षित, सुखद बनाने मे अपनी सराहनीय सहभागिता प्रदान की जा रही है। श्री शुभम मंडलोई की यातायात प्रबंधन के क्षेत्र सराहनीय कार्य के लिये पुलिस उपायुक्त, यातायात प्रबंधन, महानगर इंदौर श्री महेश चंद जैन के द्वारा श्री शुभम मंडलोई को 'यातायात प्रबंधन मित्र ऑफ द वीक' (07 मार्च से 13 मार्च 2022) के लिये घोषित किया गया। यातायात प्रबंधन पुलिस की टीम द्वारा भंवरकुआं चौराहा पर श्री शुभम मंडलोई को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया किया गया, यातायात प्रबंधन मित्र योजना से 260 जिम्मेदार नागरिक जुड़कर शहर के विभिन्न चौराहों पर यातायात प्रबंधन में अपनी अमूल्य सहभागिता प्रदान कर रहे है। कोई भी इच्छुक नागरिक Citizen COP एप्लीकेशन के यातायात प्रबंधन मित्र फीचर में दिए गए फॉर्म को भरकर यातायात प्रबंधन मित्र योजना।

सरपंच संघ राजस्थान की बैठक जयपुर में संपन्न

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

सरपंच संघ राजस्थान कोर कमेटी की बैठक जयपुर में प्रदेश अध्यक्ष बंशीधर गढ़वाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई, इसमें 22 मार्च को विधानसभा या मुख्यमंत्री आवास को घेरने के लिए ज्यादा से ज्यादा सरपंचों को जयपुर पहुंचने का आह्वान किया गया। सरपंच संघ राजस्थान के प्रदेश प्रवक्ता जयराम पलसानिया रफीक पठान शारदा मेहता ने बताया कि इस बैठक में प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के साथ-साथ जिला अध्यक्षों ने हिस्सा लिया बैठक में 22 मार्च को विधानसभा या मुख्यमंत्री आवास के घेराव को लेकर चर्चा की गई, घेराव को सफल बनाने के लिए जिला व प्रभारी नियुक्त किए गए,19 मार्च को संभाग व जिलों में जाकर सरपंचों की मीटिंग लेने का फैसला किया लिया गया। 20 मार्च को सरपंच संघ के सभी ब्लॉक अध्यक्ष अपने ब्लॉक के सरपंचों की बैठक लेंगे, राजस्थान के सभी सरपंच विगत 1 वर्ष से अपने हक व अधिकार के लिए आंदोलन कर रहे हैं दो बार राज्य सरकार व अधिकारियों के साथ सरपंच संघ का लिखित में समझौता होने के बावजूद अभी तक किसी तरह का सकारात्मक परिणाम नहीं आने से सभी सरपंचों ने जयपुर कूच का आह्वान किया है बैठक में प्रदेश अध्यक्ष बंशीधर गढ़वाल संरक्षक भंवरलाल जानू मुख्य महामंत्री शक्ति सिंह, रावत प्रदेश प्रवक्ता, रफीक पठान, जयराम पलसानिया, शारदा मेहता, प्रदेश उपाध्यक्ष, राम प्रसाद बेरवा, गोपाल शर्मा, नेमी चंद मीणा, शिव जीराम कुर्डिया, सरपंच संघ के जिलाध्यक्ष मेहर सिंह धनकड़, जयपुर अर्जुन सिंह, गौड़ झालावाड़, हनुमान झाझडा सीकर लखन मीणा, बारां हजारी लाल, मीणा दोसा, गणेश साहू, चित्तौड़ लीलाराम, प्रकाश भाकर, राजपाल सैनी, झुंझुनू विक्रम, नवाब अली, सरदार शहर, चंद्रप्रकाश करौली, लक्ष्मी कवर सहित कई सरपंच उपस्थित थे।

स्टेशन बजरिया पुलिस ने अवैध 49 गैस सिलेण्डर व गैस रिफिलंग मशीन सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

देवेन्द्र कुमार जैन / एनसीआर समाचार

घटनाक्रम इस प्रकार से है 15 मार्च को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि शंकर नगर थाना स्टेशन बजरिया में एक व्यक्ति अपने घर में अवैध रूप से कई छोटे बडे गैस सिलेण्डर रखकर रहवासी क्षेत्र में गैस रिफ्लिंग का काम कर रहा है। सूचना पर वरिष्ठ अधिकारियो के दिशा निर्देशक में टीम गठित कर बताये स्थान शंकर नगर में म.न.19,20 पहुँचकर सर्च वारंट दिखाकर घर मे प्रवेश किया गया मकान के कमरे में एक व्यक्ति घरेलु सिलेंडर से कमर्शियल सिलेंडर में गैस रिफलिंग करते हुए मिला जिससे नाम पता पूछा जिसने अपना नाम विनोद मालवीय पिता स्व.फूलचन्द्र मालवीय उम्र 46 वर्ष निवास म.न. 19,20 शंकर नगर सेमरा थाना स्टेशन बजरिया भोपाल का रहना बताया। जिससे घरेलु सिलेण्डर से कमर्शियल गैस सिलेण्डर में गैस डालने के संबंध में वैध दस्तावेज चाहे गये जो नही होना बताया आरोपी के कब्जे से घर के कमरे से भारी मात्रा में कमर्शियल 20 सिलेंडर तथा घरेलु उपयोग के 29 सिलेंडर कुल 49 गैस सिलेण्डर, इलेक्ट्रोनिक तौल कांटा, दो गैस रिफिलिंग मशीन मिलने पर मौके पर जप्त किये गये आरोपी द्वारा रहवासी क्षेत्र में ज्वलनशील पदार्थ अधिक मात्रा में अवैध रूप से अपने घर में रख कर गैस रिफलिंग करते हुए पाया गया, जिससे जन सामान्य के जीवन के लिये संकट उत्पन्न होने की पूर्ण संभावना होने से आरोपी का कृत्य धारा 3/7 आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955, 285 भादवि के तहत दण्डनीय पाया जाने से अपराध धारा सदर का कायम कर विवेचना में लिया गया।

न्याय स्वयंसेवक अरविंद कुमार रतूड़ी राष्ट्रीय लोक अदालत में विशेष पेनल मेंम्बर जज बने

शेखर घाटोळे / एनसीआर समाचार

जिला विधी सेवा प्राधिकरण न्यायालय न्याय भवन नागपुर में युवा समाजसेवी और विधी सेवा प्राधिकरण न्याय स्वयंसेवक (PLV) अरविंद कुमार रतूड़ी राष्ट्रीय लोक अदालत में विशेष पेनल मेंम्बर जज बने, जज बनकर अपनी संवैधानिक कानूनी जिम्मेदारी और न्यायिक व्यवस्था का दायित्व बखूबी निभाया। राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिकरण के आदेशानुसार और उच्चतम न्यायालय मुम्बई एवं उसकी सभी खंडपीठों की निगरानी में सभी जिला व तालुका न्यायालय एवं न्याय प्राधिकरण में आपसी सहमति से वाद-विवाद निपटाने हेतु यह संवैधानिक अदालती व्यवस्था की गई है। पेनल मेंम्बर जज अरविंद कुमार रतूड़ी के अनुसार हमारे देश की लोकतांत्रिक खूबसूरती इसके पवित्र ग्रंथ संविधान और कानूनी न्याय व्यवस्था में बसती है, और लोग अदालतों में न्याय की देवी पर अटूट विश्वास जताते हुए कानून, न्याय व्यवस्था एवं न्यायपालिका पर विश्वास जताते है और जजों द्वारा दिए गए फैसलों पर परिपूर्ण रूप से संतुष्ट होते है। इसलिए आज राष्ट्रीय लोक अदालत न्यायालय में वादी-प्रतिवादी दोनों का मामला खासकर बैंकिंग से संबंधित आपसी सहयोग, समर्थन, रजामंदी और दोनों पक्षों की राजी खुशी से संवैधानिक तरीके से जजों की मौजूदगी में न्याय पाते हुए बिना वाद-विवाद के समाप्त हो गया। पैनल की मुख्य जज प्रमुख न्यायाधीश पारिवारिक न्यायालय से श्रीमती भावना ठाकर मेंम्बर जज अधिवक्ता कुमारी यास्मीन शेख सामाजिक कार्यकर्ता और पेनल मेंम्बर जज अरविंद कुमार रतूड़ी ने अपना कानूनी और संविधानिक दायित्व बखूबी बेहतरीन तरीके से निभाया और रतूड़ी ने अपनी पेनल मेंम्बर जज की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देने के लिए राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिकरण दिल्ली, उच्चतम न्यायालय मुम्बई, जिला विधी सेवा प्राधिकरण नागपुर के सचिव व न्यायाधीश ए.के. देशमुख, न्यायालय के सभी न्यायाधीशों तथा सभी पेनल के मेंम्बर जजों, सदस्यों अधिकारियों, कर्मचारियों, सभी सहयोगी पीएलवी न्याय स्वयं सेवकों का आभार व्यक्त किया है।

आम आदमी की टीम आज गांव महलम की औषधालय का निरीक्षण करने पहुंची

संजीव सिंह / एनसीआर समाचार

फिरोजपुर ग्रामीण क्षेत्र के ग्राम महलम से आम आदमी की टीम आज गांव महलम की औषधालय का निरीक्षण करने पहुंची, उन्होंने वहां के डॉक्टर के पूरे स्टाफ से बात की। प्रभारी महोदया ने उन्हें डिस्पेंसरी की समस्या से अवगत कराया। डिस्पेंसरी का भवन पुराना और जर्जर है, और बैठने के लिए कुर्सी नहीं है। हम विधायक रजनीश दहिया से अनुरोध करते हैं कि महलम डिस्पेंसरी को नए भवन के निर्माण के लिए अनुदान दें, महलम की पूरी आम आदमी टीम आपके बहुत आभारी होंगे। एडवोकेट जरनैल सिंह, एडवोकेट मंजीत सिंह, महलम सुखा घरू विपन कुमार, दिलजीत सिंह, सऊद गुरचरण सिंह, जेलू गुरबख्श सिंह, माना कश्मीर सिंह, बाबा लाडा शेर सिंह, मौजूद रहे।

RE-2 स्कीम नंबर 140 से नायता मुंडला RTO तक निर्माण किये जा रहे रोड का निरीक्षण किया गया

देवराम ठाकुर / एनसीआर समाचार

आयुक्त सुश्री प्रतिभा पाल द्वारा RE-2 स्कीम नंबर 140 से नायता मुंडला RTO तक निर्माण किये जा रहे रोड का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त श्री अभय राजनगांवक, नगर शिल्पज्ञ श्री अशोक राठौर, सहायक मंत्री श्री नरेश जायसवाल, श्री पराग अग्रवाल, कंसलटेंट व कार्य कर रही एजेंसी के प्रतिनिधि व अन्य उपस्थित थे। आयुक्त सुश्री पाल द्वारा स्कीम नंबर 140 से लगभग 1.50 लंबाई व 24 मीटर चौडाई में रोड निर्माण के लिये निगम द्वारा किये गये खुदाई कार्य व मुरम फिलिंग कार्य का निरीक्षण किया गया, तथा रोड के किनारे के इलेक्ट्रीक पोल व अन्य बाधक हटाने के संबंध में दिशा-निर्देश दिये गये। साथ ही रोड के दोनो ओर ग्रीन बेल्ट के विकास के संबंध में भी कंसलटेंट को निर्देश दिये गये। इसके पश्चात आयुक्त सुश्री पाल द्वारा नेमावर से आरटीओ तक किये जाने वाले रोड निर्माण स्थल का भी निरीक्षण किया गया। नेमावर रोड से आरटीओ कि ओर रोड निर्माण हेतु शीघ्र खुदाई करने एवं कार्य प्रारंभ करने के निर्देश दिये गये। साथ ही कार्य की गति बढाने के भी संबंधितो को निर्देश दिये गये। इंदौर विकास योजना 2021 के अंतर्गत आर ई 2 भूरी टेकरी से नेमावर रोड होते हुए, आरटीओ नायता मुंडला तक रूपये 42.16 करोड की लागत से 4250 मी कुल लंबाई, 24 मीटर लंबाई सडक का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। उक्त रोड निर्माण से आईएसबीटी नया आरटीओ नायता मुंडला से बिचोली हप्सी होते हुए कनाडिया तक आवागमन सुगम हो जाएगा।

धूमधाम से मनाया गया वार्षिकोत्सव

प्रमोद बंसल / एनसीआर समाचार

राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय,(अंग्रेजी माध्यम) कोटपूतली में बुधवार को वार्षिकोत्सव मनाया गया। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यार्थीयो ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया, करीब सप्ताह भर पहले से ही विद्यार्थी वार्षिकोत्सव की तैयारी में जुट गए थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के तौर पर स्थानीय विधायक एवं राज्यमंत्री श्री राजेंद्र सिंह यादव उपस्थित थे। कार्यक्रम में DM कोटपूतली श्री जगदीश जी आर्य, DYSP डॉ.संध्या यादव, नगर पालिका चेयरमैन श्रीमती पुष्पा सैनी, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष श्री छीतरमल सैनी, तहसीलदार कोटपूतली श्री सूर्यकांत शर्मा, श्री बाबूलाल यादव, SDMC मेंबर श्री अमर सिंह यादव, सरपंच लक्ष्मण सिंह रावत, CBEO प्रतिनिधि श्री शार्दुल सिंह यादव, स्थानीय पार्षद श्री प्रमोद जी तथा अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के सामने दीप प्रज्वलित करके की गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमती मनोरमा यादव ने पुष्पगुच्छ भेंट कर मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र सिंह यादव का स्वागत किया, श्री लालाराम यादव एवं श्री शीशराम यादव ने साफा पहनाकर राजस्थानी अंदाज में मुख्य अतिथि का स्वागत सत्कार किया। विद्यालय के सभी स्टाफ साथियों ने सभी आगंतुक अतिथियों को साफा पहनाकर एवं माल्यार्पण कर कार्यक्रम में स्वागत किया। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती मनोरमा यादव ने सरदार विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, एवं विद्यालय द्वारा अर्जित की गई, उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने बताया कि कैसे एक समय विद्यालय का नामांकन कम हो रहा था और वह अब दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। उन्होंने विद्यालय की कुछ प्रमुख समस्याओं जैसे चारदीवारी, सुरक्षा व्यवस्था आदि के बारे में भी राज्य मंत्री को अवगत करवाया। राज्य मंत्री राजेंद्र सिंह यादव ने आश्वासन दिया कि सभी समस्याओं का समाधान तुरंत ही कर दिया जाएगा एवं विद्यालय में 20 किलो वाट का सोलर सिस्टम भी लगाया जाएगा जिससे विद्यालय के लिए आवश्यक बिजली का उत्पादन विद्यालय में ही किया जा सके। विद्यालय के छात्र छात्राओं ने विभिन्न लोकनृत्य, एकल नृत्य एवं लोक नाटक प्रस्तुत किये, सरदार विद्यालय के कुल 61 विद्यार्थियों को गतिविधियों में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए मुख्य अतिथि ने सर्टिफिकेट एवं मोमेंटो भेंट कर विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम के अंत में श्रीमती मनोरमा यादव ने सभी स्टाफ साथियों की तरफ से राज्य मंत्री श्री सिंह यादव को 'विजय स्तंभ' स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट किया। श्रीमती मनोरमा यादव ने सभी आगंतुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया एवं आश्वासन दिया कि विद्यालय दिन प्रतिदिन प्रगति करता रहेगा और इसमें अच्छा न करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी देश के विभिन्न जगहों पर विद्यालय एवं कोटपूतली का नाम रोशन करते रहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

चोटिया मोड पर धू-धू कर जला विद्युत ट्रांसफार्मर

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

निकटवर्ती चोटिया मोड़ पर सोमवार देर शाम को एक विद्युत ट्रांसफार्मर में शॉर्ट सर्किट के चलते आग लग गई काफी देर तक ट्रांसफार्मर जलता रहा। गनीमत रही कि विद्युत ट्रांसफार्मर फटा नहीं, जिससे एक बड़ा हादसा होने से टल गया। समाजसेवी राजेन्द्र कुमार मीणा ने बताया कि सोमवार की शाम करीब सात बजे विद्युत पोल पर रखे 25 केवी विद्युत ट्रांसफार्मर में शॉर्ट सर्किट के कारण आग लग गई। ट्रांसफार्मर में आग लगी देख ग्रामीणों ने अपने अपने घरों की बिजली सप्लाई बंद कर दी। काफी देर तक ट्रांसफार्मर जलता रहा, रात को ही ट्रांसफार्मर में आग लगने की सूचना विद्युत निगम को दी गई। समय पर विद्युत कर्मचारियों को सूचना देने के बावजूद भी काफी देर बाद विद्युत आपूर्ति बंद की गई। ट्रांसफार्मर में आग लगने से पूरी रात मोहल्ले की बिजली गुल रही। ग्रामीणों ने नगर-निगम से ट्रांसफार्मर बदलवाने की मांग की है। इस संबंध में विद्युत निगम के AEN उधम सिंह यादव ने JEN को सूचित कर शीघ्र ग्रामीणों की समस्या के समाधान की बात कही है।

राजकीय बालिका विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

श्रीमती नर्बदा देवी बिहारी लाल जोशी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पावटा जयपुर में वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभावान छात्रों का सम्मान समारोह मुकेश कुमार अग्रवाल, तहसीलदार के मुख्य आतिथ्य एवम श्रीमती विजया कौशिक, प्रधानाचार्य की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। विशिष्ठ अतिथि के रूप में जयसिंह यादव नोडल प्रधानाचार्य पावटा, गोकुल टेलर, नरेश यादव, मीना मित्तल, शिंभू सैनी SDMC सदस्य सहित अनेक अभिभावक उपस्थित रहे, कार्यक्रम में मंच संचालन राजेश गुर्जर ने किया, कार्यक्रम के दौरान भागीरथ, रामनिवास यादव, मधुसूदन शर्मा, सुमन यादव, लक्ष्मी चंद्रोह, मानसिंह रमेश, तेजभान, रूपचंद सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

रंग पंचमी पर जिले की समस्त देसी विदेशी एवं वाइन शॉप के लिए शुष्क दिवस घोषित किया

ब्रज कुमार राठौड़ / एनसीआर समाचार

कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री दिनेश जैन ने मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 24 मैं प्रदत शक्तियों का प्रयोग करते हुए 24 मार्च 2022 को रंग पंचमी पर्व के दिन प्रात काल से शाम 4:00 बजे तक जिले की समस्त देसी विदेशी मदिरा एवं वाइन शॉप के लिए शुष्क दिवस घोषित किया है उक्त अवधि में देसी विदेशी मदिरा एवं वाइन शॉप की दुकानें बंद रखी जाएगी तथा शराब का क्रय विक्रय पूर्णता प्रतिबंधित रहेगा।

एक प्रयास हमारा, के सदस्यों ने होली मिलन समारोह मनाया

नवनीत पांडेय / एनसीआर समाचार

स्वयंसेवी संस्था 'एक प्रयास हमारा' का होली मिलन समारोह का आयोजन संस्था के कार्यालय पुनदाग में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जमकर अबीर गुलाल उड़ाई गई तथा गीत संगीत की धुन पर सभी सदस्य एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर होली की बधाईया दी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में 36 के पार्षद श्री अरुण झा, अमरनाथ झा, समाजसेवी कुमुद झा आदि मौजूद रहे।

दादुका में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

ग्राम पंचायत भालोजी स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय दादुका में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में नितेन्द्र मानव, एडवोकेट मनोज चौधरी, सरपंच कृष्ण आर्य, PEEO सुशील यादव, विक्रम लीडर आदि ने सरस्वती माता के आगे पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। मुख्य अतिथि जीवन बचाओ आंदोलन के संयोजक नितेंद्र मानव ने कहा की देश के सबसे प्रतिभाशाली बच्चे ग्रामीण परिवेश के इन सरकारी स्कूलों से ही निकलकर आगे पहुंचते है। ये बच्चे पढ़ लिखकर इस देश के भविष्य का निर्माण करेंगे। उन्होंने बच्चो को अच्छी पढ़ाई करके कामयाब बनने की सीख दी, कार्यक्रम के मुख्य वक्ता युवा रिवॉल्यूशन के अध्यक्ष मनोज चौधरी एडवोकेट ने विद्यार्थियों संबोधित करते हुए कहा की आपके माता-पिता की आंखों में आपको कामयाब देखने का सपना पल रहा है, आपको उन सपनों के लिए जीना है, उन उम्मीदों को पूरा करना है।

झील किनारे लगभग 4 एमएलडी का वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट प्लांट भी बनेगा

मुकेश हरयानी / एनसीआर समाचार

शहर में स्ट्रीट लाइट्स की कमी के कारण बनने वाले ब्लैक स्पॉट को खत्म करते हुए शहर की सड़कों पर व्यवस्थित लाइटिंग के लिए अत्यावश्यक स्मार्ट स्ट्रीट लाइटिंग एंड ICT वर्क परियोजना को स्वीकृति दी गई, यह निर्णय मंगलवार को सागर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग में लिया गया। कलेक्टर सह अध्यक्ष SSCL श्री दीपक आर्य की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि स्मार्ट स्ट्रीट लाइटिंग एंड ICT वर्क परियोजना में सड़कों पर सेंसर बेस्ड स्मार्ट स्ट्रीट लाइट्स लगाई जाएंगी। इस लाइटिंग सिस्टम को इंटिग्रेटेड कंट्रोल एंड कमाण्ड सेंटर (आईसीसीसी) से इंटिग्रेट कर कंट्रोल किया जाएगा। इसके अलावा सागर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा सागर कन्वेंशन सेंटर बिल्डिंग का निर्माण PPP मोड पर कराया जाएगा। लगभग 2000 वर्गमीटर क्षेत्रफल में बनने वाली इस बिल्डिंग की प्रस्तावित डिजाइन पर चर्चा करते हुए यह निर्णय लिया गया कि इस बिल्डिंग में ऑफिस स्पेस और कमर्शियल स्पेस का मिक्स डिजाइन होगा। यहां ऑफिशियल एवं कमर्शियल गतिविधियों को व्यवस्थित करने के लिए दोनों के एंट्री-एग्जिट अलग-अलग रखने पर चर्चा करते हुए पार्किंग व्यवस्था, टॉयलेट व्यवस्था जैसी अन्य पब्लिक फैसेलिटीज को बेहतर रखने को कहा गया। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की बैठक में बताया गया कि सागर स्मार्ट सिटी द्वारा शहर में नागरिकों की सुविधा के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है, जैसे कि कामकाजी महिलाओं के लिए वर्किंग वूमंस हॉस्टल बनाया गया है। नागरिकों को बेहतर खेल सुविधाएं देने के उद्देश्य से सिटी स्टेडियम का निर्माण और स्टार्टअप्स के लिए इनक्यूबेशन सेंटर बिल्डिंग बनाई जा रही है। इनके रखरखाव एवं संचालन के लिए एजेंसी चयनित करने का प्रस्ताव रखते हुए बताया गया कि इनके बेहतर रखरखाव एवं कुशल संचालन के लिए बेहतर काम करने वाली एजेंसी का चयन बहुत आवश्यक है। इस प्रस्ताव को बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने मंजूरी दे दी है। इसके अलावा शहर में लगाएं जाने वाले सोलर पॉवर प्लांट निर्माण को ऊर्जा विकास निगम के माध्यम से किए जाने के प्रस्ताव को भी बोर्ड ने मंजूरी प्रदान की।

परसादी लाल सैनी को ब्रांड एंबेसडर मनोनीत होने पर आभार व्यक्त किया

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

स्वच्छ भारत मिशन के तहत नगर पालिका प्रशासन ने पूर्व पार्षद प्रसादी लाल सैनी को ब्रांड एंबेसडर मनोनीत किया वार्ड 17 को आदर्श वार्ड एवं पार्षद शिबू दयाल को आदर्श वार्ड पार्षद मनोनीत किया पालिका चेयरमैन पुष्पा सैनी एवं अधिशासी अधिकारी फतेह सिंह मीणा ने बताया कि स्वच्छ भारत मिशन को ध्यान में रखते नगर पालिका द्वारा स्वच्छ भारत मिशन के प्रचार प्रसार के लिए लगातार प्रयास जारी है और शहर के सभी वार्डों में सफाई का विशेष ध्यान रखा जा रहा है स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पूर्व पार्षद प्रसादी लाल सैनी को ब्रांड एंबेसडर मनोनीत किया है इसके अलावा वार्ड संख्या 17 को आदर्श वार्ड घोषित कर पार्षद सिंबू दयाल सैनी को आदर्श वार्ड पार्षद मनोनीत किया गया है दोनों के मनोनयन पर अनेक लोगों ने उन्हें बधाई दी।

योग सेविका दुर्गा तिवाडी महिला पतंजलि योग समिति बाड़मेर ने मनाया फागोत्सव

संजय कुमार / एनसीआर समाचार

निसंदेह पर्वों का व्यक्ति एवं समाज के जीवन मे एक विशेष महत्व है। भारत देश मे सभी को एकत्व भाव से जोड़ने का जो अभूतपूर्व कार्य हमारी त्योहारों की संस्कृति करती है विश्व के अन्य किसी देश में इस प्रकार की संस्कृति नहीं मिलती है। वर्तमान में सामाजिक समरसता का प्रतीक बन चुका है। होली का त्योहार उक्त संदेश योग सेविका दुर्गा तिवाडी ने महिला पतंजलि योग समिति बाड़मेर की ओर से आदर्श स्टेडियम में नियमित सांयकालीन महिलाओं की योग कक्षा में फागोत्सव मनाने के दौरान दीया। योग सेविका दुर्गा तिवाडी ने कहा की जब होली के रंग में सभी रंग जाते हैं तो जात-पात, धर्म, मजहब, ऊंच-नीच, काला-गोरा, छोटा-मोटा सब प्रकार के भेदभाव मिट जाते हैं। विभिन्न रंगों से रंगे व्यक्तियो में केवल रंग ही प्रधान रह जाते हैं और वे खुशियों, उत्साह के व उल्लास के रंग होते हैं, मानव के अंदर की मानवता के जिस प्रकार से योग में आसन, प्राणायाम, बंध, मुद्रा आदि विभिन्न आयामों के द्वारा ईश्वर के साथ एकत्व भाव से जुड़ जाते हैं उसी प्रकार होली के विभिन्न रंगों से रंग कर हम मानव जाति के साथ एकत्व भाव से जुड़ जाते हैं। योग साधिका शोभा गौड़ ने बताया कि महिला पतंजलि योग समिति की ओर से यह योग कक्षा नियमित रूप से शाम 6 से 7 बजे तक चलती है और योग कक्षा में ही विभिन्न प्रकार के त्योहार हम लोग मनाते हैं।

इसी क्रम में आज हमने हर्बल गुलाल एवम पुष्पों से योग कक्षा में आने वाले सभी महिलाओं के मध्य होली खेली एक दूसरे को गुलाल लगाए। योग साधिका राधा ने फाग फागोत्सव में कहा कि त्योहार आपसी भाईचारे को मजबूत बनाता है और लोगों को सभी शिकवे शिकायतों को भूलकर सकारात्मक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग साधिका कंचन अग्रवाल ने इस फागोत्सव पर बहुत ही सुंदर आज बिरज में होली रे रसिया भजन गाया और अंत मे अल्पना अग्रवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पुलिस डीजीपी महिला सुरक्षा सखी टीम के द्वारा वृद्ध महिलाओं का किया सम्मान

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

भगवान श्री राम का मंदिर अयोध्या धाम का प्रतीक चिन्हदेकर दिनांक 15/3/2022 मंगलवार को कोटपुतली के निकटवर्ती / ग्रामीण क्षेत्रों में कई गांवों में वृद्ध महिलाओं का सम्मान किया गया। सामाजिक कार्यकर्ता रवि कुमार शर्मा ने बताया वृद्ध महिलाओं की सेवा व सम्मान के लिए वृद्ध महिलाओं के सम्मान के साथ वृद्ध महिला व वृद्ध व्यक्ति ही भगवान है ऐसा कह उन्होंने आज इस अभियान का शुभारंभ किया गया। रवि कुमार शर्मा ने बताया इस मौके पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान से जुड़ी हुई महिलाओं को हनुमान चालीसा भी वितरित किया गया व आगामी अप्रेल महिने में वृद्ध महिला व वृद्ध व्यक्ति को मथुरा वृंदावन अयोध्या धाम की निशुल्क तीर्थ यात्रा कराई जाएगी। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जागरूकता अभियान टीम से जुड़ी हुई महिलाओं के सहयोग से गरीब परिवार की वृद्ध महिला की सेवा व वृद्ध बीमार महिला की सहायता के लिए जागरूक किया जा रहा है। इस मौके पर मौजूद रही वंदना कुमावत (महिला सुरक्षा सखी कोटपुतली थाना) नीलम कंवर, शारदा देवी, ममता देवी, पिंकी देवी, रवि कुमार शर्मा सामाजिक कार्यकर्ता एवं संयोजक बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जागरूकता अभियान चलाया।

Google ने doodle के साथ फ्रांसीसी कलाकार Rosa Bonheur का 200वां जन्मदिवस मनाया

एजेंसी / एनसीआर समाचार

नई दिल्ली: Google आज फ्रांसीसी चित्रकार रोजा बोनहेर का 200वां जन्मदिन मना रहा है, जिनके सफल करियर ने कला में महिलाओं की भावी पीढ़ी को प्रेरित किया है, आज का डूडल कैनवास पर भेड़ के झुंड को चित्रित करते हुए रोजा बोनहेर की एक एनिमेटेड छवि है। रोजा बोनहेर का जन्म आज ही के दिन 1822 में फ्रांस के बोर्डो में हुआ था। उनकी प्रारंभिक कलात्मक शिक्षा उनके पिता, एक मामूली परिदृश्य चित्रकार द्वारा सुगम की गई थी। यद्यपि कला में करियर के लिए उनकी आकांक्षाएं उस समय की महिलाओं के लिए अपरंपरागत थीं, बोनहेर ने सावधानीपूर्वक अध्ययन के वर्षों के माध्यम से कलात्मक परंपराओं के विकास का बारीकी से पालन किया और उन्हें कैनवास पर अमर करने से पहले रेखाचित्र तैयार किया। 12 साल की उम्र में एक सीमस्ट्रेस के रूप में एक असफल शिक्षुता के बाद, बोनहेर के पिता ने उसे कला और चित्रकला में निर्देश देना शुरू कर दिया। अपनी माँ द्वारा कम उम्र में उसे जानवरों के प्यार के साथ, बोनहेर ने पेरिस के आसपास के खेतों और चरागाहों में पालतू जानवरों का अध्ययन करना और लौवर संग्रहालय में चित्रों की नकल करना शुरू कर दिया। एक पशु चित्रकार और मूर्तिकार के रूप में बोनहेर की प्रतिष्ठा 1840 के दशक में बढ़ी, उनके कई कार्यों को 1841 से 1853 तक प्रतिष्ठित पेरिस सैलून में प्रदर्शित किया गया। विद्वानों का मानना है कि 1849 में ₹निवेर्निस में जुताई₹ की एक प्रदर्शनी, एक सरकारी आयोग जो अब फ्रांस में स्थित है। मुसी नेशनेल डू चेटो डी फॉनटेनब्लियू ने उन्हें एक पेशेवर कलाकार के रूप में स्थापित किया। 1853 में, बोनहेर ने अपनी पेंटिंग ₹द हॉर्स फेयर₹ के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की, जिसमें पेरिस में आयोजित घोड़े के बाजार को दर्शाया गया था। उनके सबसे प्रसिद्ध काम के रूप में, यह पेंटिंग न्यूयॉर्क के मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट में प्रदर्शित है। इस प्रसिद्ध पेंटिंग का सम्मान करने के लिए, फ्रांसीसी महारानी यूजनी ने 1865 में रोजा बोनहेर को लीजन ऑफ ऑनर-देश के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक से सम्मानित किया, रोजा बोनहेर की एक कृति, मोनार्क्स ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट, को 2008 में एक नीलामी में 2,00,000 डॉलर से भी अधिक में बेचा गया था।

तंवर बने सल्यूट तिरंगा के जिला अध्यक्ष

संजय कुमार / एनसीआर समाचार

धनाऊ मंगलवार राष्ट्रीय संगठन सल्यूट तिरंगा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेश जहा के निर्देशानुसार राजस्थान प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष श्री मदन मोहन पालीवाल ने भाजपा मंडल धनाऊ के पूर्व मंडल अध्यक्ष लेखराज तंवर को बाड़मेर जिले के जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। जिला अध्यक्ष नियुक्त होने की घोषणा जैसे ही सोशल मिडिया पर वायरल हुई भाजपा कार्यकर्ताओं व राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं ने लेखराज तंवर को फोन कर व सोशल मिडिया पर बधाईयां देना शुरू कर दिया। लेखराज तंवर जन्म से राष्ट्रवादी रहे हैं यह भाजपा मै काफी दायित्वों पर रह चुके हैं जहां इन्होने बहुत अच्छा कार्य किया है और जनता की भी हर तरह से मदद की। धनाऊ मंडल के प्रभारी रहे, पोकरण विधानसभा विस्तारक रहे, धनाऊ मंडल के दो बार अध्यक्ष रहे, एस सी मोर्चा के जिला मंत्री रहे, जनकल्याण कारी योजनाओं के जिला उपाध्यक्ष रहे जहां बहुत ही अच्छा कार्य करने पर आज राष्ट्रीय संगठन सल्यूट तिरंगा के जिला अध्यक्ष नियुक्त किए जिसको देखकर राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं मै खुशी की लहर है। क्यूंकि भारत पाक सीमा पर स्थित गांव सरूपे का तला का एक गरीब परिवार का युवक कम समय में इतना कुछ प्राप्त कर चुका है।

सरोजनी नायडू मेडिकल कॉलेज की आंठवी मंजिल पर भीषण आग लगी, अपने मरीजों को लेकर भागे रिश्तेदार

एजेंसी / एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश के आगरा मे (सरोजनी नायडू मेडिकल कॉलेज) में आज भीषण आग लग गई है वहां मरीजों के साथ आय परिजनो ने 8वीं मंजिल से धुआँ उठते देख शोर मचाया और फिर वहां के लोगो में अफरा-तफरी मचने लगी, सभी परिजनों ने अपने-अपने मरीजों को लेकर बहार निकलने की कोशिस में लगे रहे। SN मेडिकल कॉलेज में आग की वजह से हाहाकार मच गया सभी परिजन अपने-अपने मरीज को ढूंढ़ने में लगे और सबको जल्द से जल्द बहार निकालकर सुरक्षित जगह पर ले जाने लगे। किसी ने मरीजों को गोद में उठाई तो किसी ने Emergency stretcher पर वो परिजन किसी भी तरह से अपने अपनों को बहार निकलने में लगे रहे, मौके पे दमकल विभाग वाले वहां पहुंचे और अपना कार्य शुरू कर लोगो को बहार निकलने लगे, सभी लोगो को सुरक्षित बहार निकला गया हालाँकि किसी को इस हादसे का शिकार नहीं होना पड़ा मोके पे सभी लोग बहार निकले और जो परिजन बहार किसी काम से गए थे उन्हें उनके मरीज सौंपे गए। तभी मोके पे वहां के जिला अधिकारी और SSP भी पहुंचे। दमकल विभाग के सर्च करने के मुताबिक बताय जा रहा है कि हॉस्पिटल के बेसमेंट में काफी दिनों का कचरा इखट्टा था जिसमे आग लगी थी, और इसी वजह से इस आग ने भीषण रूप लिया।

उच्च माध्यमिक विद्यालय सरूपे का तला विद्यालय में वार्षिक उत्सव संपन्न

दीपक तंवर / एनसीआर समाचार

धनाऊ पंचायत समिति के सीमा से सटा हुआ गांव सरूपे का तला विद्यालय मे मंगलवार को विद्यालय का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया, साथ मे कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को दी गई विदाई।

विद्यालय के PEO श्री स्वरूप सिंह ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस बार भी विद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया गया, साथ ही बालक बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी दी गई, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सरूपे का तला में वार्षिक उत्सव मनाया गया, विद्यालय के PO स्वरूप सिंह ने बताया कि इस अवसर पर कक्षा 12वीं का विदाई समारोह वह भामाशाह सम्मान समारोह रखा गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता CBO चतराराम पंवार ब्लोक शिक्षा अधिकारी पंचायत समिति धनाऊ ने की इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि, जिला परिषद सदस्य श्रीमती सिणगारी देवी, सरपंच जमालखान, उप सरपंच बचाया खान समेजा, RP श्री अचलाराम धाधंल, आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री भीखाराम चौधरी, नौहर तालसर प्रिंसीपल श्री चन्द्र प्रकाश उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुर्व राज्य मंत्री श्रीमान हाजी गफुर अहमद रहे, कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना से की गई, पूर्व राज्य मंत्री गफुर अहमद ने अपने उद्बोधन मे बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जोर दिया, उन्होंने कहा कि आज के युग में शिक्षा का बहुत ही महत्व है, साथ मे विद्यालय बच्चो के लिए टीन सेड बनाने के लिए पांच लाख रूपये की घोषणा की। इस अवसर पर विद्यालय के नेत्रहीन छात्र हलीम खान ने BST परीक्षा मे राजस्थान मे दुसरा स्थान प्राप्त किया था उसे विद्यालय स्तर पर सम्मानित किया गया, साथ ही मेधावी विद्यार्थियों का विद्यालय की तरफ से पुरस्कार वितरण किया गया। साथ ही कक्षा 12वीं के विधार्थीयो को समाजसेवी बलवंत सिंह द्वारा ग्रीष्मकालीन पानी की बोतले (selloकम्पनी)पुरस्कार के रूप मे दी।

प्रत्येक छात्र को एक रजिस्टर एक पेन तिरंगा सेल्युट के जिलाअध्यक्ष श्री लेखराज तंवर द्वारा दी गई। कार्यक्रम के अतः मे भामाशाहो को शोल औढाकर समान किया गया साथ मे प्रसति पत्र दिए गया। इस अवसर पर सहायक ग्राम सेवक रामजीवन बिश्नोई, पुर्व सरपंच सईदादखान, धनाऊ मंडल उपाध्यक्ष जुजाराम परमार, माझी खान, चेलाराम, गोरखाराम, किशन लाल व अध्यापक, ताजुखा SMC अध्यक्ष, अलीखान डिलर, सहित विद्यालय के समस्त स्टाफ और ग्रामीण मौजूद रहे, मंच संचालन लखपत मीणा अध्यापक व नरपत सिह अध्यापक ने किया।

संपादकीय

अपने दम पर जनादेश लेकर लौटे योगी पर दूसरे कार्यकाल में कोई भी दबाव नहीं

2017 से 2022 तक उत्तर प्रदेश काफी बदल चुका है। राप्ती-गोमती का बहुत सारा पानी बह चुका है। फैसले ऐसे हुए, जिनकी किसी ने उम्मीद नहीं की। बहुत जल्द मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण समारोह को भी आप देखेंगे। उस समारोह में भी आपको बड़ा बदलाव देखने को मिले तो चौंकिएगा नहीं। देश-काल-परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, फैसला जो भी होगा वह बेहद कड़क होगा। 2017 में उत्तर प्रदेश में भाजपा को जो बहुमत मिला था, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर मिला था। लोगों ने टूट कर उनको वोट दिया था। अचानक एक स्टार प्रचारक सह सांसद योगी आदित्यनाथ को अमित शाह का बुलावा आता है और अगले ही पल प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद यह तय हो जाता है कि वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री होंगे। 2017 से 2022 तक योगी सरकार चलाते हैं और इन पांच वर्षों में कोई दिन ऐसा नहीं होता जब उनकी सरकार चर्चा में न होती हो। चर्चा के कई बिंदु रहे। चाहे वह माफिया अतीक अहमद-मुख्तार अंसारी की संपत्तियों पर बुलडोजर चलाने का फैसला हो या फिर उज्जैन से यूपी लाए गए कुख्यात अपराधी विकास दुबे को गाड़ी पलटने के बाद एनकाउंटर में ढेर किया जाना, सरकार लगातार चर्चा में रही। यह सरकार राशन पहुंचाने में भी चर्चा में रही, भाषण देने में भी। यह योगी ही थे जिन्होंने 80-20 का चुनाव का नया टर्मोलाजी पोलिटिकल सर्कल में उतारा और जब परिणाम आए तो अक्षरशः वही साबित भी हुआ। इन पांच वर्षों में देश-दुनिया में अगर प्रधानमंत्री के बाद कोई चर्चा में रहा तो वह कोई और नहीं, सिर्फ और सिर्फ योगी ही रहे। इस बीच एक और खास बात हुई। यूपी में दंगा नहीं हुआ। अखिलेश के कार्यकाल में यूपी में दंगा रोके नहीं रुकता था, योगी के कार्यकाल में यह चाह कर भी नहीं हुआ। समाजवादी पार्टी का यह संगीन आरोप रहा कि जो दंगा करवाने वाला है, वह सत्ता चला रहा है तो दंगा होगा कैसे। लेकिन, उसे 125 सीटें देकर जनता ने बता दिया कि उसका भरोसा भाजपा के खिलते कमल पर है, साइकिल अब बीते जमाने की बात हुई। 2022 में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चुनाव लड़ा गया और बेशक 2017 वाला आंकड़ा इस बार पार्टी नहीं छू सकी पर जिस आंकड़े को छुआ गया, वह भी शानदार है। 403 सीटों के लिए बहुमत होता है 202 लेकिन भाजपा को कुल सीटें मिलीं 255। अगर सहयोगियों की संख्या को मिला दें तो यह आंकड़ा 273 का होता है। इसे आप बंपर भी कह सकते हैं। लेकिन, भाजपा में ही ऐसे कई तत्व हैं जो इस जीत का श्रेय योगी-मोदी-शाह को नहीं देकर खुद को दे रहे हैं, भले ही वह चुनाव हार गए हों। एक दौर वह भी था, जब उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या यह कहने को तैयार नहीं थे कि विधानसभा का चुनाव योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में होगा। तब वह कहा करते थे कि केंद्र तय करेगा कि चुनाव किसके नेतृत्व में होना है? उस दौर में प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह पहले शख्स थे जिन्होंने खम ठोंक कर कहा था कि चुनाव योगी जी के नेतृत्व में ही होगा और जीतेंगे भी। हुआ भी यही। लेकिन, केशव मौर्या का क्या हुआ? वह अपनी विधानसभा सीट हार गए। वह भी किससे? पल्लवी पटेल से। पल्लवी पहली बार चुनाव लड़ीं और जीतीं। योगी सरकार का वर्जन 2.0 कई मामलों में पहली सरकार से अलग होगा। उसके दो कारण हैं। पहला, योगी किसी दबाव में नहीं रहेंगे। वह दिल्ली दरबार के वफादार तो रहेंगे, पिछलग्गू शायद ही बनें। उन्होंने अपने दम पर 273 सीटें जीत कर दिखा दिया कि जनता उन पर विश्वास करती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह होगा कि 2017 की मोदी लहर में भी भाजपा गोरखपुर जिले की 9 विधानसभा सीटों में मात्र 8 पर ही विजय पताका फहरा पाई थी। 2022 में सीन बदल गया। इस बार गोरखपुर जिले की 9 की 9 विधानसभा सीटों पर केसरिया फहरा रहा है। यह योगी का ही कमाल है कि जिस विधायक को पांच साल तक जनता खोजती रही, वह नहीं मिले या बहुत कम मिले, वह भी चुनाव जीत गये इस बार।

दुकानदारी करने वाले एक सज्जन के लिए योगी ने दो बार चुनाव प्रचार किया और वह भी 25000 मतों के अंतर से चुनाव जीत गए। ऐसे में, जब केशव प्रसाद मौर्या चुनाव हारते हैं तो मानना पड़ेगा कि योगी का वर्जन 2.0 निष्कंटक होगा। दूसरा, योगी किसी का दखल बर्दाश्त नहीं करेंगे। वह स्वभावतः किसी का दखल बर्दाश्त नहीं करते। एक ब्यूरोक्रेट के साथ साल भर पहले जो हुआ, उसे एक उदाहरण मान कर आप समझ लें कि यह सरकार बिल्कुल दूसरे टोन में काम करेगी। योगी मूलतः काम करना चाहते हैं। वह डिलीवरी में भरोसा करने वाले हैं। जब राइट टाइम डिलीवरी में कोई दिक्कत आती है तो वह नाराज होते हैं। उन्हें हर चीज अप टू डेट और टू द प्वाइंट चाहिए ही। योगी ने अपने पांच साल के कार्यकाल में जिस चीज पर सबसे ज्यादा फोकस किया, वह था डिलीवरी। डिलीवरी के मामले में योगी सरकार को आपको 100 में 100 अंक देने पड़ेंगे। उसके पीछे कारण है। जो लक्ष्य तय किया गया था, वह समय पर पूरा किया गया। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे उसका शानदार उदाहरण है। ऐसे अनेक कार्य हैं जो प्रदेश में तय समय सीमा से पहले पूर्ण हुए। फिर, जो केंद्र की योजनाएं हैं, उन्हें भी योगी सरकार ने पूरा जोर लगा कर डिलीवर किया। वहां न तो हिंदू-मुसलमान की बात आई और न ही अगड़ों-पिछड़ों की। किसानों के खाते में धनराशि भेजी गई तो यह नहीं देखा गया कि किसान हिंदू है या मुसलमान। बस, उसे किसान ही समझा गया। यही हाल प्रधानमंत्री आवास को लेकर रहा। कोई यह नहीं कह सकता कि अनिवार्य पात्रता की शर्तें पूरी करने के बाद उसे मुसलमान होने के नाते आवास नहीं मिला। डिलीवरी हुई और बेहद कायदे से हुई। इसी डिलीवरी ने योगी के नाम पर, उनके काम पर फिर से जनादेश दिया है। 2022 से 2027 तक चलने वाली नई सरकार में डिलीवरी पर तो फिर से जोर होगा ही, रास्ते के जितने भी कांटे हैं, उन्हें भी निकाला जाएगा और माना जा रहा है कि इस बार भी योगी अपनी ही मर्जी से सरकार चलाएंगे-चाहे कोई कुछ भी सोचे, कहे।

रंगों से सराबोर होती है राजस्थान की खास होली

रमेश सर्राफ धमोरा

बीकानेरी होली का सबसे आकर्षण का केन्द्र होता है। पुष्करणा समाज के हर्ष व व्यास जाति के बीच खेला जाने वाला डोलची। पानी का खेल डोलची चमड़े से बना एक ऐसा पात्र है जिसमे पानी भरा जाता है व जोरदार प्रहार के साथ सामने बाले की पीठ पर इस पानी को मारा जाता है।

रंगो का पर्व होली का नाम सुनते ही हर उम्र के व्यक्तियों के चेहरे पर खुशियां दिखने लगती हैं। देश के हर प्रदेश में होली का पर्व अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। मगर राजस्थान में होली मनाने का अलग ही अंदाज दिखता है। होली के अवसर पर राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में कईं तरह के आयोजन किए जाते हैं। होली के विविध रंग देखने में आते हैं। राजस्थान की लोक परंपराओं और प्रथाओं में फाल्गुन मास के अल्हड़ लोकगीत और चंग की थाप अपना एक अलग ही महत्व रखते हैं।

मस्ती और छेड़छाड़ भरे लोकगीतों के स्वर उस समय अधिक सुरीले हो जाते हैं। जब घुंघरू की झंकार के साथ चंग की थाप में मस्तानों की टोलियां झूमती नजर आती हैं। राजस्थान के मंदिरों में होली पर रंग-गुलाल के साथ फाग उत्सव का आयोजन किया जाता है। जयपुर के इष्टदेव गोविंद देव मंदिर में रंगो से सरोबार नजारा देखने लायक होता है। मेवाड अंचल के भीलवाड़ा जिले में शीतला सप्तमी पर खेली जाने वाली लठमार होली का अपना एक अलग ही मजा रहा है। माहेश्वरी समाज के स्त्री-पुरूष यह होली खेलते हैं। डोलचियों में पानी भरकर पुरूष महिलाओं पर डालते हैं और महिलाएं लाठियों से उन्हें पीटती हैं। यहां होली के बाद बादशाह की सवारी निकाली जाती है, वहीं शीतला सप्तमी पर चित्तौडगढ़ वालों की हवेली से मुर्दे की सवारी निकाली जाती है। इसमें लकड़ी की सीढी बनाई जाती है और जिंदा व्यक्ति को उस पर लिटाकर अर्थी पूरे बाजार में निकालते हैं। इस दौरान युवा इस अर्थी को लेकर पूरे शहर में घूमते हैं। लोग इन्हें रंगों से नहला देते हैं। बीकानेरी होली का सबसे आकर्षण का केन्द्र होता है। पुष्करणा समाज के हर्ष व व्यास जाति के बीच खेला जाने वाला डोलची। पानी का खेल डोलची चमड़े से बना एक ऐसा पात्र है जिसमे पानी भरा जाता है व जोरदार प्रहार के साथ सामने बाले की पीठ पर इस पानी को मारा जाता है। बाड़मेर में पत्थर मार होली खेली जाती है तो अजमेर में कोड़ा अथवा सांतमार होली लोग बहुत धूम-धाम से मनाते हैं। हाड़ोती क्षेत्र के सांगोद कस्बे में होली के अवसर पर नए हिजड़ों को हिजड़ों की जमात में शामिल किया जाता है। इस अवसर पर बाजार का न्हाण और खाड़े का न्हाण नामक लोकोत्सवों का आयोजन होता है। खाडे के न्हाण में जम कर अश्लील भाषा का प्रयोग किया जाता है। भरतपुर के ब्रजांचल में फाल्गुन का आगमन कोई साधारण बात नहीं है। ब्रज के गांव की चैपालों पर ब्रजवासी ग्रामीण अपने लोकवाद्य बम के साथ अपने ढप, ढोल और झांझ बजाते हुए रसिया गाते हैं। डीग क्षेत्र की ग्रामीण महिलाएं अपने सिर पर भारी भरकम चरकुला रखकर उस पर जलते दीपकों के साथ नृत्य करती हैं। संपूर्ण ब्रज में इस तरह आनंद की अमृत वर्षा होती है। यह परम्परा ब्रज की धरोहर है। बरसाने, नंदगांव, कामां, डीग आदि स्थानों पर ब्रज की लक्ष्मार होली की परम्परा आज भी यहां की संस्कृति को पुष्ट करती है। चैत्र कृष्ण द्वितीया को दाऊजी का हुरंगा भी प्रसिद्ध है। ब्रह्मानगरी पुष्कर की कपड़ा फाड़ होली ने देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी धाक जमा ली है। यहां विदेशी सैलानियों के साथ स्थानीय और देशी पर्यटक बड़ी धूमधाम के साथ होली खेलते हैं और एक दूसरे के कपड़े भी फाड़ते हैं। शेखावाटी अंचल में होली एक सुप्रसिद्ध लोक पर्व है तथा इस पर्व को क्षेत्र में पूरे देश से अलग ही ढंग से मनाया जाता है। होली पर चंग पर गाई जाने वाली धमालों में यहां की लोक संस्कृति का ही वर्णन होता है। इन धमालों के माध्यम से जहां प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं को अपने प्रेम का संदेशा पहुंचाते हैं। वहीं श्रद्धालु धमालों के माध्यम से लोक देवताओं को याद कर सुख समृद्धि की कामना करते हैं। धमाल के साथ ही रात्रि में नवयुवक विभिन्न प्रकार के स्वांग भी निकाल कर लोगों का भरपूर मनोरंजन करते हैं। गांवों में स्त्रियां रात्रि में चैक में एकत्रित होकर मंगल गीत, बधावे गाती हैं। शेखावाटी क्षेत्र में पुरुष चंग बजाते हुये नृत्य करते हैं। यह मुख्यतः होली के दिनों में किया जाता है। चंग को प्रत्येक पुरुष अपने एक हाथ से थाम कर और दूसरे हाथ से बजाते हुए वृत्ताकार घेरे में नृत्य करते हैं। घेरे के मध्य में एकत्रित होकर धमाल और होली के गीत गाते हैं। शेखावाटी में ढूंढ का चलन अभी है। परिवार में बच्चे के जन्म होने पर उसका ननिहाल पक्ष की ओर से होली पर बच्चे को कपडे और खिलौने देते हैं। शेखावाटी में होली पर रात में गींदड़ नृत्य किया जाता है। गुजराती नृत्य गरवा से मिलता-जुलता गींदड़ नृत्य में लोग विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में नंगाड़े की आवाज पर एक गोल घेरे में हाथ में डंडे लिए घूमते हुए नाचते हैं तथा आपस में डंडे टकराते हैं। प्रारम्भ में धीरे-धीरे शुरू हुआ यह नृत्य धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ता जाता है। इसी रफ्तार में डंडों की आवाज भी टकरा कर काफी तेज गति से आती है तथा नृत्य व आवाज का एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न हो जाता है। जिसे देखने वाला हर दर्शक रोमांचित हुए बिना नहीं रह पाता है। इन नृत्यों की लोक परम्परा को जीवित रखने के लिए क्षेत्र की कुछ संस्थाएं विगत कुछ समय से विशेष प्रयासरत हैं। झुंझुनू, फतेहपुर शेखावाटी, रामगढ़ शेखावाटी, मण्डावा, लक्ष्मणगढ़, चूरू, बिसाऊ, लक्ष्मणगढ़ कस्बों का गींदड़ नृत्य पूरे देश में प्रसिद्व है। इसी कारण चंग व गीन्दड़ नृत्य का आयोजन शेखावाटी से बाहर अन्य प्रान्तो में भी होने लगा है। अगर होली के त्यौहार से लोक वाद्य चंग और धमाल को निकाल दिया जाये तो होली का त्यौहार बेजान हो जायेगा। चंग और धमाल को लोग होली पर्व की आत्मा मानते है। मगर अब यह परम्परा धीरे धीरे समापत होती जा रही है। राजस्थान में कालबेलिया समाज आज भी इस परंपरा को संजोए बैठा है।

कालबेलिया जाति के लोग फाल्गुन मास में अपने गांव लौट कर चंग की थाप पर जश्न मनाते दिखाई देते हैं। पहले होली का त्योंहार प्रेम पूर्वक मनाया जाता था। सब साथ मिलकर चंग पर धमाल गाते थे। लेकिन आजकल वो सब खत्म सा हो गया है। शराब के बढ़ते प्रचलन के कारण लोग कार्यक्रमों में आने से डरने लगे हैं। अब गांवों में भी पहले जैसा सामंजस्य नहीं रहा है। इसके अलावा ऑडियो कैसेटों के बढ़ते प्रचलन की वजह से इस पर्व की मौलिकता ही समाप्त होती जा रही है। यदि समय रहते व्याप्त हो रही कुरीतियों व शराब के चलन की समाप्ति का प्रयास नहीं किया गया तो यह पर्व अपना मूल रूप खो बैठेगा।

अदालत ने तो निर्णय दे दिया, पर क्या कट्टरपंथी हिजाब पर विवाद समाप्त होने देंगे?

हिजाब का मुद्दा तब आया तब पांच राज्यों में चुनाव चल रहा था। हिजाब का मामला जैसे ही सामने आया, देश भर में प्रदर्शन होने लगे। इससे लगा कि ये विवाद जानकर पैदा किया जा रहा है ताकि चुनाव वाले राज्यों में इसका लाभ लिया जा सके।

अशोक मधुप

हाल में पैदा हुए हिजाब के विवाद पर आई याचिकाओं को भले ही कर्नाटक उच्च न्यायालय ने निरस्त कर दिया हो, किंतु लगता यह है कि ये विवाद अभी जारी रहेगा। इसको हवा देने वाले मानने वाले नहीं हैं। इस मामले को हवा देने वाले तत्व मुस्लिमों को एकजुट रखने के लिए और सरकार के सामने कानून व्यवस्था की चुनौती पैदा करने के लिए अभी इस मुद्दे को जिंदा रखना चाहेंगे। वे चाहेंगे कि केंद्र सरकार बदनाम हो। दुनिया में उसकी सेक्युलर छवि न बन पाए। वैसे भी सर्वोच्च न्यायालय में इस मसले के जाने और निर्णय आने तक तो इसे जिंदा रखा ही जा सकता है। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने इस मामले की सुनवाई पूरी की। उसने शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब पर प्रतिबंध को चुनौती देने वाली विभिन्न याचिकाओं को खारिज कर दिया।

न्यायालय ने अपना फैसला सुनाते वक्त टिप्पणी की कि हिजाब कोई धार्मिक प्रतीक नहीं है। हिजाब पहनना जरूरी नहीं है। उल्लेखनीय है कि उडुपी के एक प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेज की छात्राओं के एक समूह की कक्षाओं में उन्हें हिजाब पहनने देने की मांग से तब एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया था जब इसके विरोध में कुछ हिंदू विद्यार्थी भगवा शॉल पहनकर पहुंच गए थे। जबकि सरकार वर्दी संबंधी नियम पर अड़ी रही। उसका कहना था कि कॉलेज का एक ड्रेस कोड है, उसका कॉलेज में पालन करना होगा। यह मुद्दा राज्य के साथ-साथ देश के अन्य हिस्सों में फैल गया। कई जगह प्रदर्शन हुए। कर्नाटक में तो मामले को तूल पकड़ते देख स्कूल कॉलेज तक बंद करने पड़े।

हिजाब मामले की सुनवाई के लिए उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ऋतुराज अवस्थी, न्यायमूर्ति कृष्ण एस दीक्षित एवं न्यायमूर्ति जेएम काजी की पीठ गठित की गयी। याचिका दायर करने वाली लड़कियों ने अनुरोध किया था कि उन्हें कक्षाओं में स्कूली वर्दी के साथ-साथ हिजाब पहनने की अनुमति दी जाए क्योंकि यह उनकी धार्मिक आस्था का हिस्सा है। माना जाता है कि कुछ तत्व हैं जो हिजाब, नागरिकता संशोधन विधेयक या अन्य मुद्दों को लेकर सरकार के सामने समस्याएं बनाए रखना चाहते हैं। हिजाब का मुद्दा तब आया तब पांच राज्यों में चुनाव चल रहा था। हिजाब का मामला जैसे ही सामने आया, देश भर में प्रदर्शन होने लगे। इससे लगा कि ये विवाद जानकर पैदा किया जा रहा है ताकि चुनाव वाले राज्यों में इसका लाभ लिया जा सके। सरकार के विरुद्ध मुस्लिमों को एकजुट किया जा सके। आज दुनिया भर में मुस्लिम महिलाएं पर्दे का विरोध करती रही हैं। ये इससे निकल कर खुले आकाश में सांस लेना चाहती हैं। चाहती हैं कि उन्हें पर्दे से आजादी मिले। सानिया मिर्जा के शुरू के खेल के समय उसके द्वारा पहनी जाने वाली ड्रेस पर भी कुछ कट्टरपंथियों ने आवाज उठाई थी। उस समय सानिया ने कहा था कि मेरा खेल देखिए ड्रेस नहीं। दूसरे पूरे शरीर को ढंककर खेल हो भी नहीं सकते। अभी हाल में अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार आई। वहां की युवती और महिलाओं से पूछो कि क्या वह इसे स्वीकार करती हैं। अफगानिस्तान में अमेरिकी दखल के बाद वहां की युवतियों के लिए खुले स्कूल, कॉलेज के द्वार उनके लिए बंद हो गए। अब तक वह कहीं भी आ जा सकती थीं। वे अब तक नौकरी कर रहीं थीं।

अपने व्यवसाय में लगीं थीं। तालिबान के आने के बाद उनका वह सब छिन गया। आज वे घरों में कैद होकर रह गई हैं। कोर्ट में याचिका डालने वाली कुछ युवतियां आज स्कूल ड्रेस के साथ हिजाब पहनने की बात कर रही हैं। उधर बड़ी तादाद में यूरोप की तर्ज पर युवतियों द्वारा कपड़ों का साइज घटाने की मांग होती रही है। भारत में युवतियां चाहती हैं कि वह जो चाहें, वह पहनें। इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। कुछ लोगों को छोड़ सभी चाहते हैं और मानते हैं कि युवतियां अपनी मर्जी के वस्त्र पहनें और आगे बढ़ें। अब तो देश की फौज के द्वार भी उनके लिए खोल दिए गए हैं, किंतु शिक्षण संस्थाओं का एक ड्रेस कोड है। उसका वहां पालन होना चाहिए। यह ड्रेस कोड इसलिए है कि सारे छात्र-छात्राएं एक जैसे दिखाई दें। गरीब-अमीर का उनमें फर्क न आए। ऊंच-नीच की भावना उनमें घर न कर सके। इस निर्णय के बाद अच्छा है कि हिजाब पहनने की मांग करने वाली युवतियों को सदबुद्धि आ जाए, किंतु लगता है कि ऐसा होने वाला नहीं है।

ब्रेक फेल गाड़ी की तरह दौड़ रही कांग्रेस ना जाने कहाँ जाकर टकरायेगी

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

कांग्रेस में कई अत्यंत सुयोग्य, प्रभावशाली और लोकप्रिय नेता अब भी हैं लेकिन वे नेशनल कांग्रेस (एनसी) याने 'नौकर-चाकर कांग्रेस' बन गए हैं। मालिक कुर्सी खाली करने को तैयार हैं लेकिन नौकरों की हिम्मत नहीं पड़ रही है कि वे उस पर बैठ जाएं।

पांच राज्यों के चुनाव में करारी हार के बाद कांग्रेस की कार्यसमिति की बैठक में वही हुआ, जो पहले भी हुआ करता था। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि यदि पार्टी कहे तो हम तीनों (माँ, बेटा और बेटी) इस्तीफा देने को तैयार हैं। पांच घंटे तक चली इस बैठक में एक भी कांग्रेसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह नेतृत्व-परिवर्तन की बात खुलकर कहता। जो जी-23 समूह कहलाता है, जिस समूह ने कांग्रेस के पुनरोद्धार के लिए आवाज बुलंद की थी, उसके कई मुखर सदस्य भी इस बैठक में मौजूद थे लेकिन जी-23 अब जी-हुजूर-23 ही सिद्ध हुए। उनमें से एक आदमी की भी हिम्मत नहीं पड़ी कि वह कांग्रेस के नए नेतृत्व की बात छेड़ता। सोनिया गांधी का रवैया तो प्रशंसनीय है ही और उनके बेटे राहुल गांधी को मैं दाद देता हूं कि उन्होंने कांग्रेस-अध्यक्ष पद छोड़ दिया लेकिन मुझे कांग्रेसियों पर तरस आता है कि उनमें से एक भी नेता ऐसा नहीं निकला, जो खम ठोककर मैदान में कूद जाता। वह कैसे कूदे? पिछले 50-55 साल में कांग्रेस कोई राजनीतिक पार्टी नहीं रह गई है। वह पोलिटिकल पार्टी की जगह प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बन गई है। उसमें कई अत्यंत सुयोग्य, प्रभावशाली और लोकप्रिय नेता अब भी हैं लेकिन वे नेशनल कांग्रेस (एनसी) याने 'नौकर-चाकर कांग्रेस' बन गए हैं। मालिक कुर्सी खाली करने को तैयार हैं लेकिन नौकरों की हिम्मत नहीं पड़ रही है कि वे उस पर बैठ जाएं। उन्हें दरी पर बैठे रहने की लत पड़ गई है। यदि कांग्रेस का नेतृत्व लंगड़ा हो चुका है तो उसके कार्यकर्ता लकवाग्रस्त हो चुके हैं। कांग्रेस की यह बीमारी हमारे लोकतंत्र की महामारी बन गई है। देश की लगभग सभी पार्टियां इस महामारी की शिकार हो चुकी हैं। भारतीय मतदाताओं के 50 प्रतिशत से भी ज्यादा वोट प्रांतीय पार्टियों को जाते हैं। ये सब पार्टियां पारिवारिक बन गई हैं। कांग्रेस चाहे तो आज भी देश के लोकतंत्र में जान फूंक सकती है। देश का एक भी जिला ऐसा नहीं है, जिसमें कांग्रेस विद्यमान न हो। देश की विधानसभाओं में आज भाजपा के यदि 1373 सदस्य हैं तो कांग्रेस के 692 सदस्य हैं। लेकिन पिछले साढ़े छह साल में कांग्रेस 49 चुनावों में से 39 चुनाव हार चुकी है। उसके पास नेता और नीति, दोनों का अभाव है। मोदी सरकार की नीतियों की उल्टी-सीधी आलोचना ही उसका एक मात्र धंधा रह गया है। उसके पास भारत को महासंपन्न और महाशक्तिशाली बनाने का कोई वैकल्पिक नक्शा भी नहीं है। कांग्रेस अब पचमढ़ी की तरह नया 'चिंतन-शिविर' करने वाली है। उसे अब चिंतन शिविर नहीं, चिंता शिविर करने की जरुरत है। यदि कांग्रेस का ब्रेक फेल हो गया तो भारतीय लोकतंत्र की गाड़ी कहां जाकर टकराएगी, कुछ नहीं कहा जा सकता।

NCR समाचार

संपादकीय कार्यालय

जी-12/276, संगम विहार, नई दिल्ली-110062. सोमवार से शनिवार प्रात: 9:00 से सायं 9:00

फोन: 8888883968, 9811111715

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अत: भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

संक्षिप्त समाचार

सेबी प्रमुख माधवी पुरी बुच ने सीतारमण से की मुलाकात

नयी दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच ने बृहस्पतिवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की। माधवी पुरी सेबी की पहली महिला प्रमुख हैं। सीतारमण के कार्यालय ने ट्वीट किया, ''सेबी की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की।''बुच को शुरुआत में तीन साल के लिए सेबी का चेयरपर्सन नियुक्त किया गया है। उन्होंने दो मार्च को कार्यभार संभाला। वह इससे पहले आईसीआईसीआई बैंक समेत निजी क्षेत्र के कई बैंकों में शीर्ष पदों पर रह चुकी हैं।

असम सरकार ने 2022-23 का बजट पेश किया, पुराने वाहनों पर हरित कर का प्रस्ताव

गुवाहाटी। असम सरकार ने बुधवार को राज्य विधानसभा में वित्त वर्ष 2022-23 के लिए 600.36 करोड़ रुपये का घाटे का बजट पेश किया। बजट में पुराने वाहनों पर 'हरित कर' लगाने का प्रस्ताव किया गया है। इससे लोगों को प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के इस्तेमाल से हतोत्साहित किया जा सकेगा। असम की वित्त मंत्री अजंता नियोग ने बजट पेश करते हुए कहा कि सरकार विभिन्न सेवाओं के लिए दरों में बढ़ोतरी करेगी।

सरकार का शहरी क्षेत्रों में शराब की दुकानों के लिए लाइसेंस शुल्क बढ़ाने, वन उत्पादकों के लिए रॉयल्टी और राज्य में सभी वनों में प्रवेश शुल्क बढ़ाने का प्रस्ताव है। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि यह बढ़ोतरी कितनी होगी। नियोग ने अपने बजट भाषण में कहा कि राज्य की कुल प्राप्तियां 2,83,914.78 करोड़ रुपये और खर्च 2,83,494.64 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है। उन्होंने बताया कि इस लिहाज से 420.14 करोड़ रुपये का अधिशेष बनता है। लेकिन शुरुआती घाटा 1,020.50 करोड़ रुपये है। इस तरह 2022-23 में 600.36 करोड़ रुपये के बजट घाटे का अनुमान है।

फेसमास्क पहने रखकर अनलॉक कर सकेंगे आईफोन, एप्पल ने किया अपडेट जारी

ह्यूस्टन। स्मार्टफोन कंपनी एप्पल ने एक सॉफ्टवेयर अपडेट जारी किया है जो आईफोन उपयोगकर्ताओं को यह सुविधा देगा कि वे चेहरे पर मास्क पहने रखते हुए भी अपनी डिवाइस को अनलॉक कर सकेंगे। नया अपडेट आईओएस 15.4 सोमवार को जारी किया गया और इसमें आईफोन के लिए कई अन्य फीचर भी दिए गए हैं। एप्पल ने एक बयान में कहा कि इस नए फीचर के साथ उपयोगकर्ता मास्क पहने रखकर भी फेस आईडी के माध्यम से अपने आईफोन को अनलॉक कर सकेंगे। इसमें बताया गया कि डिवाइस को अपडेट करने पर उपयोगकर्ताओं को वेलकम स्क्रीन पर मास्क के साथ फेस आईडी इस्तेमाल करने का विकल्प मिलेगा।

एसजेवीएन को गुजरात में मिली 100 मेगावॉट की सौर परियोजना

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी एसजेवीएन को गुजरात में शुल्क आधारित प्रतिस्पर्धी बोली में 100 मेगावॉट क्षमता की सौर बिजली परियोजना मिली है। एसजेवीएन के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक नंद लाल शर्मा ने बुधवार को एक बयान में कहा कि कंपनी को गुजरात में शुल्क आधारित प्रतिस्पर्धी बोली में ग्रिड से जुड़ने वाली 100 मेगावॉट क्षमता की सौर बिजली परियोजना मिली है।

बोली का आयोजन गुजरात ऊर्जा विकास निगम लि. (जीयूवीएनएल) ने किया था। शर्मा ने कहा कि परियोजना से सालाना 24.53 करोड़ यूनिट बिजली पैदा होगी। कुल मिलाकर 25 साल में करीब 613.2 करोड़ यूनिट बिजली पैदा होगा। परियोजना से उत्पादित बिजली 25 साल के लिये जीयूवीएनएल खरीदेगी। जल्दी ही एसजेवीएन और जीयूवीएनएल के बीच बिजली खरीद समझौता होगा। परियोजना की अनुमानित लागत करीब 500 करोड़ रुपये है।

कपिल शर्मा और नंदिता दास ने ओडिशा के मुख्यमंत्री से शिष्टाचार मुलाकात की

भुवनेश्वर। प्रख्यात हास्य कलाकार कपिल शर्मा और प्रसिद्ध अभिनेत्री-निर्देशक नंदिता दास ने बृहस्पतिवार को यहां ओडिशा के मुख्यमंत्री के आवास पर उनसे मुलाकात की। पटनायक और दोनों कलाकारों के बीच यह बैठक 15 मिनट तक चली। ओडिशा से संबंध रखने वाली नंदिता फिलहाल भुवनेश्वर में कपिल के साथ अपनी आगामी फिल्म की शूटिंग कर रही हैं। मुख्यमंत्री ने उन्हें भारतीय हॉकी टीम की जर्सी औरचांदी का कोणार्क चक्र भेंट किया। पटनायक ने ट्वीट किया, अभिनेता-कॉमेडियन कपिल शर्मा और फिल्म निर्माता नंदिता दास से मिलकर खुशी हुई, जिन्होंने भुवनेश्वर में अपनी आगामी फिल्म की शूटिंग से समय निकाला है।

आईएमएफ ने कहा- यूक्रेन संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है

वाशिंगटन। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) ने बृहस्पतिवार को कहा कि यूक्रेन पर रूस के हमले का दुनिया पर होने वाले आर्थिक असर का नकारात्मक प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। जबकि चीन पर तत्काल इसका प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। आईएमएफ के संचार विभाग के निदेशक गेरी राइस ने यहां संवाददाताओं से कहा, युद्ध के वैश्विक आर्थिक प्रभाव का विभिन्न माध्यमों से भारत की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ने की आशंका है। राइस ने कहा कि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम में तेजी का व्यापार पर प्रतिकूल पड़ेगा। साथ ही इसका वृहत-आर्थिक प्रभाव भी होगा। इससे मुद्रास्फीति और चालू खाते का घाटा बढ़ेगा। राइस ने कहा, लेकिन चालू खाते पर प्रभाव संभावित रूप से उन वस्तुओं की कीमतों में अनुकूल बदलाव से कम हो सकता है जो भारत निर्यात करता है। इसमें गेहूं शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि यूक्रेन में युद्ध का अमेरिका, यूरोपीय संघ और चीनी अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव से भारत की निर्यात मांग पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। जबकि आपूर्ति श्रृंखला बाधित होने से भारत के आयात की मात्रा और कीमतों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। मुद्राकोष के अनुसार, भारत के लिये परिदृश्य को लेकर अनिश्चितता बढ़ने का जोखिम है। वहीं दूसरी तरफ आईएमएफ ने कहा कि युद्ध का चीन पर तत्कालिक प्रभाव कम होगा। राइस ने कहा, चीन पर यूक्रेन संकट का तत्काल प्रभाव अपेक्षाकृत कम होने की संभावना है। तेल की ऊंची कीमत आगे चलकर घरेलू खपत और निवेश को प्रभावित कर सकती है, लेकिन मूल्य सीमा प्रभाव को सीमित करेगी।

वैश्विक संकट के बावजूद भारत पुनरुद्धार के रास्ते पर अग्रसर: आरबीआई लेख

एजेंसी

मुंबई। यूक्रेन पर रूस के हमले के कारण उत्पन्न भू-राजनीतिक संकट के बावजूद भारत पुनरुद्धार के रास्ते पर बढ़ रहा है। इसका कारण देश का महामारी की तीसरी लहर से बाहर आना है। हालांकि, वैश्विक चुनौतियों को देखते हुए जोखिम बना हुआ है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के एक लेख में यह कहा गया है। आरबीआई बुलेटिन में 'अर्थव्यवस्था की स्थिति' विषय पर प्रकाशित लेख में कहा गया है कि देश की वृहत आर्थिक बुनियाद मजबूत बनी हुई है। लेकिन वैश्विक गतिविधियों के प्रभाव को देखते हुए जोखिम बना हुआ है। इसमें कहा गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी महामारी से बाहर आने को संघर्ष कर ही रही थी, ऐसे में भू-राजनीतिक संकट ने वैश्विक वृहत आर्थिक और वित्तीय परिदृश्य को लेकर अनिश्चिता बढ़ा दी है। लेख के अनुसार, तेल और गैस के बढ़ते दाम तथा वित्तीय बाजारों में उठा-पटक वैश्विक पुनरुद्धार के लिये नई चुनौतियां हैं। 'इस कठिन समय में भारत घरेलू मोर्चे पर प्रगति कर रहा है। इसका प्रमुख कारण देश का तीसरी लहर के प्रभाव से बाहर आना है। रिजर्व बैंक ने यह साफ किया है कि लेख में विचार लेखकों के हैं और कोई जरूरी नहीं है कि वह केंद्रीय बैंक की सोच से मिलते हों। इस लेख को आरबीआई के अधिकारियों ने लिखा है। इसमें कहा गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था यूक्रेन पर हमले से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर रही है। तेल की कीमतें कई साल के उच्चस्तर पर पहुंच गई, वित्तीय बाजारों में उतार-चढ़ाव है। यह सोने जैसे सुरक्षित समझी जाने वाली संपत्तियों में निवेश का नतीजा है। लेखकों के अनुसार, ''इन कठिन चुनौतियों के बीच, मुद्रास्फीति में वृद्धि और वित्तीय स्थिरता जोखिम बढ़ने से वैश्विक वृद्धि परिदृश्य कमजोर हुआ है।'' ''युद्ध का शीघ्र समाधान नहीं होने पर, संकट का वैश्विक पुनरुद्धार पर काफी प्रतिकूल असर पड़ेगा। इससे 2022 और उसके बाद वैश्विक वृद्धि के अनुमान को घटाने की जरूरत पड़ सकती है।''लेख में कहा गया है कि घरेलू मोर्चे पर रेस्तरां और सिनेमा हॉल जैसे सेवा क्षेत्र से जुड़ा कामकाज अब सामान्य हो रहे हैं। आवाजाही के संकेतक मार्च, 2022 में उल्लेखनीय सुधार को अभिव्यक्त करते हैं। इसके अनुसार, ''आवाजाही की स्थिति में सुधार तथा सिनेमा हॉल और रेस्तरां जैसे सेवा क्षेत्र के खुलने के साथ बिजली उत्पादन में मार्च महीने में तेजी न केवल पिछले महीने बल्कि महामारी-पूर्व स्तर से भी अधिक है।'' साथ ही ई-वे बिल का सृजन महामारी-पूर्व स्तर से अधिक है। तुलनात्मक प्रभाव कमजोर होने के बावजूद पथकर संग्रह भी फरवरी, 2022 में बढ़ा है। लेख में कहा गया है कि आवाजाही बढ़ने से डीजल और पेट्रोल की खपत फरवरी, 2022 में बढ़ी। हालांकि, विमान ईंधन की मांग में कमी से कुल पेट्रोलियम खपत कम रही। वितरण में लगने वाले समय के साथ पंजीकरण में बाधा से वाहनों की खुदरा बिक्री स्थिर बनी हुई है। इसके अनुसार, सकल राजकोषीय घाटा 2021-22 में अप्रैल-जनवरी के दौरान कम होकर संशोधित अनुमान का 58.9 प्रतिशत पर आ गया है।

SEBI ने रवि किरण रियल्टी इंडिया, प्रवर्तकों की संपत्तियां बेचीं

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने निवेशकों के पैसे की वसूली के लिए ऑनलाइन नीलामी के जरिये रवि किरण रियल्टी इंडिया लिमिटेड और उसके प्रवर्तकों से संबंधित संपत्तियों को 1.66 करोड़ रुपये में बेच दिया है। सेबी ने एक नोटिस में कहा कि पश्चिम बंगाल में स्थित इसकी तीन संपत्तियों को विशोधन डेवलपर्स को बेचा गया है। 14 फरवरी को हुई ई-नीलामी में विशोधन डेवलपर्स सबसे ज्यादा बोली लगाने वाली कंपनी के रूप में उभरी। नियामक निवेशकों के पैसे की वसूली के लिए रवि किरण रियल्टी इंडिया और उसके प्रवर्तकों की संपत्तियों की नीलामी कर रहा है। कंपनी ने सार्वजनिक निर्गम मानदंडों का पालन किए बिना 1,176 लोगों को विमोचन योग्य तरजीही शेयर (आरपीएस) जारी करके धन जुटाया था। मानदंडों के तहत कंपनी को अपनी प्रतिभूतियों को मान्यता प्राप्त बाजार में सूचीबद्ध करना आवश्यक था क्योंकि शेयर 50 से अधिक व्यक्तियों को जारी किए गए थे। अन्य बातों के अलावा, एक विवरणिका दाखिल करना भी आवश्यक था, जो वह करने में विफल रही। मार्च, 2016 में सेबी ने कंपनी को निवेशकों का पैसा वापस करने का आदेश दिया था। हालांकि, वह ऐसा करने में विफल रही और इसके बाद नियामक ने कंपनी और उसके प्रवर्तकों या निदेशकों के खिलाफ वसूली की प्रक्रिया शुरू की।

भारत का चीनी निर्यात अक्टूबर से फरवरी के बीच ढाई गुना होकर 47 लाख टन पर

एजेंसी

नयी दिल्ली। ऊंचे उत्पादन और वैश्विक बाजार की बेहतर मांग के कारण अक्टूबर, 2021 और फरवरी, 2022 के बीच चीनी निर्यात 2.5 गुना होकर 47 लाख टन पर पहुंच गया। उद्योग मंडल इस्मा ने यह जानकारी दी है। चीनी विपणन वर्ष अक्टूबर से सितंबर तक चलता है।

एक साल पहले की समान अवधि में चीनी का निर्यात 17.75 लाख टन हुआ था। इस्मा के आंकड़ों के अनुसार, अधिक गन्ना उत्पादन और बेहतर उपज के कारण इस साल अक्टूबर, 2021 से 15 मार्च, 2022 के बीच चीनी उत्पादन नौ प्रतिशत बढ़कर 283.26 लाख टन हो गया। इस्मा ने एक बयान में कहा, ''15 मार्च, 2022 तक 283.26 लाख टन चीनी का उत्पादन किया गया है, जबकि पिछले साल 15 मार्च, 2021 तक 259.37 लाख टन चीनी का उत्पादन किया गया था।''15 मार्च, 2022 तक, 81 मिलों ने पेराई बंद कर दी है और देश में 435 चीनी मिलें अभी भी पेराई कर रही हैं।

महाराष्ट्र में चीनी का उत्पादन 94.05 लाख टन से बढ़कर 108.95 लाख टन हो गया। उत्तर प्रदेश में यह 84.25 लाख टन से घटकर 78.33 लाख टन रह गया। कर्नाटक में चीनी का उत्पादन 41.95 लाख टन से बढ़कर 54.65 लाख टन हो गया। एथनॉल के मोर्चे पर, कुल 416.33 करोड़ लीटर एलओआई (आशय पत्र) की मात्रा के मुकाबले 13 मार्च, 2022 तक 113.17 करोड़ लीटर एथनॉल की आपूर्ति की गई है। अबतक की कुल आपूर्ति में से लगभग 86 प्रतिशत गन्ने का शीरा / बी भारी शीरे से बना एथनॉल शामिल है। ओएमसी (तेल विपणन कंपनियों) द्वारा जारी लगभग 416 करोड़ लीटर के एलओआई की तुलना में मिलों ने अब तक 391.85 करोड़ लीटर की आपूर्ति करने का अनुबंध किया है। इस्मा ने कहा, ''दिसंबर, 2021 से मार्च के मध्य तक देश ने औसतन 9.45 प्रतिशत का सम्मिश्रण प्रतिशत का स्तर हासिल किया है।'' रिपोर्टों के अनुसार, अब तक लगभग 64-65 लाख टन चीनी निर्यात का अनुबंध किया गया है। इस्मा ने कहा, ''चालू चीनी वर्ष में फरवरी, 2022 के अंत तक भारत से लगभग 47 लाख टन चीनी का निर्यात किया गया है, जबकि पिछले साल इसी अवधि के दौरान लगभग 17.75 लाख टन चीनी का निर्यात किया गया था।''

न्यायालय ने अमेजन की याचिका पर फ्यूचर से जवाब-तलब किया

एजेंसी

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को अमेरिका की ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन की अंतरिम याचिका पर फ्यूचर समूह से जवाब-तलब किया। याचिका में फ्यूचर रिटेल (एफआरएल) के रिलायंस रिटेल के साथ विलय सौदे को लेकर मध्यस्थता कार्यवाही शुरू करने की अनुमति देने और एफआरएल की संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश देने का आग्रह किया गया है। मुख्य न्यायाधीश एन वी रमण, न्यायाधीश ए एस बोपन्ना और न्यायाधीश हिमा कोहली की पीठ के समक्ष अमेजन ने यह भी आग्रह किया कि न्यायालय ऐसा आदेश दे, जिससे एफआरल की संपत्तियां बनी रहें ताकि अगर वह मध्यस्थता कार्यवाही में जीतता है, तो ये संपत्तियां उसके लिये उपलब्ध रहे। पीठ ने अमेरिकी कंपनी की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ताओं गोपाल सुब्रमण्यम और रंजीत कुमार से कहा, ''हम इस पर 23 मार्च को सुनवाई करेंगे और कुछ आदेश देंगे। इस बीच, आप (फ्यूचर रिटेल लि. और फ्यूचर कूपन्स प्राइवेट लि.) इस बारे में अपना जवाब दें।''शुरू में पीठ ने कहा कि अगर अमेजन तत्काल कुछ अंतरिम आदेश चाहती है, तब वह दिल्ली उच्च न्यायालय जा सकती है या मध्यस्थता न्यायाधिकरण से मध्यस्थता कार्यवाही शुरू करने को लेकर राहत का आग्रह कर सकती है। इस पर कंपनी की तरफ से पेश सुब्रमण्यम ने कहा, ''मैं इस न्यायालय के आदेश का इंतजार करूंगा।''फ्यूचर रिटेल लि. (एफआरएल) और फ्यूचर कूपन्स प्राइवेट लि. (एफसीपीएल) की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और मुकुल रोहतगी ने कहा कि वे मध्यस्थता कार्यवाही के लिये सहमत थे। साल्वे ने कहा, ''मैं कल इस बात के लिये सहमत था। हमें आगे कार्यवाही की जरूरत नहीं है।'' अमेजन ने मंगलवार को कहा था कि बातचीत के जरिये निपटान के लिए 10 दिन में सहमति बनाने की कोशिश कामयाब नहीं हो पाई है। गत तीन मार्च को पीठ ने अमेजन को बातचीत के लिए 10 दिन का वक्त दिया था। पीठ दिल्ली उच्च न्यायालय के पांच जनवरी के आदेश के खिलाफ अमेजन की अपील पर सुनवाई कर रही है। उच्च न्यायालय ने रिलायंस रिटेल के साथ फ्यूचर रिटेल के विलय सौदे पर मध्यस्थता न्यायाधिकरण के समक्ष मध्यस्थता की कार्यवाही पर रोक लगा दी थी।

SC ने केरल सरकार को लगाई फटकार, कहा- मंत्री के पर्सनल स्टाफ को 2 साल की सर्विस के बाद देते हैं आजीवन पेंशन

एजेंसी

केरल। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केरल राज्य सड़क परिवहन निगम (केएसआरटीसी) को प्रदेश के स्वामित्व वाली तेल विपणन कंपनियों द्वारा बेचे जाने वाले थोक डीजल की कीमतों में वृद्धि के खिलाफ याचिका दायर करने के लिए फटकार लगाई। कोर्ट में दाखिल अर्जी में केएसआरटीसी ने ऑयल मार्केटिंग कंपनी (OMC) पर मनमानी का आरोप लगाया। जस्टिस अब्दुल नजीर और जस्टिस कृष्ण मुरारी की पीठ ने केरल सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि यहां तो आपके पैसे की कमी लग रही है। लेकिन आप अपने मंत्रियों के लिए पर्सनल स्टाफ 2 साल के लिए भी नियुक्त करते हैं तो उनको आजीवन पेंशन देते हैं। तब कैसे आपके पास अफरात धन होता है, तब आपको पैसे की कमी नहीं खलती? दरअसल केरल राज्य सड़क परिवहन निगम (केएसआरटीसी) ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दाखिल कर कहा कि सार्वजनिक उपक्रम यानी पीएसयू के तहत आने वाली ऑयल मार्केटिंग कंपनी (OMC) ने बड़ी मात्रा में डीजल खरीदने और खपत करने वालों को 1 फरवरी से बाजार भाव से महंगा डीजल सप्लाई करने की नीति बनाई है। जिससे जनता पर बोझ बढ़ता जा रहा है। OMC का यह फैसला मनमाना और भेदभावपूर्ण है। OMC ने पहले से ही बढ़ते जा रहे आर्थिक बोझ की दुहाई दी तो सुप्रीम कोर्ट ने उसे फटकार लगाते हुए कहा कि अपने गैर जरूरी खर्चों पर तो आप ध्यान नहीं देते और दूसरी ओर शिकंजा कसते हैं।

ATF के दामों में 18 प्रतिशत की भारी वृद्धि, रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचीं विमान ईंधन की कीमतें

नयी दिल्ली। विमान ईंधन या एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) की कीमतों में बुधवार को अब तक की सर्वाधिक 18 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी की गई। इससे देशभर में एटीएफ के दाम रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गए हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी के बीच एटीएफ के दाम बढ़ाए गए हैं। जेट ईंधन की कीमत इस साल छठी बार बढ़ाई गई है जिसके कारण एटीएफ के दाम पहली बार एक लाख रुपये प्रति किलोलीटर के आंकडे को पार कर गए हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियों की मूल्य अधिसूचना के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी में एटीएफ का दाम 17,135.63 रुपये प्रति किलोलीटर या 18.3 फीसदी की वृद्धि के साथ 1,10,666.29 रुपये प्रति किलोलीटर पर पहुंच गया है। यह एटीएफ कीमतों का रिकॉर्ड स्तर है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतें भी पिछले हफ्ते 14 साल के सर्वकालिक उच्च स्तर करीब 140 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गई थीं।

गडकरी ने हरित हाइड्रोजन आधारित इलेक्ट्रिक वाहन टोयोटा मिराई को 'पेश' किया

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को हरित हाइड्रोजन आधारित आधुनिक फ्यूल सेल इलेक्ट्रिक वाहन (एफसीईवी) टोयोटा मिराई को पेश किया। गडकरी ने कहा कि यह भारत में अपनी तरह की पहली परियोजना है जिसका उद्देश्य देश में इस तरह के वाहनों के लिए परिवेश तैयार करना है। उन्होंने कहा कि हाइड्रोजन से चलने वाले एफसीईवी शून्य कार्बन उत्सर्जन समाधान में सबसे बेहतर है। उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह से पर्यावरण अनुकूल है और इसमें पानी के अतिरिक्त कोई और उत्सर्जन नहीं होता। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर और इंटरनेशनल सेंटर फॉर ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी (आईसीएटी) हाइड्रोजन से चलने वाली एफसीईवी टोयोटा मिराई का भारतीय सड़कों और मौसमी परिस्थितियों में अध्ययन एवं आकलन करने के लिए आरंभिक परियोजना चला रही हैं। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, आर के सिंह और महेंद्र नाथ पांडेय भी उपस्थित थे। इससे पहले गडकरी ने कहा था कि वह खुद टोयोटा की मिराई का इस्तेमाल करना शुरू करेंगे। वहीं टोयोटा ने कहा कि उसने मिराई को 2014 में पेश किया गया था और यह दुनिया के पहले हाइड्रोजन ईंधन वाले इलेक्ट्रिक वाहनों में से एक है। यह वाहन एक बार चार्ज करने के बाद 650 किलोमीटर दौड़ सकता है।

वर्ष 2021-22 में सरसों का उत्पादन 29 प्रतिशत बढ़कर 109.5 लाख रहने का अनुमान

एजेंसी

नयी दिल्ली। खाद्य तेल उद्योग के निकाय सीओओआईटी ने फसल वर्ष 2021-22 के रबी सत्र में देश का सरसों का उत्पादन 29 प्रतिशत बढ़कर 109.50 लाख टन पर पहुंचने का अनुमान लगाया है। रबी (जाड़े के मौसम) सत्र में उगाये जाने वाले सरसों दाना (तिलहन) का उत्पादन पिछले वर्ष 85 लाख टन हुआ था। सीओओआईटी ने सोमवार को एक बयान में कहा कि केंद्रीय तेल उद्योग और व्यापार संगठन (सीओओआईटी) ने अपने 42वें वार्षिक सम्मेलन के दौरान सरसों के उत्पादन के अनुमानों को अंतिम रूप दिया। यह सम्मेलन 12-13 मार्च को राजस्थान के भरतपुर में आयोजित किया गया था। सीओओआईटी ने सोमवार को एक बयान में कहा कि आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021-22 में सरसों का उत्पादन 109.5 लाख टन होने का अनुमान है। सरसों खेती का रकबा 87.44 लाख हेक्टेयर आंका गया है, जबकि औसत उपज 1,270 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होने का अनुमान लगाया गया है। सीओओआईटी के अध्यक्ष सुरेश नागपाल ने कहा, ''हमने पूरे भारत में विभिन्न टीमों द्वारा व्यापक क्षेत्र का दौरा करने के बाद इस रबी सत्र में सरसों के उत्पादन के अनुमान को अंतिम रूप दिया है। सरसों का उत्पादन रिकॉर्ड 109.5 लाख टन तक बढ़ने की संभावना है।''उन्होंने कहा कि सरसों के उत्पादन में संभावित वृद्धि को देखते हुए सरसों तेल का उत्पादन भी अधिक होगा। उन्होंने कहा कि इससे देश के कुल खाद्य तेल आयात में कमी आ सकती है। नागपाल ने कहा, ''किसानों ने इस रबी सत्र के दौरान सरसों की फसल का रकबा बढ़ाया है क्योंकि उन्हें पिछले साल की फसल से बेहतर कीमत मिली है।''सरसों दाना, रबी के मौसम में ही उगाया जाता है। इसकी बुवाई अक्टूबर से शुरू होती है, जबकि कटाई मार्च में शुरू होती है। सरसों राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। राजस्थान देश का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। वर्ष 2021-22 के रबी सत्र के दौरान सरसों का उत्पादन बढ़कर 49.50 लाख टन होने की उम्मीद है, जो पिछले वर्ष 35 लाख टन था।

संक्षिप्त समाचार

रूसी सीमा पर चीनी सैनिकों की तस्वीर की खबर फर्जी : चीन

बीजिंग| चीन ने रूसी सीमा पर सैनिकों से भरे चीनी सैन्य ट्रकों के एक काफिले को प्रदर्शित करने वाली तस्वीर सहित रूस में अपने सैनिक भेजे जाने के बारे में अफवाहों को खारिज किया है। शुक्रवार को मीडिया में आई एक खबर में यह कहा गया है। चीन के इंटरनेट निगरानीकर्ता, साइबरस्पेस एडमिंस्ट्रेशन ऑफ चाइना (सीएसी) ने कहा कि ट्विटर पर साझा की जा रही एक तस्वीर 2021 में पहली बार प्रकाशित तस्वीर का एक संक्षिप्त (क्रॉप किया हुआ) प्रारूप है। चीन ने इससे पहले इन खबरों को खारिज कर दिया था कि रूस ने यूक्रेन में सैन्य अभियान के लिए उससे सैन्य सहायता मांगी है। हांगकांग से प्रकाशित होने वाले साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की शुक्रवार की खबर के अनुसार, सीएसी ने बृहस्पतिवार को कहा कि ऑनलाइन मंच पर ऐसी कई फर्जी खबरें हैं जो यूक्रेन युद्ध में चीन के रुख को बदनाम करने वाली हैं। उल्लेखनीय है कि रात में गुजर रहे और सैनिकों से भरे हुए चीनी सैन्य वाहनों के एक लंबे काफिले की ट्विटर पर एक तस्वीर साझा की जा रही, जिससे इन अटकलों को जोर मिला है कि रूस को चीन सहायता उपलब्ध करा रहा है। सीएसी ने कहा कि यह असल में मई 2021 की एक तस्वीर का संपादित किया हुआ प्रारूप है।

दुष्प्रचार के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का इस्तेमाल कर रहा रूस: पश्चिमी देश

संयुक्त राष्ट्र| अमेरिका सहित छह पश्चिमी देशों ने रूस पर गलत सूचनाएं फैलाने, दुष्प्रचार करने, और यूक्रेन पर आक्रमण को जायज ठहराने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, अल्बानिया, आयरलैंड और नॉर्वे ने सुरक्षा परिषद के सत्र से पहले एक संयुक्त बयान में रूस पर यह आरोप लगाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि रूस ने लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करते हुए जैविक हथियार कार्यक्रम बरकरार रखा है और रासायनिक हथियारों के उपयोग का एक अच्छी तरह से प्रलेखित इतिहास रहा है।

यूक्रेन के प्रतिनिधियों से बातचीत में प्रगति हुई : रूस

मॉस्को| यूक्रेन के अधिकारियों से वार्ता कर रहे रूसी प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख ने कहा है कि यूक्रेन के तटस्थ दर्जे को लेकर दोनों पक्ष समझौते के करीब पहुंच गए हैं। यूक्रेन के साथ कई दौर की वार्ता करने वाले रूसी प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष व्लादिमीर मेदिंस्की ने शुक्रवार को कहा कि दोनों पक्ष यूक्रेन के नाटो में शामिल होने की कोशिश को छोड़ने और तटस्थ रुख अख्तियार करने को लेकर उत्पन्न मदभेदों को पाटने के करीब पहुंच रहे हैं। मेदिंस्की की टिप्पणी को रूसी समाचार एजेंसियों ने इस प्रकार उद्धृत किया, ''तटस्थ दर्जा और यूक्रेन की नाटो की सदस्यता से दूरी वार्ता का मुख्य बिंदु है और इस मामले में दोनों पक्षों का रुख एक-दूसरे के करीब पहुंच रहा है।'' उन्होंने कहा कि अब यूक्रेन के विसैन्यीकरण के लिए दोनों पक्षों ने ''करीब आधा रास्ता'' तय कर लिया है। मेदिंस्की ने रेखांकित किया कि कीव जोर दे रहा है कि यूक्रेन के रूस-समर्थित पूर्वी अलगाववादी क्षेत्र को उसके अधीन लाया जाए, जबकि रूस का मानना है कि इलाके के लोगों को स्वयं अपनी किस्मत का फैसला करने की अनुमति दी जाए।

यूक्रेन संकट कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे हम देखना चाहते हैं : शी ने बाइडन से कहा

बीजिंग| चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने शुक्रवार को अपने अमेरिकी समकक्ष जो बाइडन से कहा कि 'यूक्रेन संकट' कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे ''हम देखना चाहते हैं।''साथ ही, उन्होंने विश्व शांति एवं स्थिरता के लिए 'अंतरराष्ट्रीय दायित्वों' को पूरा करने को लेकर अमेरिका-चीन के संयुक्त सहयोग की अपील की। शी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये आयोजित शिखर बैठक में बाइडन से कहा, ''शांति एवं विकास की मौजूदा प्रवृत्ति गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है।

विश्व ना तो शांत है ना ही स्थिर है। यूक्रेन संकट कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हम देखना चाहते हैं।'' यूक्रेन पर रूसी आक्रमण का चीन द्वारा निंदा नहीं करने को लेकर बीजिंग की अमेरिका द्वारा की जा रही आलोचना के बीच शी ने यह टिप्पणी की। उल्लेखनीय है कि चीन और रूस के बीच करीबी संबंध हैं। चीनी विदेश मंत्रालय ने शी को उद्धृत करते हुए कहा, ''संघर्ष और टकराव किसी के हित में नहीं है और शांति एवं सुरक्षा को अंतरराष्ट्रीय समुदाय को महत्व देना चाहिए।''शी ने ताईवान सहित कई मुद्दों को लेकर उथल-पुथल के दौर से गुजर रहे चीन-अमेरिका संबंधों को सही रास्ते पर लाने की भी अपील की। उन्होंने कहा, ''संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य और विश्व की दो प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं होने के नाते, हमें चीन-अमेरिका संबंधों को अवश्य ही सही रास्ते पर आगे बढ़ाना चाहिए।''हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने यूक्रेन संकट खत्म करने की अपील की है या नहीं, क्योंकि उनकी टिप्पणी पर कोई स्पष्टीकरण नहीं आया है।

यूक्रेन में युद्ध के चलते अब तक 65 लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं: संयुक्त राष्ट्र

जिनेवा। संयुक्त राष्ट्र की शरणार्थी संबंधी एजेंसी के अनुमान के अनुसार यूक्रेन में अब तक कुल 65 लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं, जबकि 32 लाख लोग पहले ही देश छोड़कर जा चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय प्रवास संगठन (आईओएम) के अनुमान से पता चलता है कि यूक्रेन विस्थापन के मामले में पिछले तीन सप्ताह में ही सीरिया से आगे निकल चुका है, जहां साल 2010 में भीषण युद्ध की शुरुआत हुई थी। सीरिया में अब तक 1 करोड़ 30 लाख से अधिक लोग या तो विस्थापित हो चुके हैं या फिर देश छोड़कर चले गए हैं। संयुक्त राष्ट्र एजेंसी का यह अनुमान शुक्रवार को प्रकाशित एक दस्तावेज में सामने आया है।

पाकिस्तान ने करतारपुर साहिब गुरुद्वारे पर अमित शाह की टिप्पणी खारिज की

इस्लामाबाद| पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने भारत के विभाजन और करतारपुर साहिब गुरुद्वारे के स्थान को पाकिस्तान के हिस्से में देने पर भारत के गृहमंत्री अमित शाह द्वारा उठाए गए सवाल को शुक्रवार को खारिज करते हुए इसे ''अवांछित और अनावश्यक' टिप्पणी करार दिया। पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने यहां जारी बयान में कहा, '' पाकिस्तान भारतीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा हाल में की गई उस अवांछित और अनावश्यक टिप्पणी को खारिज करता है जिसमें (भारत के) विभाजन और करतारपुर साहिब के पाकिस्तान में होने पर सवाल उठाया गया था।''

तिरुमूर्ति ने कहा-

यूक्रेन में बिगड़ती मानवीय स्थिति से काफी चिंतित है भारत

एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र में भारत के शीर्ष राजनयिक ने कहा है कि देश ने युद्ध प्रभावित यूक्रेन से 22,500 भारतीयों की वापसी सुनिश्चित करने के साथ-साथ 18 अन्य देशों की उनके नागरिकों को निकालने में भी मदद की है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत टी एस तिरुमूर्ति ने यूक्रेन में बिगड़ती मानवीय स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए प्रभावित लोगों की मानवीय जरूरतों का निदान करने की 'तत्काल जरूरत' बताई। यूक्रेन पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की ब्रीफिंग में तिरुमूर्ति ने कहा कि यह अहम है कि मानवीय उपाय हमेशा मानवता, तटस्थता, निष्पक्षता और स्वतंत्रता के सिद्धांतों से निर्देशित हों। उन्होंने कहा, इन उपायों का राजनीतिकरण नहीं

किया जाना चाहिए। तिरुमूर्ति ने यह भी कहा, "भारत मौजूदा स्थिति पर काफी चिंतित है, जो शत्रुता की शुरुआत के बाद से लगातार बिगड़ती रही है। संघर्ष की वजहसे नागरिकों की जानें गईहैं। आंतरिक रूप से हजारों लोगों का विस्थापन हुआ और 30 लाख से अधिक शरणार्थी पड़ोसी देशों में चले गए हैं। मानवीय स्थिति खराब हुई है, खासकर वहां जहां लड़ाई चल रही है। उन्होंने कहा कि भारत ने यूक्रेन से करीब 22500 भारतीयों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की है। भारत के स्थायी प्रतिनिधि ने कहा, इस प्रक्रिया में (लोगों को निकलने की)हमने 18 अन्य देशों की मदद भी की है। हम यूक्रेन और उसके पड़ोसी देशों के अधिकारियों की लोगों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने में सहूलियत प्रदान करने के लिए सराहना करते हैं। तिरुमूर्ति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तत्काल युद्धविराम का आह्वान किया है और इस बत पर जोर दिया है कि बातचीत और कूटनीति के रास्ते के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा, "हम संयुक्त राष्ट्र चार्टर, अंतरराष्ट्रीय कानून और राष्ट्रों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने की जरूरत को रेखांकित करना जारी रखेंगे। अमेरिका, अलबानिया, ब्रिटेन, फ्रांस, आयरलैंड और नॉर्वे ने यूक्रेन में मानवीय स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक का अनुरोध किया था। तिरुमूर्ति ने बताया कि भारत ने यूक्रेन और उसके पड़ोसियों को एक मार्च से 90 टन से ज्यादा आपूर्ति भेजी है, जिनमें जरूरी दवाएं और आवश्यक राहत सामग्री शामिल है।

ढाका में ISKCON मंदिर पर हमला 200 से ज्यादा लोगों ने की लूटपाट

एजेंसी

ढाका। होली है और रंगों के त्यौहार भी है लेकिन एक दुख भरी खबर बांग्लादेश से सामने आ रही है। ढाका में इस्कॉन मंदिर पर हमला हुआ है। 200 से ज्यादा लोगों की भीड़ ने मंदिर में लूटपाट की है। एन आई के हवाले से खबर दी गई है। इस हमले में मंदिर के 3 से ज्यादा लोग जख्मी हो गए हैं। 200 से ज्यादा लोगों की भीड़ अचानक मंदिर पर हमला करने के लिए पहुंचती है। फिर लोगों से मारपीट की जाती है और लूटपाट को अंजाम दिया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मंदिर पर हमला हाजी सैफुल्लाह की अगुवाई में किया गया है। इससे पहले भी बांग्लादेश में मंदिरों को निशाना बनाया जाता रहा है। अक्टूबर महीने में मुस्लिम बहुल बांग्लादेश में झूठी अफवाह की आड़ लेकर बांग्लादेश में दुर्गा पूजा पंडालों, मंदिरों और हिंदुओं के घरों पर जैसे भीषण हमले किए गए थे। पहले दिन से ये अफवाह फैलाई गई कि हिन्दुओं

ने कुरान का अपमान किया। बिना सबूतों के और बिना सोचे-समझे बांग्लादेश में हिन्दुओं के खिलाफ हिंसा तक शुरू हो गई। इस्लामिक कट्टरपंथियों ने दुकाने लूटी गई मंदिरों और घरों को निशाना बनाया था। ह्यूमन राइट ऑर्गनाइजेशन की रिपोर्ट के अनुसार 2007 से 2019 के बीच अल्पसंख्य समुदाय से जुड़े 1500 लोगों पर हमले की घटनाएं सामने आई। इसके साथ ही धार्मिक स्थलों में तोड़फोड़ और हथियारबंद हमलों के सामने आए। ज्यादातर शिकार बनने वाले हिन्दू समुदाय से जुड़े लोग ही थे।

राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा देश अपनी शून्य-कोविड रणनीति के साथ स्टिक रहेगा

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने गुरुवार को कहा कि देश अपनी शून्य-कोविड रणनीति के साथ स्टिक रहेगा, क्योंकि दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश महामारी के शुरुआती दिनों से अपने सबसे बड़े प्रकोप से जूझ रहा है। जिस देश में 2019 के अंत में वायरस उभरा, उसने बड़े पैमाने पर बाद के प्रकोपों को नियंत्रण में रखा है, सख्त सीमा नियंत्रण, लंबी संगरोध और लक्षित लॉकडाउन के संयोजन के लिए धन्यवाद, और एक वर्ष से अधिक समय तक कोरोनो वायरस से संबंधित किसी भी मौत की सूचना नहीं दी है। लेकिन अत्यधिक पारगम्य ओमिक्रॉन संस्करण उस रणनीति के लिए एक कड़ी चुनौती पेश कर रहा है, जिससे अधिकारियों को 17.5 मिलियन लोगों के घर, शेनझेन के दक्षिणी तकनीकी केंद्र सहित शहरों को बंद करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी

अर्थव्यवस्था केवल तीन सप्ताह पहले 100 दैनिक संक्रमणों की रिपोर्टिंग से एक सप्ताह से अधिक के लिए प्रति दिन 1,000 से अधिक हो गई है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के अनुसार, गुरुवार को 2,400 से अधिक मामले सामने आए। कई शहरों में प्रकोप को कम करने के लिए, चीनी अधिकारियों ने भी अस्पताल के बिस्तरों को खाली करने के लिए स्थानांतरित कर दिया है, इस डर से कि वायरस स्वास्थ्य प्रणाली को तनाव में डाल सकता है। पूर्वोत्तर चीन के जिलिन प्रांत जिसने पिछले एक सप्ताह में हजारों मामले दर्ज किए हैं, संक्रमण में वृद्धि को रोकने के लिए आठ ₹अस्थायी अस्पताल₹ और दो संगरोध केंद्र बनाए हैं। शंघाई में चीन का सबसे बड़ा शहर और 25 मिलियन लोगों का घर अधिकारियों ने स्कूल परिसरों को बंद कर दिया है, कुछ आवासीय परिसरों को बंद कर दिया है और राज्य के मीडिया के अनुसार बड़े पैमाने पर परीक्षण का एक कठोर दौर शुरू किया है।

चीन संक्रमण के मामले बढ़ने के बीच 'जीरो कोविड' नीति पर अडिग

एजेंसी

बीजिंग। चीन ने अंतरराष्ट्रीय यात्रा पर पाबंदी लगाने वाली एवं अत्यधिक आलोचना का सामना कर रही अपनी ''जीरो कोविड'' नीतिमें ढील देने से शुक्रवार को इनकार कर दिया। देश के कई शहरों में लगे लॉकडाउन के बावजूद कोरोना वायरस संक्रमण के नये मामले तेजी से बढ़ने के मद्देनजर यह फैसला किया गया।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के उप मंत्री एवं राष्ट्रीय रोग नियंत्रण एवं रोकथाम प्रशासन के प्रशासक वांग हेशेंग ने मीडिया से कहा कि चीन कोरोना वायरस संक्रमण के मौजूदा प्रसार को रोकने के लिए अपनी ''जीरो कोविड'' नीति का अनुपालन करना जारी रखेगा। आधिकारिक मीडिया ने यहां उन्हें उद्धृत करते हुए कहा कि 'जीरो मामला नीति' का लक्ष्य यथासंभव सबसे कम समय में महामारी को नियंत्रित करने का है, ताकि समाज को इसकी न्यूनतम कीमत चुकानी पड़े। उन्होंने कहा कि इस रुख का उद्देश्य त्वरित प्रतिक्रिया और लक्षित रोकथाम एवं नियंत्रण है। चीन ओमीक्रोन स्वरूप की नयी लहर के चलते हो रहे संक्रमण को रोकने के लिए गहन एवं लक्षित कोविड रोकथाम व नियंत्रण उपाय कर रहा है। इस नीति के तहत चीन ने अंतरराष्ट्रीय यात्रा पर कड़ी पाबंदी लगाई है जिसके चलते कई लाख अंतरराष्ट्रीय छात्र प्रभावित हुए हैं। इस नीति के चलते23,000 से अधिक भारतीय छात्र

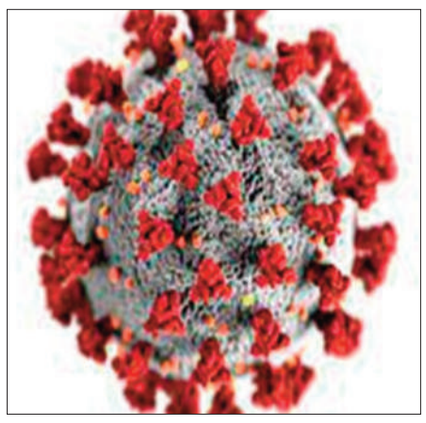

भी स्वदेश में अटक गये हैं। उल्लेखनीय है कि चीन हाल के हफ्तों में कोविड के मामले में सर्वाधिक वृद्धि का सामना कर रहा है, जबकि शेष विश्व में मामलों में अत्यधिक कमी दर्ज की गई है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने शुक्रवार को बताया कि चीन में बृहस्पतिवार को कोविड के 4,292 नये मामले सामने आये थे। वहीं, कोविड के उपचाराधीन मरीजों की संख्या अभी 16,974 है। करीब दो साल पहले कोरोना वायरस के सबसे पहले चीन के वुहान शहर में सामने आने के बाद से देश में महामारी से अब तक 4,636 लोगों की मौत हो चुकी है।

जेलेंस्की ने अतिरिक्त सैन्य सहायता के लिए बाइडन का आभार जताया

एजेंसी

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की ने राष्ट्र के नाम संदेश में अतिरिक्त सैन्य सहायता के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति जो. बाइडन का आभार जताया। जेलेंस्की ने रात में अपने वीडियो संबोधन में यह नहीं बताया कि नए पैकेज में क्या चीज़ें शामिल हैं, क्योंकि वह इस बाबत रूस को जानकारी नहीं देना चाहते हैं। वहीं दुनिया के 'समूह सात' (दुनिया के सात प्रमुख अर्थव्यवस्था वाले देशों का समूह) ने एक संयुक्त बयान में कहा कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन यूक्रेन में बिना किसी कारण के जंग कर रहे हैं। वहीं संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान जताया है कि युद्ध के कारण

30 लाख से ज्यादा लोगों ने यूक्रेन छोड़ दिया है और सटीक मृतक संख्या की जानकारी नहीं है। हालांकि यूक्रेन का दावा है कि लड़ाई में अब तक हजारों लोगों की जान जा चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक टेड्रोस अदनोम घेब्रेयियस ने बृहस्पतिवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को ऑनलाइन माध्यम से बताया कि संगठन ने अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों पर 43 हमलों का सत्यापन किया है जिनमें 12 लोगों की मौत हुई है और 34 घायल हुए हैं। इस बीच मारियुपोल के स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि दक्षिणी शहर पर रूस के हमले जारी हैं और उसने एक थिएटर पर हमला किया जहां सैकड़ों लोगों ने शरण ली हुई थी। बहरहाल, जर्मनी के सांसदों को वीडियो के माध्यम से संबोधित करते हुए जेलेंस्की ने मारियुपोल में बदतर हालत के लिए रूस की निंदा की। अधिकारियों ने बताया कि बृहस्पतिवार तड़के रूस के हवाई हमले में मेरफा में 21 लोगों की मौत हो गई और एक स्कूल और एक सामुदायिक केंद्र तबाह हो गए। यह खारकीव के पास स्थित है। इस बीच ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने दावा किया कि यूक्रेन के प्रतिरोध की वजह से रूस का हमला सभी मोर्चों पर रूक गया है और रूस के बलों को हाल के दिनों में मामूली बढ़त मिली है। हॉलीवुड फिल्म अभिनेता अर्नोल्ड श्वार्ज़नेगर ने बृहस्पतिवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में रूस के लोगों से कहा कि उनसे यूक्रेन में युद्ध के बारे में झूठ बोला जा रहा है। उन्होंने पुतिन पर अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिए रूसी सैनिकों के जीवन का बलिदान करने का भी आरोप लगाया। अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के शुक्रवार को फोन पर बात करने की भी संभावना है।

कोरोना के खिलाफ जंग है जारी, मॉडर्ना ने कोविड-19 रोधी टीके की चौथी खुराक के लिए मांगी इजाजत

वाशिंगटन। दवा निर्माता मॉडर्ना ने बृहस्पतिवार को खाद्य एवं औषधि प्रशासन से अपने कोविड-19 रोधी टीके की चौथी खुराक को सभी वयस्कों के लिए बूस्टर खुराक के रूप में अधिकृत करने का अनुरोध किया। इससे

पहले प्रतिद्वंद्वी दवा निर्माता कंपनी फाइजर ने इस सप्ताह की शुरुआत में नियामक से सभी वरिष्ठ नागरिकों के लिए बूस्टर खुराक को मंजूरी देने का अनुरोध किया था। कंपनी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि सभी वयस्कों के वास्ते अनुमोदन के लिए उसका अनुरोध रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र और चिकित्सा प्रदाताओं को एमआरएनए टीके की दूसरी बूस्टर खुराक के उचित उपयोग का निर्धारण करने के संबंध में लचीलापन प्रदान करने के लिए किया गया है। अमेरिकी अधिकारी गंभीर बीमारी और कोविड-19 से होने वाली मौतों के खिलाफ टीकों की सुरक्षा को बढ़ाने के वास्ते अतिरिक्त बूस्टर खुराक देने के लिए जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे हैं।

रूस पर प्रतिबंधों से चीनी कंपनियों की रक्षा करेगा चीन

एजेंसी

बीजिंग। चीन के वाणिज्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा है कि रूस के खिलाफ अन्य सरकारों की ओर से प्रतिबंध लगाए जाने जैसी कार्रवाई से चीनी कंपनियों को बचाने के लिए बीजिंग आवश्यक उपाय करेगा। यह टिप्पणी, चीनी कंपनियों द्वारा इस तरह के प्रतिबंधों से बचने के किसी भी कदम के लिए परिणाम भुगतने की अमेरिकी चेतावनी के बारे में सवालों के जवाब में आयी। मंत्रालय के प्रवक्ता गाओ फेंग ने कहा कि चीन अंतरराष्ट्रीय कानून के आधार के बिना किसी भी ठोस वजह के, एकतरफा प्रतिबंधों का विरोध करता है।गाओ ने बृहस्पतिवार को कहा, आर्थिक प्रतिबंध न केवल सुरक्षा समस्याओं को हल करने में विफल होंगे, बल्कि संबंधित देशों में लोगों के सामान्य जीवन को भी नुकसान पहुंचाएंगे, वैश्विक बाजार को बाधित करेंगे और पहले से ही धीमी विश्व अर्थव्यवस्था को और भी बदतर बना देंगे।''

उन्होंने कहा कि चीन सामान्य व्यापारिक हितों और चीनी कंपनियों के वैध अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाएगा। उन्होंने इस बारे में कोई ब्योरा नहीं दिया। रूस-यूक्रेन युद्ध में प्रमुख घटनाक्रमः - रूसी हवाई हमले में मारियुपोल थिएटर को निशाना बनाया

गया जहां सैकड़ों लोग शरण लिए हुए थे। - रूसी मानवीय प्रस्ताव पर मतदान से पहले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक। - जो बाइडन ने पुतिन को युद्ध अपराधी कहा, लेकिन यह निर्धारित करने के लिए जांच अभी शुरू ही हुई है। - सस्ते लेकिन घातक तुर्की ड्रोन से यूक्रेन की सुरक्षा मजबूत हुई है। आज और क्या हो रहा है: कोपेनहेगन, डेनमार्क - स्वीडन में आने वाले यूक्रेनी शरणार्थियों को कोविड-19 रोधी टीके लगाये जाएंगे, स्वीडन सरकार ने बृहस्पतिवार को कहा। सामाजिक मामलों की मंत्री लीना हॉलेंग्रेन ने कहा कि यूक्रेन की एक तिहाई से अधिक आबादी को टीके की दो खुराक दी गई है। उन्होंने कहा, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि स्वीडन में शरणार्थी के रूप में आने वाले अधिक से अधिक लोगों को जल्द से जल्द टीका लगाया जाए। ल्वीव, यूक्रेन - यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की के कार्यालय का कहना है कि रूस ने बृहस्पतिवार को तड़के घिरे बंदरगाह शहर मारियुपोल पर और हवाई हमले किए। ज़ेलेंस्की के कार्यालय ने नवीनतम हमलों में हताहतों हुए लोगों की जानकारी नहीं दी। ये हमले एक थिएटर पर हमले के बाद शहर में बचाव प्रयासों के बीच किये गए हैं, जहां बुधवार को सैकड़ों लोगों ने आश्रय लिया था। ज़ेलेंस्की के कार्यालय ने कहा, लोग अपने स्वयं के परिवहन का उपयोग करके मारियुपोल से भाग रहे हैं।''

उसने कहा, ''रूसी सेना द्वारा नागरिकों पर गोलीबारी करने के कारण मृत्यु का जोखिम अधिक है।'' राष्ट्रपति कार्यालय ने देश भर में रात भर गोलाबारी और हवाई हमलों की सूचना दी, जिसमें राजधानी कीव के कालिनिव्का और ब्रोवरी उपनगर शामिल हैं। इसने कहा कि लड़ाई जारी है क्योंकि रूसी सेना दक्षिण में यूक्रेन के कब्जे वाले शहर मायकोलाइव में प्रवेश करने की कोशिश कर रही है।

संक्षिप्त समाचार

धनाऊ तहसील मुख्यालय के सीमावर्ती क्षेत्र में आगिन शाह का तला

संजय कुमार / एनसीआर समाचार

विद्या भारती द्वारा संचालित एकल विद्यालय में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें विद्या भारती के एकल विद्यालय के जिला प्रमुख बाड़मेर के अभय सिंह जी भाटी की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजकीय माध्यमिक विद्यालय आगिन शाह का तला के प्रधानाध्यापक नरपत सिंह सोढा ने कहा कि बालक की प्रथम पाठशाला उसकी माता-पिता होते हैं जन्म से जिनमें संस्कार के बीज पैदा होते हैं वह हमेशा जीवन में अवल रहते हैं हमें भी बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए, इस मौके पर राजेंद्र गौड़ अध्यापक ने कहा सनातन संस्कृति में प्राचीन काल से ऋषि मुनियों द्वारा संस्कार दिया जाता था। आजकल विद्यालय में संस्कार देना समस्त गुरुजनों की प्राथमिकता रहती है, इस मौके पर पीरदान सिंह चतर सिंह मेहका राम बदन सिंह खमाणसिंह एवं गणमान्य नागरिक ने भाग लिया। कार्यक्रम में बच्चों ने देशभक्ति गीत एवं डांस की प्रस्तुतियां दी एकल विद्यालय प्रभारी वेरी साल सिंह ने सभी मेहमानों का धन्यवाद ज्ञपित।

हिज़ाब का विवाद हुआ खत्म, कर्नाटक हाई कोर्ट ने लगाया हिज़ाब पर बैन

एजेंसी / एनसीआर समाचार

लम्बे समय से चल रहे हिज़ाब विवाद पर कर्नाटक हाई कोर्ट ने अपना फैसला सुना दिया है। बता दें कि मुस्लिम छात्रों द्वारा हाई कोर्ट में याचिका दर्ज की गई थी की उन्हें स्कूल कॉलेज के भीतर हिज़ाब पहनने दिया जाये जिस पर कोर्ट ने अपना फैसला सुना दिया है। कोर्ट ने छात्रों की याचिका को ख़ारिज करते हुए कहा कि हिजाब पहनना इस्लाम धर्म की अनिवार्य प्रथा का हिस्सा नहीं है, इसलिए छात्रों को स्कूल ड्रेस पहननी पड़ेगी, वो हिज़ाब पहनकर स्कूल और कॉलेज के भीतर नहीं आ सकते। कर्नाटक हाई कोर्ट की मुख्य न्यायाधीश ने कहा हिज़ाब पहनना इस्लाम धर्म का हिस्सा नहीं है इसलिए स्कूल की तरफ से जो यूनिफॉर्म की तय किये गए है वो सही है और सभी को मानने पड़ेंगे। बता दें कि कोर्ट के इस फैसले से पहले ही बेंगलुरु के सभी सार्वजनिक स्थानों पर किसी भी प्रकार के आंदोलन और सभा पर रोक लगा दी गई है और साथ ही राज्य के कई जिलों में धारा 144 लागू कर दी गई है।

वार्षिकोत्सव में भामाशाहो को किया सम्मानित

प्रमोद कुमार बंसल / एनसीआर समाचार

नारेहड़ा ग्रामीण पूरणनगर के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में सोमवार को वार्षिकोत्सव एवं भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता PEEO चिमनपुरा बाबूलाल रावत ने की। मुख्य अतिथि CBEO महावीर प्रसाद बडगुजर रहे, विद्यालय की प्रधानाध्यापिका सुनीता चौधरी के द्वारा भामाशाहो का साफा व प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। यह मंच संचालन जयचंद गुर्जर ने किया। इस मौके पर भामाशाह मक्खन सिंह लताला, छाजूराम जागीरदार, श्योदान सिंह कसाना, अंजू, रामस्वरूप गुर्जर आदि उपस्थित रहे।

IIT. शाहपुर में राज्य का पहला ड्रोन पायलेट स्कूल शुरू, CM ने किया उद्घाटन

सत्यन शर्मा / एनसीआर समाचार

आज मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने जिला कांगड़ा के शाहपुर विधानसभा क्षेत्र में स्थित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI) शाहपुर में राज्य के पहले ड्रोन पायलट स्कूल का उद्घाटन किया। जय राम ठाकुर ने कहा कि ड्रोन एक नयी तकनीक है, जिसे फसलों पर निगरानी रखने के अतिरिक्त कीटनाशक के छिड़काव आदि के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी राज्य सरकारों को ड्रोन तकनीक को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने का आग्रह किया है। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य में ड्रोन तकनीक का उपयोग भूमि की हदबन्दी तथा जनसंख्या वाले क्षेत्रों में दस्तावेज तैयार करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ड्रोन के उपयोग का सबसे बड़ा लाभ है कि यह न केवल किफायती है, बल्कि यह समय की बचत भी करता है। उन्होंने कहा कि भविष्य में ड्रोन तकनीक युवाओं के लिए लाभदायक सिद्ध होगा और युवाओं को इस तकनीक का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कदम उठाए जाएंगे।

कस्बें स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लाम्बा हरि सिंह में वार्षिकोत्सव का आयोजन हुआ

शशि नामा / एनसीआर समाचार

समारोह में मुख्य अतिथि पंचायत समीति सदस्य रूपचंद आकोदिया, ने 10वीं 12वीं बोर्ड में मेरिट पर आने पर स्कूटी दी जाने की घोषणा की अध्यक्षता SMC अध्यक्ष पन्नालाल रेगर ने की, विशिष्ट अतिथि रमेश चंद वैष्णव, शिक्षाविद् जगदीश जी शर्मा, राजेंद्र प्रसाद शर्मा, जगदीश जांगिड़, उपसरपंच संजय कुमार पाराशर, युवा नेता रवि शर्मा, तेजपाल गोयल, शशिकुमार नामा, मुकेश कुमार माली नोरत मल वर्मा रहे, विधालय परिसर में CCTV केमरे लगवाने की सहयोग राशि प्रदान कर मुहिम की शुरुआत की, दोरान SMC सदस्य धारू जी माली, केलाश चौधरी, गोपाललाल जाट शर्मा, प्रधानाचार्य रेणुका डांगी, व्याख्याता रामेश्वर लाल जाट, मनोज जी प्रजापत, अशोक कुमार सैनी, सीताराम बैरवा, व समस्त विधालय स्टाफ व अभिभावक उपस्थित रहे।

भोपाल पुलिस क्राइम ब्रांच की सतर्कता से बची पेट्रोल पंप मालिक की जान

देवेन्द्र कुमार जैन / एनसीआर समाचार

वरिष्ठ अधिकारियों एवं पुलिस उपायुक्त अपराध श्रीमान अमित कुमार एवं अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त श्री शैलेन्द्र सिंह चैहान के मार्गदर्शन एवं सहायक पुलिस आयुक्त अपराध के दिशा निर्देशन में थाना क्राइम ब्रांच भोपाल की टीम को एक विश्वसनीय मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि कुछ व्यक्ति अपने पास हथियार रखे हुए है और निश्चित ही किसी बडी वारदात को अंजाम देने के संबंध में आपस में बातचीत कर रहे है यदि उन्हे समय पर नहीं पकडा गया तो वह किसी वारदात को अंजाम देकर पहुंच से दूर जा सकते है। विश्वसनीय मुखबिर होने से सूचना से वरिष्ठ अधिकारीयों को अवगत कराकत प्राप्त दिशा निर्देषों के आधार पर थाना क्राईम ब्रांच भोपाल की विशेष टीम गठित कर सूचना की तस्दीक हेतू मुखबिर द्वारा बताये गये स्थान गांधीनगर रिलायन्स पेट्रोल पंप के पास पहुचे जंहा टीम के सदस्यों को बताया कि मुखबिर द्वारा जो सूचना दी गई है उसमें हथियारों का भी जिक्र किया है उसी अनुसार सावधानी बरत कर कार्यवाही व धरपकड़ करना है। बाद में मुखबिर द्वारा बताये स्थान पर पैदल-पैदल झाड़ियों की आड़ से देखा तो अंधेरे में दो चार पहिया गाडिया दिखी जिनकी आड़ से कुछ लोगों के बात करने की आवाजें आ रही थी सभी आपस में चर्चा कर रहे थे कि आज किसी भी हालत में पेट्रोल पंप में डांका डालकर लूटना है। थाना क्राइम ब्रांच की टीम द्वारा पेट्रोल पंप के बगल बाले रास्ते से एवं खेतों के रास्ते से व पट्रोल पंप के पीछे के रास्ते से पैदल-पैदल सावधानी बरतते हुए एक साथ चारों तरफ से घेराबंदी किया तो संदेहियों द्वारा अपने आप को घिरा देख कर भागने का प्रयास करने लगे सभी संदेहियों के दोनों हाथों को ऊपर कराकर रोशनी में ले जाकर नाम पता पूछा जिन्होने अपना-अपना नाम नितेश सोनो ने, नरेश रजक, आरिफ खान, नसीम खां, अजीम शेख उर्फ अजीम उद्दीन, कुलदीप लोंढे, आमिर माहबिया होना बताया, संदेहियों की तलाशी लेने पर 1. नितेश सोनोने के कब्जे से एक देशी पिस्टल मय दो जिन्दा कारतूस मिले, एक काले रंग की क्रेटा कार क्रमांक एमपी /04/ई.ए./2043 एक मोबाईल फोन 2. नरेश रजक के कब्जे से एक देशी पिस्टल दो जिन्दा कारतूस मिले, एक मोबाईल फोन 3. आरिफ खान के कब्जे से एक देशी पिस्टल एक जिन्दा कारतूस मिला, एक लाल रंग की टीयूवी कार क्रमांक एम.पी/ 40/सी.ए/ 6421 4. नसीम खां के कब्जे से एक देशी पिस्टल दो जिन्दा कारतूस मिले।

जिला जेल पुलिस आरक्षक रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा

तोप सिंह / एनसीआर समाचार

उज्जैन लोकायुक्त टीम द्वारा नीमच जेल में पदस्थ आरक्षक गिरिराज राजपूत को 3 हजार की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है दरअसल, लोकायुक्त स्पेक्टर राजेन्द्र वर्मा ने बताया कि अवेदिका मंगला गुर्जर निवासी नीमच का पति कमल चौधरी नीमच जेल में बंद है अवेदिका का पति पटवारी था जिसे 2015 में लोकायुक्त में ट्रैप किया था जिसका वर्ष 2021 में विशेष न्यायालय नीमच से 4 वर्ष की सजा हुई जिसमे वह वर्तमान में नीमच जिला जेल में है मंगला गुर्जर अपने सजायाफ्ता पति से मिलने जब भी जेल जाती है तब गिरिराज गुर्जर महिला से उनके पति से मिलने व जेल में सुविधा देने के लिए रिश्वत की माँग करता था अवेदिका ने दिनांक 08/03/22 को पुलिस अधीक्षक महोदय लोकायुक्त उज्जैन को शिकायत की थी कि गिरिराज गुर्जर उस से पति को जेल में अच्छा खाना देने व अन्य सुविधा के प्रति माह 4500 रु ओर एक बार मिलने के 300 रुपए रिश्वत की माँग कर रहा था, दिनांक 02/03/22 को 1700 रु आरक्षक ले चुका है।

महिला की शिकायत पर पुलिस अधीक्षक लोकायुक्त अनिल विश्वकर्मा के निर्देश पर ट्रैप आयोजित किया गया ओर आज लोकायुक्त उज्जैन के निरीक्षक राजेंद्र वर्मा व टीम-निरी. बलवीर सिंह यादव, आरक्षक गण संजय पटेल, विशाल रेशमिया, उमेश जाटव, सुनील परसाई, श्याम शर्मा व महेंद्र जाटवा ने आरोपी जेल पुलिस आरक्षक गिरिराज गुर्जर को नीमच जेल परिसर में अवेदिका से 3 हजार रु रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा है।

हिंदू जागरण मंच मालवा प्रांत देवास विभाग दो दिवसीय अभ्यास वर्ग खातेगांव में संपन्न हुआ

ब्रज कुमार राठौर / एनसीआर समाचार

हिंदू जागरण मंच मालवा प्रांत देवास विभाग का दो दिवसीय अभ्यास वर्ग खातेगांव में संपन्न हुआ जिसमें हिंदू जागरण मंच के मालवा प्रांत अध्यक्ष श्री आशीष जी, बसु व संगठन मंत्री श्री राजेश जी भार्गव, व विभाग संयोजक श्री राजेश जी खत्री भाई साहब के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ जिसमें सुजालपुर से भी नए दायित्व की घोषणा की गई जिसमें जिला युवा वाहिनी प्रमुख वीरभद्र सिंह तोमर थाना इकाई सुजालपुर सिटी अध्यक्ष रामबाबू जी विश्वकर्मा, व थाना इकाई शुजालपुर मंडी अध्यक्ष महेश जी मेवाड़ा, व सिटी युवा वाहिनी प्रमुख आनंद राजपूत, सिटी उपाध्यक्ष श्याम जी बड़ोने, नगर मंत्री विशाल जी महेश्वरी, चंद्रेश जी, सेन कृष्ण पाल राजपूत, जी नरेंद्र जी मालवीय के नामों की घोषणा की गई जिसमें जिला अध्यक्ष श्री अनूप जी किरकिरे जिला महामंत्री चंदर जी, बरगोदिया भी मौजूद रहे।

गांव में होली मनाने का अलग अंदाज

रविशंकर कुमार / एनसीआर समाचार

हिरण्यकशिपु का ज्येष्ठ पुत्र प्रह्लाद, भगवान विष्णु का परम भक्त था। पिता के लाख मन करने के बावजूद प्रह्लाद विष्णु की भक्ति करता रहा। दैत्य पुत्र होने के बावजूद नारद मुनि की शिक्षा के परिणामस्वरूप प्रह्लाद महान नारायण भक्त बना। असुराधिपति हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र को मारने की भी कई बार कोशिश की परन्तु भगवान नारायण स्वयं उसकी रक्षा करते रहे और उसका बाल भी बांका नहीं हुआ। असुर राजा की बहन होलिका को भगवान शंकर से ऐसी चादर मिली थी जिसे ओढ़ने पर अग्नि उसे जला नहीं सकती थी। होलिका उस चादर को ओढ़कर प्रह्लाद को गोद में लेकर चिता पर बैठ गई। दैवयोग से वह चादर उड़कर प्रह्लाद के ऊपर आ गई, जिससे प्रह्लाद की जान बच गई और होलिका जल गई। इस प्रकार हिन्दुओं के कई अन्य पर्वों की भाँति होलिका-दहन भी बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है। इस दिन से होलिका दहन के नाम से जाना जाता है। इस दिन गांव में अगजा जलाया करते हैं। उस के दूसरे दिन लोग भक्त प्रह्लाद के निकल आने की खुशी में रंग और गुलाल लगाकर खुशहाली व्यक्त करते हैं होली हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। होली शब्द को विभाजित कर देखा जाए तो ऐसा लगता है कि जो हो गया हो उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए, और आगे की शुरुआत करनी चाहिए। किसी से किसी भी तरह की अच्छी या बुरी बात को छोड़कर उसे प्रेम से भरपूर हो जाना चाहिए। यह दिन लोगों के बीच सद्भावना भर जाती है। एक दूसरे को आलिंगन करते हैं गले से गले मिलते हैं व एक दूसरे के साथ रंगो की होली खेलते है। प्रकृति दृश्य इस माह में प्राकृतिक दृश्य भी आनंद से भरपूर होता है। आम मंजर, महुआ की थपथपा हट की आवाज, उसकी सुगंध, आमरो की मंजर, बेल के मंजर, अन्याय वृक्षों में लाल-लाल पल्लव की कोपल देखने को मिलती है। इन्हें देख कर और उनके ऊपर भंवरे के मधुर गुंजार से मेरा मन झूम उठता है। कभी-कभी बाग बगीचों में कोयल की कूक हृदय को आनंदित करने वाली होती है होली का पर्व ऐसे तो होली माघ वसंत पंचमी सैनी से ही शुरू हो जाती है और इस दिन से लोग होली का गाना प्रारंभ कर देते हैं। इस दिन से होली की शुरुआत हो जाती है।

हिजाब इस्लामिक धार्मिक प्रथा का हिस्सा नहीं है

एजेंसी / एनसीआर समाचार

नई दिल्ली: कर्नाटक उच्च न्यायालय ने मंगलवार को शिक्षण संस्थानों में हिजाब पर प्रतिबंध को चुनौती देने वाली विभिन्न याचिकाओं को खारिज कर दिया और कहा कि हिजाब पहनना इस्लाम की एक आवश्यक धार्मिक प्रथा नहीं है। कर्नाटक उच्च न्यायालय की मुख्य न्यायाधीश रितु राज अवस्थी, न्यायमूर्ति कृष्णा एस दीक्षित और न्यायमूर्ति JM काज़ी ने कहा कि 5 फरवरी के सरकारी आदेश को अमान्य करने का कोई मामला नहीं बनता है। हिजाब विवाद इस साल जनवरी में तब भड़क उठा था जब उडुपी के सरकारी पीयू कॉलेज ने कथित तौर पर हिजाब पहनकर छह लड़कियों को प्रवेश करने से रोक दिया था। इसके बाद प्रवेश नहीं मिलने पर छात्राओं ने कॉलेज के बाहर धरना दिया। इसके बाद उडुपी के कई कॉलेजों के लड़के भगवा स्कार्फ पहनकर क्लास अटेंड करने लगे। यह विरोध राज्य के अन्य हिस्सों में भी फैल गया और कर्नाटक में कई स्थानों पर विरोध और आंदोलन शुरू हुए। कर्नाटक सरकार ने कहा कि सभी छात्रों को वर्दी का पालन करना चाहिए और हिजाब और भगवा स्कार्फ दोनों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए जब तक कि एक विशेषज्ञ समिति इस मुद्दे पर फैसला नहीं करती। 5 फरवरी को, प्री-यूनिवर्सिटी शिक्षा बोर्ड ने एक आदेश जारी किया जिसमें कहा गया था कि छात्र केवल स्कूल प्रशासन द्वारा अनुमोदित वर्दी पहन सकते हैं और कॉलेजों में किसी अन्य धार्मिक पोशाक की अनुमति नहीं होगी। आदेश में कहा गया है कि यदि प्रबंधन समितियों द्वारा वर्दी निर्धारित नहीं की जाती है, तो छात्रों को ऐसे कपड़े पहनने चाहिए जो समानता और एकता के विचार से मेल खाते हों, और सामाजिक व्यवस्था को बिगाड़ें नहीं। कुछ लड़कियों द्वारा शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब पहनने की अनुमति के लिए कर्नाटक उच्च न्यायालय में सरकार के शासन के खिलाफ याचिकाओं का एक बैच दायर किया गया था। जिसमे कर्नाटक उच्च न्यायालय की मुख्य न्यायाधीश रितु राज अवस्थी, न्यायमूर्ति कृष्णा एस दीक्षित और न्यायमूर्ति JM काज़ी की पीठ ने ड्रेस कोड पर सरकारी नियम को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई की। 10 फरवरी को, उच्च न्यायालय ने एक अंतरिम आदेश जारी करते हुए कहा कि जब तक अदालत अंतिम आदेश जारी नहीं करती, तब तक छात्रों को कक्षाओं में कोई धार्मिक पोशाक नहीं पहननी चाहिए। हिजाब मामले से संबंधित सुनवाई 25 फरवरी को संपन्न हुई थी और अदालत ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

नगर पालिका बनाने की मांग को लेकर मुंडावर कस्बा बंद

राजेश कुमार / एनसीआर समाचार

मुंडावर कस्बे में आज यानि 15 मार्च को पूर्ण बंद किया गया, सभी कस्बा निवासी और दुकानदारों ने मिलकर सरकार से मांग की है कि मुंडावर कस्बे को पंचायत से नगरपालिका बनाया जाए, और सभी व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। मुंडावर तहसील अलवर जिले की सबसे पुरानी तहसील है लेकिन सरकार और नेताओं की उदासीनता के कारण आज तक कुछ नया विकास नहीं हुआ, मुंडावर कस्बे में अगर वहां की पंचायत कुछ विकास करवा देगी तो वहां के लोगो के लिए बहुत ही अच्छा होगा, हालाँकि सरकार की तरफ से किसी भी तरह की कोई मदद नहीं हो रही है यहां कस्बे में बहुत अन्य-अन्य समस्याएँ है सबसे बड़ी समस्या तो पानी की है। पहाड़ी इलाका होने के कारण यहां शुरू से ही पानी की समस्या है सभी नागरिकों ने सोचा कि अगर नगर पालिका बनती हैं तो कुछ विकास संभव है इसी कर्म में आज पूर्ण बाजार बंद रखा गया, अगर सरकार की नजर पहुंचती है तो यह रोड़, सफाई और पानी की समस्या का निदान करें।

गहलोत ने चीन में तेजी से आ रहे केरोना के मामले को लेकर चिन्ता की बात कही

महावीर धोबी / एनसीआर समाचार

मुख्यमंत्री गहलोत ने ट्वीट करते हुये कहा, कि चीन में कोविड के मामलों में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। जब दुनियाभर में कोविड के मामले कम हुए हैं तब चीन में कोविड केस बढ़ना चिंताजनक है क्योंकि दो साल पहले कोरोना वायरस की शुरुआत भी यहीं से हुई थी। भारत सरकार को चीन के हालातों को देखकर वहां से आवागमन नियंत्रित करने पर विचार करना चाहिए। पूर्व में आईं कोविड की तीनों लहरों से सबक लेकर कोई लापरवाही नहीं बरती जानी चाहिए। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान में कोरोना के केसों की कमि आने से छूट दायरे भी बड़ा दिया है अब लोगों में कोरोना का कोई डर नही रह हैं और अधिक लापरवाही बरत रहे है खबरों के अनुसार बताया जा रहा कि चीन में कई शहरों में लॉकडाउन लगाया जा रहा है। अब भारत सरकार को नये कदम उठाने चाहिए ताकि बीते दिनों जैसे हालात ना हों।

द कश्मीर फाइल्स को लेकर भाजपा विधायक और IAS ऑफिसर आए आमने- सामने

अंत में भाजपा विधायक ने लिखा कि एक बात और नियाज खान जी मुस्लिमों के लिए कीड़े मकोड़े जैसे शब्दों का उपयोग न करें क्योंकि भारत में सच्चे देशभक्त एपीजे अब्दुल कलाम साहब, अशफाकुल्लाह खां जैसे भी हुए हैं। इन दिनों देश में फिल्म द कश्मीर फाइल्स काफी चर्चा में है और इस पर विवाद भी चल रहा है। इसी बीच मध्य प्रदेश के आईएएस ऑफिसर नियाज खान ने ट्विटर पर इस फिल्म को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उनका ट्वीट काफी सुर्खियां बटोर रहा है। उन्होंने द कश्मीर फाइल्स में जिस तरह कश्मीरी पंडितों का दर्द दिखाया गया है, उसी तरह देश से मुसलमानों की हत्याओं पर फिल्म बनाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि मुसलमान कोई कीड़े मकोड़े नहीं बल्कि इंसान और इस देश के नागरिक हैं। नियाज खान ने अपने ट्वीट में कहा, द कश्मीर फाइल्स ब्राह्मणों का दर्द दिखाती है। उन्हें पूरे सम्मान के साथ कश्मीर में सुरक्षित रहने की इजाजत दी जानी चाहिए। निर्माताओं को कई राज्यों में बड़ी संख्या में मुसलमानों की हत्याओं को दिखाने के लिए भी एक फिल्म बनानी चाहिए। मुसलमान कीड़े मकोड़े नहीं, बल्कि इंसान है और इस देश के नागरिक हैं। आईएएस के इस ट्वीट पर भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने तीखा पलटवार किया है। उन्होंने ट्वीट करते हुए लिखा कि चलिए 30 साल बाद ही सही आपने माना तो कि कश्मीरी पंडितों- हिंदुओं के साथ अन्याय, अत्याचार, बर्बरता हुई। 30 साल बाद आपने माना तो इस्लामिक कट्टरवाद, जिहाद के लिए कैसे हिंदुओं को मिट्टी में मिलाने की सोच का उदाहरण 19 जनवरी, 1990 को पेश किया गया। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में लिखा कि, यदि इस इस्लामिक कट्टरवाद को नहीं रोका गया तो भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश के लिए कितना घातक होगा। इस पर रिसर्च कर नॉवेल आईएस (आप जैसे) द्वारा लिखा जाएगा तो निश्चित रूप से यह देश को आगाह करने के लिए द कश्मीर फाइल्स से ज्यादा कारगर सिद्ध होगा।

ऑस्ट्रेलिया से 6 विकेट से हारा भारत, टीम के लिए मुश्किल हुआ सेमीफाइनल का सफर

ऑकलैंड। भारत ऑकलैंड के ईडन पार्क में 6 बार के चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबला खेल रहा हैं । इस मुकाबले में आस्ट्रेलिया ने आईसीसी महिला वनडे विश्व कप मैच में भारत को छह विकेट से हराया। भारत ने मैच को आखिरी तक खींचा। आखिरी ओवर में दो चौके पड़ने के कारण मैच ऑस्ट्रेलिया के हाथ में चला गया और चौके के साथ ऑस्ट्रेलियाई बल्लेवाज ने मैच को फिनीश किया। ऑस्ट्रेलिया वनडे क्रिकेट में लगभग अजेय रहा है। 2017 महिला विश्व कप सेमीफाइनल में भारत से हारने के बाद ऑस्ट्रेलिया ने 37 मैच खेले हैं और जिसमें से वह 35 बार जीत चुकी है। केवल दो मैच गंवाए हैं। इस बार भी ऑस्ट्रेलिया ने अपना अजेय रथ बढ़ाया और भारत को 6 विकेट से हराया। बारिश के कारण हुई बाधा के बाद भारत और आस्ट्रेलिया के बीच शनिवार को यहां आईसीसी महिला वनडे विश्व कप मैच शुरू हो गया था। मेग लैनिंग (73) और एलिस पैरी (53) क्रीज पर थीं तब बारिश शुरू हुई। आस्ट्रेलिया को जीत के लिये 278 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 54 गेंद में 53 रन की दरकार थी। कप्तान मिताली राज, यास्तिका भाटिया और हरनप्रीत कौर के अर्धशतकों से भारत ने शनिवार को यहां आस्ट्रेलिया के खिलाफ महिला विश्व कप के महत्वपूर्ण मैच में सात विकेट पर 277 रन का स्कोर खड़ा किया। मिताली (96 गेंद में 68 रन) और यास्तिका (83 गेंद में 59 रन) ने तब तीसरे विकेट के लिये 130 रन की अहम भागीदारी निभायी जब भारत ने सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा के विकेट सस्ते में गंवा दिये थे। भारत का स्कोर दो विकेट पर 158 रन से छह विकेट पर 213 रन हो गया था, जिसके बाद हरमनप्रीत ने 47 गेंद में नाबाद 57 रन बनाकर टीम को 250 रन के स्कोर से आगे पहुंचाया। पूजा वस्त्राकर ने एक बार फिर अंत में तेजी से रन जोड़े, उन्होंने 28 गेंद में 34 रन बनाये। पूजा और हरमनप्रीत ने 47 गेंद में सातवें विकेट के लिये 64 रन की भागीदारी की जिससे भारत ने अंतिम पांच ओवर में अपने स्कोर में 52 रन का इजाफा किया। भारत ने बल्लेबाजी को मजबूती देने के लिये सलामी बल्लेबाज शेफाली को आल राउंडर दीप्ति शर्मा की जगह उतारा। दीप्ति पिछले दो मैचों में चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरी थीं। बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद शेफाली (12) और स्मृति (10 रन) बल्लेबाजी करने उतरी थीं, पर दोनों जल्दी आउट हो गयीं। यास्तिका ने तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए टूर्नामेंट में अपना पहला अर्धशतक जमाया। उन्होंने अनुभवी मिताली का अच्छा साथ निभाया जो एक स्थान नीचे चौथे नंबर पर उतरीं। पहले चार मैचों में अच्छा नहीं करने के वाली कप्तान ने आखिर अर्धशतकीय पारी खेली। मिताली और यास्तिका को हालांकि पारी के शुरू में स्ट्राइक रोटेट करने में दिक्कत आ रही थी लेकिन एक बार दोनों के लय में आने के बाद रन जुड़ने शुरू हो गये। उन्होंने स्पिनर अलाना किंग और एशले गार्डनर के खिलाफ 'लेट कट' का अच्छा इस्तेमाल किया। आस्ट्रेलिया की इन दोनों गेंदबाजों के लिये दिन अच्छा नहीं रहा। मिताली ने टूर्नामेंट में अपने पहले अर्धशतक के दौरान बायें हाथ की स्पिनर जेस जोनासेन पर एक स्ट्रेट छक्का भी जमाया। तेजी से रन जुटाने के प्रयास में यास्तिका और मिताली अपने विकेट गंवा बैठीं।

फिर हरमनप्रीत ने जिम्मेदारी भरा खेल दिखाया और सुनिश्चित किया कि टीम प्रतिस्पर्धी स्कोर खड़ा करे। टी20 कप्तान ने टूर्नामेंट में 50 से ज्यादा रन का तीसरा स्कोर बनाया जिससे उन्होंने साबित कर दिया कि वह टूर्नामेंट की अच्छी खिलाड़ी हैं। हालांकि खराब फॉर्म के कारण विश्व कप से पहले उन्हें अंतिम एकादश से भी बाहर कर दिया गया था। हरनप्रीत ने स्पिनरों और तेज गेंदबाजों दोनों के खिलाफ अपने 'ट्रेडमार्क' स्वीप शॉट का बखूबी इस्तेमाल कर प्रतिद्वंद्वी टीम पर दबाव बनाया। पूजा ने इसमें दो छक्के और एक चौका लगाकर इसमें उनकी मदद की। आमतौर पर आस्ट्रेलियाई गेंदबाज अनुशासित गेंदबाजी करती हैं, पर उन्होंने 24 वाइड गेंद फेंकी जिससे भारत को फायदा ही हुआ।

मैंने अब तक जो भी हासिल किया, वह मेरा सर्वश्रेष्ठ नहीं है : नीरज

एजेंसी

लंदन। किसी भी खिलाड़ी के लिये ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतना वास्तविक उपलब्धि होती है लेकिन भारत के भाला फेंक के स्टार एथलीट नीरज चोपड़ा का कहना है कि उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन अभी बाकी है और वह इस साल होने वाली प्रतियोगिताओं में 90 मीटर का आंकड़ा हासिल करने की कोशिश करेंगे। पिछले साल तोक्यो ओलंपिक खेलो में 24 वर्षीय चोपड़ा ने पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में 87.58 मीटर के प्रयास से एथलेटिक्स में भारत का पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता था। वह निशानेबाज अभिनव बिंद्रा के बाद ओलंपिक में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाले दूसरे भारतीय बने थे।

चोपड़ा ने कहा कि इस साल के उनके लक्ष्यों में विश्व चैंपियनशिप में पदक तथा एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों में अपने खिताब का बचाव करने के अलावा 90 मीटर के पार भाला फेंकना है। चोपड़ा ने एक खेल वेबसाइट से कहा, ''मुझे हमेशा लगता है कि मैंने अब तक जैसा प्रदर्शन किया है और जो कुछ भी हासिल किया है वह सर्वश्रेष्ठ नहीं है। मुझे लगता है कि मैं भविष्य में वास्तव में इससे बेहतर कर सकता हूं। यह देखकर अच्छा लगता है कि पूरा देश मुझ पर विश्वास करता है और मुझसे काफी उम्मीद रखता है।''उन्होंने कहा, ''मैं काफी पहले से 90 मीटर तक पहुंचने की कोशिश कर रहा हूं। मुझे लगता है कि मैं निकट भविष्य में वास्तव में ऐसा कर सकता हूं। मुझ पर 90 मीटर के पार भाला फेंकने के लिये किसी तरह का दबाव नहीं है, लेकिन मैं इस साल इसे हासिल करने के लिये अपनी ताकत और गति के साथ अपनी तकनीक पर काम करूंगा।''चोपड़ा का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 88.03 मीटर है।

इराक का विश्व कप क्वालीफायर मैच सऊदी अरब स्थानांतरित, शनिवार को होगा मुकाबला

एजेंसी

कुआलालंपुर। इराक और संयुक्त अरब अमीरात के बीच आगामी फुटबॉल विश्व कप क्वालीफायर मैच को बगदाद से सऊदी अरब के रियाद शहर में स्थानांतरित कर दिया गया। अमेरिका के नेतृत्व में 2003 में हुए आक्रमण के बाद बगदाद में यह फीफा का पहला अंतरराष्ट्रीय मैच होने वाला था लेकिन देश के उत्तर में स्थित इरबिल शहर पर रविवार के मिसाइल हमले के बाद फीफा और एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) ने शनिवार को इसे रियाद में खेले जाने की घोषणा की। यहां जारी बयान के मुताबिक, '' इराक की हालिया घटनाओं के साथ-साथ हाल के सप्ताहों में वैश्विक सुरक्षा में आये व्यापक बदलाव के बाद, फीफा और एएफसी द्वारा संयुक्त रूप से इराक में सुरक्षा की स्थिति का पुनर्मूल्यांकन किया गया।'' उन्होंने कहा, '' इस आकलन के आधार पर हमने इस सभी हितधारकों के सुरक्षा के उच्चतम मानकों को सुनिश्चित करने के लिए, यह निर्णय लिया कि मैच को तटस्थ स्थान पर ले जाया जाना चाहिए।'' इराक फुटबॉल संघ ने पिछले महीने ही घोषणा की थी कि फीफा ने इस मैच की मेजबानी बगदाद को सौंपी है। इस देश ने 2003 के बाद सिर्फ दो बार विश्व कप मैचों की मेजबानी की है। इराक ने 2011 में इरबिल में जॉर्डन और फिर 2019 में बसरा में हांगकांग की मेजबानी की थी।

पाकिस्तानी क्रिकेटर ने लगाए जय श्री राम के नारे तो भारतीय यूजर ने कहा- भाई इंडिया आजा

एजेंसी

दानिश कनेरिया पाकिस्तान के हिंदू क्रिकेटर है और वह हर त्यौहार पर अपने फैंस को बधाई देते हैं। होली का भी त्यौहार आया और दानिश ने इस खास मौके पर ट्वीट करते हुए अपने फैंस को फेस्टिवल की शुभकामनाएं दी। उन्होंने अपने ट्वीट में लिखा- जय श्रीराम सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं। जैसे ही उन्होंने ये पोस्ट किया वैसे ही एक के बाद एक उन्हें बधाई देने के लिए लोग टूट पड़े। दानिश का पाकिस्तान में रहते हुए जय श्री राम कहना भारतीयों को इतना ज्यादा पसंद आया कि लोगों ने उन्हें भारत आने का न्यौता दे डाला। कुछ ने तो उन्हें पाकिस्तान में बचकर रहने की सलहा दी। आपको बता दें कि, दानिश का यह पोस्ट काफी वायरल हो रहा है। एक ट्वीटर यूजर ने दानिश के पोस्ट पर रिप्लाई करते हुए लिखा- भाई तु इंडिया आजा। वहीं अन्य यूजर मनोज त्रिपाठी ने रिप्लाई करते हुए लिखा कि, जय श्री राम । आपको और आपके पूरे परिवार को होली की हार्दिक शुभकामनाएं और पाकिस्तान में रहकर जिस तरह आप साहस दिखाते है इस साहस को कोटि कोटि नमन । जय श्री राम। ट्वीटर यूजर राजेश सनातनी ने दानिश के पोस्ट पर कमेंट करते हुए कहा कि, आपको और आपके पूरे परिवार को होली की बहुत-बहुत बधाई राम जी की कृपा आप पर बनी रहे #होली। वहीं एक यूजर ने दानिश को पाकिस्तान का पंसदीदा क्रिकेटर बताया है।

पंजाब किंग्स कप्तान मयंक बोले- हमारे पास खिताब जीतने वाली टीम, बेहतर प्रदर्शन जरूरी

एजेंसी

नयी दिल्ली। पंजाब किंग्स के नव नियुक्त कप्तान मयंक अग्रवाल का मानना है कि उनके पास आईपीएल खिताब जीतने में सक्षम टीम है। टीम के साथ चार सत्र रहने के बाद अग्रवाल को कप्तानी सौंपी गई है चूंकि उनके सलामी जोड़ीदार केएलराहुल लखनऊ टीम से जुड़ गए हैं। अग्रवाल ने पिछले दो सत्रों में 400 से अधिक रन बनाये और राहुल के साथ सफल प्रारंभिक जोड़ी का हिस्सा रहे। उनकी टीम हालांकि प्लेआफ में नहीं पहुंच सकी।

अग्रवाल ने कहा ,'' हमारे पास खिताब जीतने में सक्षम टीम है। अब खिलाड़ियों को दबाव में अपनी प्रतिभा का परिचय देना होगा।''उन्होंने कहा ,'' एक टीम के तौर पर हमने नीलामी में अच्छा प्रदर्शन किया। हमें पता था कि टूर्नामेंट मुंबई में खेला जायेगा तो उस आधार पर ही टीम चुनी है। हमें खुशी है कि हमारे पास संतुलित टीम है।'' बतौर कप्तान उनकी भूमिका टीम में बढी है लेकिन उनका मानना है कि एक बल्लेबाज के तौर पर कुछ नहीं बदला है। उन्होंने कहा ,'' जब मैं बल्लेबाजी कर रहा हूं तो मैं सिर्फ बल्लेबाज हूं। हमारे पास कई नेतृत्वकर्ता और अनुभवी खिलाड़ी है जिससे मेरा काम आसान हो गया है। मैं एक बल्लेबाज के तौर पर बेहतरीन प्रदर्शन करना चाहता हूं। अभी बल्लेबाजी क्रम को लेकर कुछ कह नहीं सकता लेकिन शिखर धवन के टीम से जुड़ने को लेकर काफी उत्साहित हूं।

अमिताभ बच्चन की नातिन ने पतली पट्टी वाले थाई हाई स्लिट गाउन में लगाई इंटरनेट पर आग, फोटो वायरल

बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन की बेटी श्वेता बच्चन ने भले फिल्मों में काम ना किया हो लेकिन वे अक्सर लाइमलाइट में रहती हैं। श्वेता का फैशन सेंस और कॉन्फिडेंस लोगों को खूब पसंद आता है। सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं और वे आए दिन तस्वीरों और वीडियोज शेयर करती रहती हैं। हाल ही में श्वेता ने अपनी बेटी नव्या नवेली नंदा के साथ एक फोटो शेयर किया है। इस तस्वीर में नव्या ने थाई हाई स्लॉट गाउन पहना है। तस्वीर में आप देख सकते हैं कि श्वेता काउच पर बैठी हैं और नव्या उनके बगल बैठी दिख रही हैं। जहां श्वेता ने पीच कलर का फेदर गाउन पहना है। वहीं, नव्या ने रेड कलर का थाई हाई स्लॉट गाउन पहना है। उन्होंने रेड लिप्सटिक लगाई है और हील्स पहनी हुई हैं। उन्होंने गले में नेकलेस भी पहना है। इस फोटो को शेयर करते हुए श्वेता ने कैप्शन में लिखा, मुझे लाल रंग में रंग दीजिए। श्वेता की तस्वीर को लोग 13000 से भी ज्यादा लोग लाइक कर चुके हैं। वहीं, इस पर लोग हॉट, नाइस, ब्यूटीफुल जैसे कमेंट भी कर रहे हैं। सोशल मीडिया यूजर्स कमेंट सेक्शन में दिल और आग वाले एमोजी बनाकर भी अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। आपको बता दें कि नव्या भी सोशल मीडिया पर काफी फेमस हैं। वे अक्सर अपनी हॉट और बोल्ड तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर करती रहती है। इसके अलावा नव्या कई सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी हैं। उनकी दिलचस्पी बॉलीवुड में नहीं, बल्कि बिजनेस में है। अपना करियर नव्या के नाना यानी अमिताभ बच्चन भी अक्सर अपने सोशल मीडिया पोस्ट्स के जरिए यह बात जाहिर करते रहते हैं कि उन्हें नव्या पर गर्व है।

केआरके ने पीएम पर कसा तंज, कहा- मोदी जी मेरा काम न छीनें, लोगों ने दिए ऐसे जवाब

फिल्म अभिनेता कमाल आर खान अपने बयानों की वजह से अक्सर ही चर्चा में रहते हैं। केआरके कभी बीजेपी पर निशाना साधते हैं तो कभी प्रधानमंत्री मोदी पर तंज कसते हैं। विवेक अग्निहोत्री की कश्मीर फाइल्स पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। पीएम मोदी ने भी लोगों से इस फिल्म को देखने की अपील की है तो वहीं कई नेता और मंत्री इस फिल्म के प्रमोशन में जुटे हैं। अब केआरके इसी फिल्म को लेकर प्रधानमंत्री पर तंज कसा है। ट्विटर पर केआरके ने लिखा कि, अब हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने फिल्मों का विश्लेषण करना भी शुरू कर दिया है। मैं मोदी जी से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि वह ये काम ना करें। अगर विश्लेषण भी मोदी जी ही करने लगेंगे, तो फिर मैं क्या करूंगा? कृपया करके मोदी जी मेरा काम न छीने। धन्यवाद। कमाल आर खान के इस ट्वीट पर लोगों की प्रतिक्रियाएं भी आ रही हैं। प्योर साऊल नाम के यूजर ने लिखा कि हमारे प्रधानमंत्री कैसे? आप तो दुबई में रहते हो और आपके पास वहां की नागरिकता है और मोदी जी तो भारत के हैं। सोना जी नाम के यूजर ने लिखा अब फिल्म समीक्षक/ आलोचक का पेशा भी खतरे में है, मोदी है तो मुमकिन है। जयेश नाम के यूजर ने लिखा कि यह एक अल्पसंख्यक के साथ छल हो रहा है। पहले कांग्रेस ने देशद्रोही फिल्म पर रोक लगाकर एक उज्जवल कलाकार को उभरने से पहले ही खत्म कर दिया। जब उसने अलग काम शुरू किया तो अब मोदी जी उस काम को करने में बाधा उपस्थित कर रहे हैं। यह लोकतंत्र की हत्या है। घनघोर निंदा। योगेश नाम के यूजर ने लिखा कि अगर आप एक्सपर्ट है तो मोदी जी भी एक्सपर्ट हैं। अब आप पकोड़े तलने की आदत डाल लो। शिवांक नाम के एक यूजर ने लिखा कि तू परेशान मत हो भाई, आजा हमारे खेत में गन्ना छीलने में मदद करो। कृपा शंकर बाजपेई नाम के यूजर ने लिखा कि तुम अब पकौड़े बनाओ।

अक्षय कुमार की बच्चन पांडे ने बॉक्स ऑफिस पर दिखाया कमाल, पहले दिन कमाए 13 करोड़

अक्षय कुमार की एक्शन कॉमेडी फिल्म बच्चन पांडे ने रिलीज के पहले दिन 13.25 करोड़ रुपये की कमाई की है। फिल्म के निर्माताओं ने शनिवार को यह जानकारी दी। फिल्मकार साजिद नाडियाडवाला की प्रोडक्शन कंपनी नाडियाडवाला ग्रैंडसन के बैनर तले बनी 'बच्चन पांडे' शुक्रवार को सिनेमाघरों में रिलीज़ हुई। फिल्म में अक्षय ने एक गैंगस्टर की भूमिका निभाई है।नाडियाडवाला ग्रैंडसन के आधिकारिक ट्विटर अकाउंट ने एक पोस्टर साझा किया, जिसमें बॉक्स ऑफिस पर फिल्म के पहले दिन की कमाई का जिक्र था। पोस्टर के साथ लिखा गया, ''बॉक्स ऑफिस पर भौकाल। रिलीज के पहले दिन 13.25 करोड़ रुपये की कमाई।'' ''बच्चन पांडे का निर्देशन फरहाद सामजी ने किया है। फिल्म में अक्षय कुमार के अलावा कृति सैनन, जैकलीन फर्नांडीज और अरशद वारसी भी अहम भूमिका में हैं।

श्याम बेनेगल ने फिल्म मुजीब का पोस्टर किया रिलीज

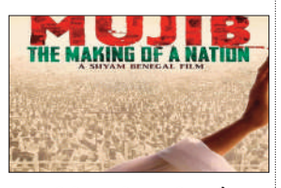

वेटरन फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल ने मुजीब-द मेकिंग ऑफ ए नेशन (Mujib-The Making Of A Nation) नामक अपनी अपकमिंग बायोपिक पिक्चर के पोस्टर को रिलाज किया है। यह रिपब्लिक ऑफ इंडिया और रिपब्लिक ऑफ बांग्लादेश के बीच एक ऑडियो विजुअल को प्रोडक्शन समझौते के तहत, बांग्लादेश के राष्ट्रपिता शेख मुजीबुर्ररहमान की जिंदगी पर एक भारत-बांग्लादेश को प्रोडक्शन है। महान फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल के जरिए निर्देशित, फिल्म को भारत और बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर शूट किया गया था, जिसमें कोविड महामारी के बीच सभी स्वास्थ्य निर्देशों का पालन किया गया था। फिल्म को दिसंबर 2021 में रैप-अप किया गया था। मुजीबुर्ररहमान का जन्म प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार में हुआ था। वो धार्मिक और सौहार्दपूर्ण माहौल में पले बढ़े, वो गरीबों के प्रति दयालु थे और उनके प्रति सहानुभूति रखते थे। महात्मा गांधी से प्रेरित होकर, मुजीब ने पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान के बीच और पाकिस्तानी सैन्य शासन के बीच असमानता और अभाव के खिलाफ संघर्ष किया। शेख मुजीबुर रहमान को पाकिस्तान के सैन्य शासकों ने बहुत प्रताड़ित भी किया और वह आजादी मिलने के बाद से बांग्लादेश बनने तक के समय में बार बार जेल गए।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक एवं RNI No. DELHIHIN/2010/37009 संपादक मो हनीफ द्वारा अरावली प्रिंटर्स -WA30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित करवाकर, जी-12/276 , संगम विहार, नई दिल्ली-62 से प्रकाशित। फोन:8888883968, 9811111715 किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही होगा।